केनरा बैंक की
त्रैमासिक
हिंदी गृह पत्रिका

केनरा ज्योति

अंक : 38

अक्टूबर–दिसंबर 2023

Canara ai CORPORATE

UPI UNIFIED PAYMENTS INTERFACE 123PAY

केनरा बैंक
भारत सरकार का उपक्रम

Canara Bank
A Government of India Undertaking
सिंडिकेट Syndicate

Together We Can

दिनांक 19.01.2024 को संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में केनरा बैंक द्वारा संयोजित नराकास (बैंक व बीमा) को 'नराकास राजभाषा पुरस्कार' प्रदान किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अजय कुमार मिश्रा, माननीय गृह राज्य मंत्री के कर कमलों से शील्ड ग्रहण करते हुए श्री डी सुरेंद्रन, मुख्य महाप्रबंधक, मानव संसाधन विभाग तथा श्रीमती अंशुली आर्या, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रमाण पत्र ग्रहण करते हुए श्री ई रमेश, सहा. महाप्रबंधक, मानव संसाधन विभाग। मंच पर उपस्थित बैंक के प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री के. सत्यनारायण राजु तथा अन्य गणमान्य भी तस्वीर में नज़र आ रहे हैं।

प्रधान कार्यालय, बेंगलूरु में दिनांक 16.12.2023 को श्री के. सत्यनारायण राजु, प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी की अध्यक्षता में 190 वीं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के दौरान बैंक की गृह पत्रिका ''केनरा ज्योति'' के 37वें अंक का विमोचन करते हुए श्री के. सत्यनारायण राजु, प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी, साथ में श्री अशोक चंद्र, कार्यपालक निदेशक तथा श्री डी. सुरेन्द्रन, मुख्य महाप्रबंधक, श्रीमती के कल्याणी, मुख्य महाप्रबंधक, श्री संदीप जे गवारे, मुख्य महाप्रबंधक तथा उपस्थित अन्य कार्यपालक गण।

श्री के. सत्यनारायण राजु
प्रबंध निदेशक
व मुख्य कार्यकारी अधिकारी

श्री अशोक चंद्र
कार्यपालक निदेशक

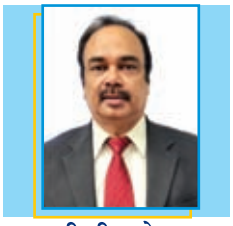

श्री डी. सुरेन्द्रन
मुख्य महाप्रबंधक

श्री टी. के. वेणुगोपाल
महाप्रबंधक

श्री ई. रमेश
सहायक महाप्रबंधक

संपादक
सुश्री रीनु मीना, प्रबंधक

संपादन सहयोग
श्री जी. अशोक कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री राघवेन्द्र कुमार तिवारी, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री मयंक पाठक, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री डी. बालकृष्ण, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री विजय कुमार, अधिकारी

बिक्री के लिए नहीं
प्रकाशन : केनरा बैंक,
राजभाषा अनुभाग,
मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय
112, जे.सी. रोड,
बेंगलूरु - 560 002
दूरभाष : 080-2223 4079
वेबसाइट :
www.canarabank.com

केवल आंतरिक परिचालन हेतु
* * *
पत्रिका में अभिव्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। केनरा बैंक का उनसे सहमत होना ज़रूरी नहीं है।

विषय सूची — पृष्ठ संख्या

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश – के. सत्यनारायण राजु	2
मुख्य संपादक का संदेश – ई. रमेश	3
डिजिटल मुद्राएं – मोहम्मद इमरान अंसारी	4
पुरी - जगन्नाथ ब्रह्माण्ड के स्वामी – अरिन्दम मित्रा	7
सूरज बन जा तू... – अविनीश कृष्णन	9
कुपूत – यतीश कुमार गोयल	10
स्त्री : एक परिभाषा – सीमा	11
भारतीय अर्थव्यवस्था एवं चुनौतियाँ – हिमानी गोयल	12
इसरो: भारत की नई उम्मीद – रितेश कुमार	16
'महलों के शहर' की एक मनमोहक यात्रा – रोचक दीक्षित	17
बैंकिंग का सफर: नए इनोवेशन की ओर – संतोष कुमार	20
गुस्सा और मुस्कान – भानु मदान	21
हास्य लेख : मानव जीवन में ईर्ष्या और जलन – मीता भाटिया	22
बचपन की मित्रता – अभिषेक गर्ग	23
हँसी और तनाव : एक प्रणय – धीरेन्द्र सिंह	23
राजभाषा अधिकारियों का 41वां अखिल भारतीय.....	24
संसदीय राजभाषा समिति द्वारा राजभाषाई निरीक्षण	25
हिंदी का मानक रूपः प्रयोग की व्यावहारिक समस्याएं – निशा शर्मा	26
एनपीए समाधान : भारत में बैंकिंग क्षेत्र की वसूली ..... – निशीथ श्रीवास्तव	33
एक किसान – गौरव जोशी	36
प्रकृति अजेय है – मंजीत कौर	36
भारतीय सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासत का ..... – शिवानी कुमारी	37
वक्त की जद्दोजहद – राखी प्रवीण	39
पिताजी – प्रतीक सैनी	39
हमारी आध्यात्मिक यात्रा.... – शुभम दुबे	40
मेरा केनरा बैंक – राजेश कुमार दास	43
दोराहा – कमल दीप कौर	43
हमारी अपनी राजभाषा हिंदी – विधि जटणीया	44
मैं मशाल लेकर दौड़ूंगा ! – कुणाल रवींद्र वानखेड़े	46
जीवन तुम क्या हो – सुबर्णा देबनाथ	47
मैं भारत हूँ – रंजीत	47
साहित्य अकादमी पुरस्कार 2023 विजेता	48

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

प्रिय केनराइट्स !

केनरा बैंक की त्रैमासिक हिंदी गृह पत्रिका **'केनरा ज्योति' के 38वें अंक** को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। अक्सर यह कहा जाता है कि कुछ करने के लिए हमें सबसे पहले वास्तव में उस पर विश्वास करने की ज़रूरत होती है। जब हमारे प्रिय संस्थापक, श्री अम्मेम्बल सुब्बा राव पै ने 1906 में इस महान संस्थान की नींव रखी, तो उन्हें दृढ़ विश्वास था कि वे समाज के ज़रूरतमंदों तथा दबे-कुचले व्यक्तियों के जीवन में परिवर्तन ला सकते हैं और तेजी से बढ़ती ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सही गति प्रदान कर सकते हैं।

अपने जीवन और समय से कहीं आगे देखते हुए श्री अम्मेम्बल सुब्बा राव पै जैसे दूरदृष्टा ने अपनी स्वयं की एक दुनिया बनाई, एक ऐसी संस्था जिसमें अभी भी उनकी आभा झलकती है और लगातार अपने प्रतिभाशाली और प्रतिबद्ध कर्मचारियों के माध्यम से शुभ्रता रूपी चमक का उत्सर्जन करती रहती है।

19 नवंबर को बैंक का संस्थापक दिवस मनाते हैं। आइए, हम इस महान संस्था को बनाए रखने वाले मूल्यों, संस्कृति, लोकाचार और सिद्धांतों के लिए खुद को फिर से समर्पित करें और भविष्य में इसके उत्थान, शक्ति और गौरव की दिशा में काम करें। आइए, हम सहृदय यह विश्वास करें कि यह संस्था जो हमारे प्रिय संस्थापक की छाया में बढ़ी है वह अब सुरक्षित और सक्षम हाथों में है और हम तेजी से प्रतिस्पर्धी होती जा रही इस संस्था को सुरक्षित व संरक्षित रखने और संगठनात्मक परिदृश्य में इसे उत्कृष्टता के उच्चतम स्तर पर ले जाने के लिए अपने सर्वोत्तम प्रयास करेंगे।

साथियों, किसी देश के विकास में उस देश की भाषा की बड़ी भूमिका होती है, भारत अनेकों भाषाओं, बोलियों का देश है और यह सर्वविदित है कि देश के विकास में हिंदी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अपने ग्राहकों से अपनापन दिखाने का सर्वश्रेष्ठ तरीका ग्राहकों से उनकी अपनी भाषा में बात करना है, इसलिए भारत के विभिन्न राज्यों में बोली जाने वाली भाषाओं की उपेक्षा किए बिना ग्राहकों से उनकी मातृभाषा में बात करना अपने ग्राहक आधार को मज़बूत करने में प्रमुख भूमिका अदा करता है और यही कारण है कि केनरा बैंक ग्राहक सेवा की दृष्टि से भारत का सर्वश्रेष्ठ बैंक है। वर्तमान प्रतिस्पर्धी बैंकिंग परिदृश्य में हम भाषाई सौहार्द के साथ अपने कार्यनिष्पादन पर ज़ोर देते हुए सफलता की सीढ़ियां चढ़ते जा रहे हैं।

केनरा बैंक अपने ग्राहकों को निरंतर सेवाएं देने हेतु अग्रणी रहा है। दिनांक 24 जनवरी, 2024 को घोषित हमारे बैंक के दिसंबर तिमाही के नतीजों से यह स्वत: ही स्पष्ट हो जाता है। हमारे बैंक का वैश्विक कारोबार ₹ 22,13,360 करोड़ हो गया है जो कि 9.87% की वृद्धि है। हमारे बैंक के सकल अग्रिम में 11.69% वृद्धि हुई है और बैंक का शुद्ध लाभ ₹ 3656 करोड़ रहा है। बैंक की निवल ब्याज आय में 9.50% की वृद्धि हुई है। केनरा बैंक को सभी मायनों में देश का सर्वश्रेष्ठ बैंक बनाने की दिशा में हमें इसी प्रतिबद्धता से कार्य करना है और संगठन को सर्वोपरि रखते हुए सकारात्मकता के साथ निरंतर आगे बढ़ते जाना है।

मैं आशा करता हूँ कि आप सभी अपने सर्वोत्तम प्रयासों के साथ, वार्षिक लक्ष्यों और चुनौतियों को पार करने के लिए उत्साह के साथ काम करें और अपनी प्रतिभा और सफलता की चमक से अपने कार्य क्षेत्र को रोशन करें।

आइए, हम सब एक साथ मिलकर इस संस्था को आने वाले वर्षों में और भी सुदृढ़ और अधिक सफल बनाने का प्रयास करें। केनरा ज्योति पत्रिका का प्रकाशन एक सकारात्मक एवं सराहनीय प्रयास है, पत्रिका के पाठकों एवं संपादन मंडल को हार्दिक बधाई और पत्रिका के निरंतर प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

के. एस. राजु

के. सत्यनारायण राजु
प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी

मुख्य संपादक का संदेश

प्रिय पाठकों,

केनरा ज्योति पत्रिका का 38वां अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। **केनरा ज्योति** पत्रिका **साहित्य और बैंकिंग का अद्भुत संगम है। इस नवीनतम अंक में** साहित्यिक ज्ञानवर्धक लेखों के साथ-साथ सुंदर शब्दों में पिरोए गए मन के कोमल भावों से सजी कविताओं और कहानियों से लेकर मंत्रमुग्ध कर देने वाले यात्रा वृत्तांत एवं बैंक की विविध गतिविधियों की झलकियां भी सम्मिलित की गई हैं।

पत्रिका वह आईना है, जो हमारी भाषा, संस्कृति और समाज को प्रतिबिंबित करती है तथा हमें सही दिशा में आगे बढ़ने की ओर मार्गदर्शित करती है।

वर्तमान आर्थिक परिवेश में सर्वत्र वित्तीय समावेशन और समावेशी विकास की बात की जा रही है। सभी को वित्तीय मामलों की जानकारी प्रदान करने और जन-जन को आर्थिक जगत से जोड़ने के लिए जो कदम उठाए जा रहे हैं उसमें राजभाषा के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। निःसंदेह समावेशी विकास में जो भूमिका भारतीय भाषाएं और विशेष रूप से राजभाषा हिंदी निभा सकती है वह कार्य किसी विदेशी भाषा के माध्यम से नहीं किया जा सकता। केनरा ज्योति हिंदी भाषा में न सिर्फ बैंकिंग संबंधी बल्कि वित्तीय, तकनीकी विषयों की भी जानकारी प्रदान करती है। इस पत्रिका के माध्यम से हम न सिर्फ हिंदी भाषा को बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं बल्कि बैंक में मौजूद सृजनात्मक प्रतिभाओं को अपने रचना कौशल का प्रदर्शन करने के लिए मंच भी प्रदान करते हैं।

राजभाषा समृद्धि और एकता का स्रोत होती है, जो हमारी पहचान को मज़बूती प्रदान करती है और हमें उच्च शिखर की ओर ले जाती है।

इस वर्ष राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा 19 जनवरी 2024 को बेंगलूरु में दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र के कार्यालयों के लिए संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस वर्ष हमारे बैंक को बेंगलूरु नराकास संयोजन के श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु 'प्रथम पुरस्कार' प्राप्त हुआ है, जो कि हमारे बैंक के लिए अत्यंत गर्व का अवसर है।

संपादक मंडल की ओर से हम उन सभी रचनाकारों और लेखकों को धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से पत्रिका के प्रकाशन को सफल बनाने में योगदान दिया है। केनरा ज्योति की निरन्तर संवृद्धि के लिए पाठकों की प्रतिक्रियाओं की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

स्पष्ट और सरल भाषा में (बैंकिंग परिप्रेक्ष्य में ग्राहक की अपनी भाषा में) ग्राहक के साथ संवाद जो कि स्पष्ट, सरल और विनम्र हो तो बैंक के साथ ग्राहक का संबंध अटूट हो जाता है और दीर्घ काल तक बना रहता है। बैंकिंग व्यापार में ग्राहक को लंबे समय तक बनाए रखना व्यापारिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है।

अनेक शुभकामनाओं के साथ,

आपका,

ई. रमेश
सहायक महाप्रबंधक

आलेख

डिजिटल मुद्राएं

मोहम्मद इमरान अंसारी
राजभाषा अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, अलीगढ़

डिजिटल मुद्राओं में भौतिक विशेषताएं नहीं होती हैं और ये केवल डिजिटल रूप में उपलब्ध होती हैं। डिजिटल मुद्राओं से जुड़े लेनदेन कंप्यूटर या इंटरनेट या निर्दिष्ट नेटवर्क से जुड़े इलेक्ट्रॉनिक वॉलेट का उपयोग करके किए जाते हैं। इसके विपरीत, भौतिक मुद्राएं, जैसे कि बैंकनोट और ढ़ाले हुए सिक्के, मूर्त हैं, जिसका अर्थ है कि उनके पास निश्चित भौतिक गुण और विशेषताएं हैं। ऐसी मुद्राओं से जुड़े लेन-देन तभी संभव होते हैं जब उनके धारकों के पास इन मुद्राओं का भौतिक अधिकार हो। डिजिटल मुद्राओं की उपयोगिता भौतिक मुद्राओं के समान होती है। उनका उपयोग सामान खरीदने और सेवाओं के भुगतान करने के लिए किया जा सकता है। डिजिटल मुद्राएं तत्काल लेनदेन को भी सक्षम बनाती हैं जिन्हें सीमाओं के पार निर्बाध रूप से निष्पादित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य में स्थित एक व्यक्ति के लिए सिंगापुर में रहने वाले एक पक्षकार को डिजिटल मुद्रा में भुगतान करना संभव है, बशर्ते वे दोनों एक ही नेटवर्क से जुड़े हों।

प्रमुख क्रिप्टोकरेंसी, जैसे कि बिटकॉइन और एथेरियम, विकेंद्रीकृत डिजिटल मुद्रा प्रणाली के उदाहरण हैं।

डिजिटल मुद्राएं मूल्य अंतरित कर सकती हैं। डिजिटल मुद्राओं के उपयोग के लिए मुद्राओं के मौजूदा ढांचे में बदलाव की आवश्यकता होती है, जहां वे वस्तुओं और सेवाओं के लिए बिक्री और खरीद के लेन-देन से जुड़े होते हैं। हालाँकि, डिजिटल मुद्राएं अवधारणाओं का विस्तार करती हैं। यह एक खरीद या बिक्री का लेनदेन ही नहीं है, बल्कि मूल्य के हस्तांतरण का भी प्रतिनिधित्व करती हैं।

डिजिटल मुद्राओं के प्रकार

डिजिटल मुद्रा एक व्यापक शब्द है जिसका उपयोग इलेक्ट्रॉनिक क्षेत्र में मौजूद विभिन्न प्रकार की मुद्राओं का वर्णन करने के लिए किया जा सकता है। मोटे तौर पर, तीन अलग-अलग प्रकार की डिजिटल मुद्राएं हैं:

क्रिप्टोकरेंसी

क्रिप्टोकरेंसी एक डिजिटल मुद्रा है जो एक नेटवर्क में लेनदेन को सुरक्षित और सत्यापित करने के लिए क्रिप्टोग्राफी का उपयोग करती हैं। क्रिप्टोग्राफ़ी का उपयोग ऐसी मुद्राओं के निर्माण को प्रबंधित और नियंत्रित करने के लिए भी किया जाता है। बिटकॉइन और एथेरियम क्रिप्टोकरेंसी के उदाहरण हैं।

आभासी मुद्राएं

आभासी मुद्राएं डेवलपर्स या प्रक्रिया में शामिल विभिन्न हितधारकों से मिलकर एक संस्थापक संगठन द्वारा नियंत्रित अनियमित डिजिटल मुद्राएं हैं। आभासी मुद्राओं को भी एक परिभाषित नेटवर्क प्रोटोकॉल द्वारा एल्गोरिथम रूप से नियंत्रित किया जा सकता है।

केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्राएं

केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्राएं (सीबीडीसी) किसी देश के केंद्रीय बैंक द्वारा जारी की गई विनियमित डिजिटल मुद्राएं हैं। सीबीडीसी मुद्रा का पूरक या प्रतिस्थापन हो सकता है। फिएट पारंपरिक मुद्रा के विपरीत, जो भौतिक और डिजिटल दोनों रूपों में मौजूद है, सीबीडीसी विशुद्ध रूप से डिजिटल रूप में मौजूद है। इंग्लैंड, स्वीडन और उरुग्वे कुछ ऐसे देश हैं जो अपनी मूल मुद्राओं का डिजिटल संस्करण लॉन्च करने की योजना पर विचार कर रहे हैं।

डिजिटल मुद्राओं के लाभ:

- डिजिटल मुद्राएं आम तौर पर एक ही नेटवर्क के भीतर मौजूद होती हैं और किसी भी बिचौलिए की आवश्यकता के बिना लेन-देन करने वाले पक्षों के बीच सीधे किया जाता है, लेन-

देन आमतौर पर तात्कालिक और कम लागत वाला होता है। यह पारंपरिक भुगतान विधियों की तुलना में बेहतर है जिसमें बैंक या समाशोधन गृह शामिल हैं। डिजिटल-मुद्रा-आधारित इलेक्ट्रॉनिक लेनदेन भी लेनदेन में आवश्यक अभिलेखों को बनाए रखने वाले और पारदर्शिता वाले होते हैं।

- भौतिक मुद्राओं के लिए भौतिक निर्माण सुविधाओं की स्थापना जैसी आवश्यकताएं होती हैं, जबकि डिजिटल मुद्राओं के लिए इसकी आवश्यकता नहीं होती है। ऐसी मुद्राएं भौतिक मुद्रा में मौजूद भौतिक दोषों से भी प्रतिरक्षित होती हैं।
- वर्तमान मुद्रा व्यवस्था के तहत, फेड एक अर्थव्यवस्था में धन प्रसारित करने के लिए बिचौलिए बैंकों और वित्तीय संस्थानों की एक श्रृंखला के माध्यम से काम करती है। सीबीडीसी इस तंत्र को दरकिनार करने में मदद कर सकते हैं और एक सरकारी एजेंसी को नागरिकों को सीधे भुगतान करने में सक्षम बना सकते हैं। वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर मुद्रा के भौतिक निर्माण और परिवहन की आवश्यकता को समाप्त करके उत्पादन और वितरण विधियों को भी सरल बनाते हैं।
- डिजिटल मुद्राएं एक नेटवर्क के भीतर सीधे संपर्क को सक्षम करती हैं। उदाहरण के लिए, एक ग्राहक एक दुकानदार को सीधे भुगतान कर सकता है यदि वे एक ही नेटवर्क में हों। यहां तक कि विभिन्न नेटवर्कों के बीच डिजिटल मुद्रा लेनदेन की लागत भी भौतिक या पारंपरिक मुद्राओं की तुलना में अपेक्षाकृत कम होती है। लेन-देन को संसाधित करने में बिचौलियों को हटाकर, डिजिटल मुद्राएं लेनदेन की समग्र लागत को सस्ता कर सकती हैं।

डिजिटल मुद्राओं के नुकसान

- डिजिटल मुद्राओं के भंडारण और प्रसंस्करण के लिए अपनी आवश्यकताएं होती हैं। उदाहरण के लिए, एक इंटरनेट कनेक्शन स्मार्टफोन और इंटरनेट सेवाएं। डिजिटल मुद्राओं को स्टोर करने के लिए मज़बूत सुरक्षा वाले ऑनलाइन वॉलेट की भी आवश्यकता है।
- डिजिटल मुद्राओं का उद्भव हैकिंग के लिए अतिसंवेदनशील बनाता है। हैकर्स ऑनलाइन वॉलेट से डिजिटल करेंसी चुरा सकते हैं या डिजिटल करेंसी के प्रोटोकॉल को बदल सकते हैं।
- व्यापार के लिए उपयोग की जाने वाली डिजिटल मुद्राओं में कीमतों में बेतहाशा उतार-चढ़ाव हो सकता है। उदाहरण के लिए, क्रिप्टोकरेंसी की विकेंद्रीकृत प्रकृति के परिणामस्वरूप बहुत कम पूंजीकृत डिजिटल मुद्राएं हैं, जिनकी कीमतों में निवेशक की इच्छा के आधार पर अचानक परिवर्तन होने की संभावना है।

बैंकिंग के सापेक्ष

डिजिटल मुद्राओं को व्यापक रूप से पारंपरिक बैंकिंग और वित्तीय संस्थानों के लिए एक व्यवधान के रूप में देखा जाता है, पिछले आधे दशक में क्रिप्टोकरेंसी ने काफी आकर्षण प्राप्त किया है, साथ ही साथ दुनिया भर में बैंकिंग नियामकों के लिए यह एक नियामक दुःस्वप्न है। वर्तमान में, दुनिया भर में लगभग 969 क्रिप्टोकरेंसी मौजूद हैं, जिनकी कुल बाजार पूंजी 116 बिलियन अमेरिकी डॉलर के करीब है।

डिजिटल मुद्रा केंद्रीकृत इलेक्ट्रॉनिक धन और केंद्रीय बैंकिंग प्रणालियों के विपरीत विकेंद्रीकृत नियंत्रण का उपयोग करती है। प्रत्येक क्रिप्टोकरेंसी का विकेन्द्रीकृत नियंत्रण एक ब्लॉक श्रृंखला के माध्यम से काम करता है, जो एक सार्वजनिक लेनदेन डेटाबेस है और जो एक वितरित खाताबही के रूप में कार्य करता है। प्रत्येक क्रिप्टोकरेंसी के सिक्कों की वैधता ब्लॉक श्रृंखला द्वारा प्रदान की जाती है। एक ब्लॉक चेन रिकॉर्ड की लगातार बढ़ती सूची है, जिसे ब्लॉक कहा जाता है, जो क्रिप्टोग्राफ़ी से जुड़े होते हैं और सुरक्षित होते हैं। इसे सीधे लोगों के बीच स्थानांतरित किया जाता है और सभी उपयोगकर्ताओं के लिए सुलभ, सार्वजनिक खाताबही में लेनदेन की

पुष्टि की जाती है। इस बहीखाते को बनाए रखने और लेनदेन को मान्य करने की प्रक्रिया, जिसे खनन के रूप में जाना जाता है, एक विकेन्द्रीकृत तरीके से किया जाता है।

पहली विकेन्द्रीकृत क्रिप्टोकरेंसी बिटकॉइन थी, जिसे 2009 में बनाया गया था। तब से कई अन्य क्रिप्टोकरेंसी बनाई गई हैं। क्रिप्टोकरेंसी लोकप्रियता हासिल कर रही हैं; वे गोपनीयता सुरक्षा, लागत प्रभावशीलता प्रदान करती है। इन्हें बैंकिंग प्रणाली और फिएट मुद्राओं के विकल्प के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। प्रत्येक लेनदेन पारदर्शी, स्वायत्त और सुरक्षित है। इन लाभों के कारण, क्रिप्टोकरेंसी को दुनिया भर में स्वीकृति मिलनी शुरू हो गई है।

ऐसे कई लाभों और उपयोगकर्ता के अनुकूल प्रक्रियाओं के बावजूद, क्रिप्टोकरेंसी के मूल्यांकन में अस्थिरता, तरलता की कमी, सुरक्षा और संबंधित जोखिमों का अपना महत्व है। काले बाजारों में उनके उपयोग के कारण कई देशों में क्रिप्टोकरेंसी की निंदा की जा रही है। इनके माध्यम से अवैध व्यापार और आपराधिक गतिविधियों का संभावित उपयोग भी सम्भव है और इनका उपयोग आतंकवाद के वित्तपोषण के लिए भी किया जा सकता है। इनमें टैक्स की चोरी की भी संभावनाएं हैं।

डिजिटल मुद्रा के दुरुपयोग को रोकने के लिए धीरे-धीरे यह नियामक के दायरे में आ रही है। जापान हाल ही में क्रिप्टोकरेंसी को विनियमित करने वाला पहला देश बन गया है। अमेरिका भी नियामक दिशानिर्देश तैयार कर रहा है। चीन ने हाल ही में दुनिया भर में विभिन्न आईसीओ घोटाले सहित विभिन्न कारणों से प्रारंभिक सिक्का पेशकश (आईसीओ) पर प्रतिबंध लगा दिया है। हालांकि भारत वैश्विक क्रिप्टोकरेंसी बाजार में अपेक्षाकृत छोटी भूमिका निभाता है, भारत में वैश्विक क्रिप्टोकरेंसी बाजार पूंजीकरण का केवल 2% हिस्सा है।

भारतीय रिज़र्व बैंक क्रिप्टोकरेंसी के बढ़ते उपयोग पर नजर रख रहा है और इसने 2013 में इस संबंध में एक एडवाइजरी भी जारी की थी, जिसमें आभासी मुद्राओं के उपयोगकर्ताओं, धारकों और व्यापारियों को इसके संभावित वित्तीय, कानूनी और सुरक्षा संबंधी जोखिमों के बारे में चेतावनी दी गई थी। वित्त मंत्रालय ने मई 2017 में आभासी मुद्राओं को विनियमित करने पर एक सार्वजनिक विचार विमर्श भी आयोजित किया था।

4 मार्च, 2020 को, भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने भारत में क्रिप्टोकरेंसी के व्यापार पर लगाए गए प्रतिबंध को रद्द कर दिया था। इस निर्णय ने बिटकॉइन जैसी आभासी मुद्राओं पर लगाए गए 2018 के आरबीआई प्रतिबंध को खारिज कर दिया, इस प्रतिबंध का उद्देश्य देश की वित्तीय प्रणाली को निजी आभासी मुद्राओं से बचाना था, जिन्हें सरकार द्वारा अवैध माना गया है।

डिजिटल मुद्रा का भविष्य

डिजिटल मुद्रा का भविष्य और आगे की सफलता नियामक ढांचे को तैयार करने के तरीके पर निर्भर करती है। विभिन्न देशों ने इस नवाचार को अलग-अलग तरीकों से अपनाया है, और इसलिए नियामक वातावरण अनिश्चित बना हुआ है। आतंकवाद के वित्तपोषण, मनी लॉन्ड्रिंग और कर चोरी में क्रिप्टोकरेंसी के संभावित उपयोग से होने वाले जोखिमों को देखते हुए सरकार को कदम उठाने होंगे।

निष्कर्ष

- डिजिटल मुद्रा अभी भी शुरुआती चरण में है और तकनीक लगातार विकसित हो रही है। इसलिए, यदि डिजिटल मुद्रा को इस तरह से विकसित किया जाता है कि खामियों का समाधान हो जाए, तो वे औपचारिक वित्तीय संस्थानों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं।
- डिजिटल मुद्रा वॉलेट के सक्रिय उपयोगकर्ताओं की वर्तमान संख्या 2.9 मिलियन से 5.8 मिलियन के बीच होने का अनुमान है। दक्षिण प्रशांत महासागर में स्थित एक प्रशांत द्वीप राष्ट्र वानुअतु अपने नागरिकता कार्यक्रम के भुगतान के लिए बिटकॉइन को एक्सचेंज में स्वीकार करने वाला पहला देश बन गया।
- विकेंद्रीकृत भंडारण और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, बिना किसी झिझक के यह कहना संभव है कि ब्लॉक-चेन प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में नई प्रणालियों को सुधारने और विकसित करने की क्षमता के साथ इसका भविष्य विकसित होने की कगार पर है।
- यह संभावना कम है कि डिजिटल मुद्रा की मांग मानक मुद्रा की मांग को कम कर देगी, क्योंकि इसमें उच्च जोखिम शामिल है। लेकिन इस आविष्कार की सबसे अच्छी बात यह है कि हर सिक्के का एक यूनिक कोड होता है और हर सिक्के के सभी लेन-देन को रिकॉर्ड किया जाता है। अर्थव्यवस्था में मनी लॉन्ड्रिंग को खत्म करने के लिए यह एक अद्भुत अवधारणा है।

आलेख

पुरी – जगन्नाथ ब्रह्माण्ड के स्वामी

अरिन्दम मित्रा
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, कोलकाता

कदाचित्कालिन्दी तट विपिन सङ्गीत तरलो
मुदाभीरी नारी वदन कमलास्वाद मधुपः।
रमा शम्भु ब्रह्मामर पति गणेशार्चित पदो
जगन्नाथःस्वामीनयन पथ गामीभवतुमे ।।1।।

पुरी, यह नाम ही दुनिया भर के बंगालियों का पर्याय है। दुनिया भर से पर्यटक ओड़िशा राज्य के इस खूबसूरत शहर का अनुभव लेने के लिए आते हैं। बंगालियों के लिए यह दूसरा घर माना जाता है। चाहे वह खूबसूरत सुनहरा समुद्र तट हो या भगवान जगन्नाथ मंदिर या स्वादिष्ट व्यंजन, पुरी एक मिश्रित संस्कृति, विरासत और हमारे धर्म का पर्याय है।

प्राचीन काल से ही बंगाल की खाड़ी पर स्थित इस तटीय शहर का उल्लेख विभिन्न ग्रंथों में मिलता है। पुरी को जगन्नाथ पुरी, श्रीक्षेत्र, नीलांचल के नाम से भी जाना जाता है।

पुरी चार धामों में से एक, प्रसिद्ध जगन्नाथ स्वामी का घर है। भगवान विष्णु के अवतार, भगवान जगन्नाथ का मंदिर दुनिया में सबसे प्रतिष्ठित वैष्णव स्थलों में से एक है। इस महत्व के कारण, लाखों भक्त ब्रह्मांड के भगवान की एक झलक पाने के लिए इस शहर में आते हैं। ऐसा कहा जाता है कि भगवान जगन्नाथ द्वारिका में रहते हैं, रामेश्वरम में स्नान करते हैं, बद्रीनाथ में प्रार्थना करते हैं और पुरी में भोजन करते हैं। इसलिए पुरी सनातन धर्म के पवित्र चार धामों का हिस्सा है।

जगन्नाथ, एक संस्कृत शब्द का अनुवाद ब्रह्मांड के भगवान के रूप में किया जा सकता है। भगवान जगन्नाथ की उत्पत्ति विभिन्न संस्करणों जैसे स्कंद पुराण, जैन उत्पत्ति या बौद्ध उत्पत्ति प्रसंग में पाई जा सकती है। लेकिन सबसे प्रमाणिक संस्करण परिस्थितिजन्य साक्ष्यों के आधार पर जनजातीय संस्करण में खोजा जा सकता है। ऐसा कहा जाता है कि भगवान विष्णु के महान उपासक अवंती के राजा इंद्रद्युम्न ने एक रात भगवान विष्णु के सबसे शुद्ध और सबसे सुंदर रूप का सपना देखा। भगवान को उनके शुद्धतम रूप में देखने के उत्साह को रोक पाने में असमर्थ, उन्होंने अपने दूतों को देवता को खोजने के लिए चारों ओर यात्रा करने का निर्देश दिया। लेकिन लंबी खोज के बाद, वे भगवान को उनके शुद्धतम रूप में नहीं पा सके। लेकिन राजा के एक आदमी विद्यापति कई दिनों तक यात्रा करने के बाद उस गाँव को ढूंढने में सफल रहे जहाँ उनके भगवान की नील माधव के रूप में शुद्धतम रूप में पूजा की जा रही थी। विद्यापति ने गांव के मुखिया विश्वबासु से मुलाकात की और उनसे भगवान की मूर्ति दिखाने का अनुरोध किया। लेकिन चूंकि किसी बाहरी व्यक्ति को भगवान के गर्भगृह में जाने की अनुमति नहीं थी, इसलिए विश्वबासु ने उन्हें दर्शन कराने से इनकार कर दिया। निराश विद्यापति भगवान की मूर्ति देखने का सौभाग्य पाने की इच्छा से गाँव में ही रुक गए। कुछ वर्षों के बाद विद्यापति ने विश्वबासु की बेटी से विवाह किया और अपनी पत्नी से अपने पिता विश्वबासु से भगवान की मूर्ति के दर्शन कराने का अनुरोध करने को कहा। अपनी बेटी के आग्रह पर विश्वबासु मान गए और विद्यापति को आंखों पर पट्टी बांधकर उस स्थान पर ले गए जहां भगवान की पूजा की जा रही थी। चूंकि विद्यापति की आंखों पर पट्टी बंधी हुई थी, इसलिए उन्होंने रास्ते में सरसों के बीज गिराए ताकि यह

सुनिश्चित हो सके कि वह राजा इंद्रद्युम्न के साथ भगवान के दर्शन करने के लिए वापस आ सकें। मंदिर में पहुंचने पर जहां भगवान की नील माधव के रूप में पूजा की जा रही थी, विश्वबासु ने विद्यापति की आंखों से पट्टी हटा दी। भगवान को देखकर विद्यापति मंत्रमुग्ध हो गए। परमानंद में उनकी आंखों से खुशी के आंसू छलक पड़े। वह राजा इंद्रद्युम्न के पास वापस गए और उन्हें अपने साथ उस स्थान पर ले आए जहाँ भगवान की पूजा की जाती थी। लेकिन जैसे ही वे मंदिर में दाखिल हुए, भगवान नील माधव की मूर्ति गायब हो गई। राजा दुःखी हो गया। कुछ समय बाद राजा को फिर स्वप्न आया कि समुद्र में लकड़ियों के लट्ठे तैरते हुए उसके पास आएंगे। उसे लट्ठों पर भगवान की छवि को बनाना होगा। इसके बाद राजा के दरबार में लाई गई लकड़ियाँ मिलीं, लेकिन कोई भी भगवान की छवि को बनाने में सक्षम नहीं था क्योंकि राजा के अलावा किसी ने भी भगवान का शुद्धतम रूप नहीं देखा था। तब बढ़ई के वेश में विश्वकर्मा राजा के दरबार में गए और राजा से कहा कि वह भगवान के शुद्धतम रूप के अनुसार मूर्ति को बनाने में सक्षम होंगे। लेकिन उनकी एक शर्त थी, मूर्ति पूरी होने तक उन्हें कोई परेशान नहीं करेगा और काम पूरा होने में 21 दिन लगेंगे।

लेकिन 14वें दिन, जिज्ञासु रानी ने राजा से कार्य की प्रगति देखने का आग्रह किया। रानी के आग्रह पर राजा ने उस कमरे के दरवाजे खोल दिए जहाँ बढ़ई काम कर रहा था। लेकिन कमरा खोलने के बाद राजा ने पाया कि वहां कोई नहीं था और भगवान जगन्नाथ, देवी सुभद्रा और बलभद्र की अधूरी मूर्तियां बची थीं। इस प्रकार, पुरी के भगवान जगन्नाथ की पूजा शुरू हुई।

वर्तमान मंदिर का पुनर्निर्माण दसवीं शताब्दी पूर्वी गंगा राजवंश के पहले राजा अनंतवर्मन चोडगंगा द्वारा शुरू किया गया था। यह मंदिर वैष्णव परंपरा के 108 अभिमान क्षेत्रों में से एक है। मंदिर में पूजा की जाने वाली देवताओं की तिकड़ी हैं–जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा। मंदिर के आंतरिक गर्भगृह में सुदर्शन चक्र, मदनमोहन, श्रीदेवी और विश्वधात्री के देवताओं के साथ–साथ रत्नजड़ित मंच या रत्नबेदी पर बैठे पवित्र नीम के लकड़ी से बने दारू नाम से जाने जाने वाले देवता शामिल हैं। मौसम के अनुसार देवताओं को अलग–अलग वस्त्रों और आभूषणों से सजाया जाता है। मंदिर में दुनिया की सबसे बड़ी रसोई में से एक है, जहां प्रतिदिन कम से कम 25000 लोगों को खाना परोसा जाता है। कहा जाता है कि पुरी में कोई भी प्राणी खाली पेट नहीं सोता। यही कारण है कि पुरी को अन्नक्षेत्र भी माना जाता है।

भगवान जगन्नाथ के सम्मान में साल भर में मुख्य रूप से 24 त्यौहार आयोजित किए जाते हैं। रथ यात्रा उन सभी में सबसे बड़ी है जो हर साल लाखों लोगों को शहर में लाती है। रथ यात्रा के दौरान, भगवान जगन्नाथ अपनी बहन देवी सुभद्रा और बड़े भाई बलभद्र के साथ अपने मंदिर से गुंडिचा मंदिर में अपनी मौसी के घर तक यात्रा करते हैं। इन तीनों की यात्रा के लिए हजारों श्रमिकों द्वारा महीनों के श्रम के बाद विशाल लकड़ी के रथ बनाए जाते हैं। हर साल कम से कम 10 लाख लोग रथ यात्रा के दौरान पवित्र रथों को खींचने का मौका पाने के लिए पुरी आते हैं। रथयात्रा में जाति या पंथ के बीच कोई अंतर नहीं होने के कारण एकता और अखंडता का एक अनूठा प्रतीक है।

जब कोई पुरी से लौटता है, तो वह जीवन से भी बड़े दृश्यों की यादें, पीढ़ियों को जोड़ने वाली कहानियां, सदियों से चली आ रही परंपराओं की छवियां अपने साथ ले जाता है – हर बार, बार– बार।

कविता

सूरज बन जा तू...

अविनीश कृष्णन
अधिकारी
अंचल कार्यालय, अहमदाबाद

सूरज बन जा तू खुद को जला तू
खुद को जला कर, कर दे रोशन ये जहाँ!
सूरज बन जा खुद को जला तू
खुद को जला कर कर दे रोशन ये जहाँ!

मुश्किलें आएंगी जीवन में तूफान बन कर
मुश्किलें आएंगी जीवन में तूफान बन कर
पर्वत बन जा तू, खुद को जगा तू
पर्वत तू बन कर, कर दे तूफान को धुआं!

सूरज बन जा तू, खुद को जला तू
खुद को जला कर, कर दे रोशन ये जहाँ!
सूरज बन जा खुद को जला तू
खुद को जला कर, कर दे रोशन ये जहाँ!

रात के अन्धेरों में चांदनी बन जा तू
गर्मी कि ताप में छाव बन जा तू
अकेले राह पर मोड़ पर जो खड़ा
राह का साथी बन वक्त है आज तेरा!

बन्जर मैदानों को तेरी ही तो आशा है
बन्जर मैदानों को तेरी ही तो आशा है
बादल बन जा तू, मेघा बन जा तू,
बारिश तू बन कर, कर दे मैदान हरा भरा

सूरज बन जा तू खुद को जला तू
खुद को जला कर, कर दे रोशन ये जहाँ!
सूरज बन जा खुद को जला तू
खुद को जला कर, कर दे रोशन ये जहाँ!

डर की बेड़ियों में आज क्यों जकड़ा तू
कदम उठा आगे बढ़ अब कहीं न रुकना तू!
सच तेरे साथ है आत्मविश्वास तेरे पास है
जल उठी ज्वाला को, अब कभी ना बूझने देना तू!

गम के अन्धेरों में, निराशा की छाया है
गम के अन्धेरों में, निराशा की छाया है!
मुस्कान बन जा तू खुशी बन जा तू
गम के अन्धेरों को उजालों से मिटा!

सूरज बन जा तू खुद को जला तू
खुद को जला कर, कर दे रोशन ये जहाँ!
सूरज बन जा खुद को जला तू
खुद को जला कर, कर दे रोशन ये जहाँ!

आलेख

कुपूत

यतीश कुमार गोयल
सहायक महाप्रबंधक
अंचल कार्यालय, हुब्बल्ली

नरेंद्र बाबू का ताल्लुक ज़मीनदाराना खानदान से था। उनके दादा घासीराम ज़मींदार थे और श्यामपुर तहसील में साठ गांवों में उनका रुतबा था। नरेंद्र अपने पिता गंगाराम के इकलौते पुत्र थे और अपने जमाने के बीएससी पास और ज्ञानी व्यक्ति थे। कस्बे के सभी लोग उनका बहुत सम्मान करते थे। सरकारी कानून के तहत ज़मींदारी चले जाने के बाद साल दर साल आर्थिक परेशानियां बढ़ने लगी, ज़मींदारी वाले कुछ गांवों के पुराने बुजुर्ग यदा कदा अनाज भेज दिया करते थे इस तरह से काम चल रहा था। नरेंद्र पढ़े लिखे थे। पहले तो उन्होंने कपड़ों का छोटा सा व्यापार किया लेकिन तजुर्बा न होने के कारण घाटा कर बैठे लिहाजा व्यापार भी बंद हो गया।

अंततोगत्वा नरेंद्र की पढ़ाई ही काम आयी, उन्होंने अपने घर पर ही छठवीं से बारहवीं कक्षा के बच्चों को ट्यूशन देना शुरु किया, कस्बे के लोगों को नरेंद्र की काबलियत का पता तो था ही अत:, नरेंद्र के घर खूब सारे बच्चे पढ़ने आने लगे। आमदनी का जरिया हो गया। नरेंद्र बहुत सख्त मिज़ाज के अध्यापक थे और पढ़ाई में कोई ढ़िलाई न बरतते, लिहाजा उनके द्वारा पढ़ा गए बच्चे अच्छे नंबरो से पास होते।

नरेंद्र के चार पुत्र थे। महेश, राकेश, सुरेश और मनीष। महेश चारों में सबसे बड़े थे और बहुत होशियार थे। राकेश और मनीष भी पढ़ाई में बहुत होशियार थे। सुरेश यूं तो समझदार था, लेकिन पढ़ाई में उसका दीदा न लगता। उसको दिन भर मटरगश्ती करना और पिता की एक न सुनना लिहाजा डांट फटकार ही खाता। घर में पढ़ाई का माहौल तो था ही बाकी के तीनों भाई खूब अच्छे से मेहनत कर अव्वल दर्जे में सारी परीक्षाएं पास कर रहे थे। नरेंद्र को सुरेश में अब कुपूत नजर आता।

एक अशुभ दिन नरेंद्र का 50 बरस की अवस्था में हृदय गति रुक जाने से देहांत हो गया। उस समय नरेंद्र का बड़ा बेटा पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय से इंजीनियरींग की पढ़ाई कर रहा था। आर्थिक तंगी के कारण उसको बीच में ही अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी और कस्बे के विधायक ने उसके पिता से मित्रता के नाते उसको स्थानीय इंटर कॉलेज में मास्टरी की नोकरी दिलवा दी। इस तरह से घर फिर से चल निकला। राकेश भी सरकारी नौकरी में दूसरे शहर में लग गया। महेश भी बाद में पीसीएस अधिकारी बन गया। मनीष भी सरकारी बैंक में अधिकारी बन गया।

इस तरह तीनों भाई तीन अलग-अलग नौकरियों में अपने कस्बे से दूर पोस्टेड थे। मां भी कुछ वर्षों बाद भगवान को प्यारी हो गई और दो बहनें थी उनका भी ब्याह हो गया। बस सुरेश ही अब पुश्तैनी मकान में रहता था। बड़ी मुश्किल से खींचतान से इंटर पास कर पाया। उसने शादी भी न की और उससे करता भी कौन। न काम न धंधा, दिन भर लोगों से बात - बात पर नोंक-झोंक करता रहता, कुपूत जो ठहरा। बस पढ़ लिखकर कामयाब न हो पाया था, इसीलिए कुपूत था हालांकि उसमें वैसे कोई ऐब न था। बस कभी कभार बीड़ी पी लेता था।

हर किसी की किस्मत में शायद पढ़ाई नहीं होती। पढ़ाई और नौकरी भी भाग्य से मिलती है।

लेकिन ईश्वर के खेल निराले हैं। उसी के बुने सारे ताने बाने हैं। उसको सब का ख्याल है। उसका निर्मित हर मानव किसी न किसी के लिए उपयोगी है। ईश्वर की लीला अपरंपार है।

सब भाई बहन अपने आप में व्यस्त थे। सबके एक या दो ही बच्चे थे वो भी सब पढ़ाई में इधर-उधर लगे हुए थे। किसी को किसी की कोई खैर खबर नहीं। बस व्हाट्सएप और फेसबुक पर ही एक दूसरे को जानते थे। कभी कभार ही मिले हों।

सुरेश अपनी ही मस्ती में सबको कहता कि भाई अपना मकान ज़मीन-ज़ायदाद तो देख जाओ। मकान की हालत खस्ता हो रही है उसको मेंटेन करवा जाओ। किसी को फुरसत कहाँ। सुरेश ने पिता जी की पुरानी दुकान बेचकर सारे पैसे बैंक में जमा कर दिए उसी के ब्याज से अपना जीवन यापन करता और कभी-कभी भाइयों से थोड़ा ऐंठ लेता कि मैं तुम्हारा मकान और जायदाद की रखवाली कर रहा हूँ वरना कोई कब्जा कर लेगा।

किसी चीज को बेकार मानकर हम सालों साल तवज्जो नहीं देते लेकिन वह कब काम में आ जाए, इसका इल्म हमें कई बार नहीं होता है।

सुरेश शरीर से मज़बूत और देसी सोच का व्यक्ति था। शरीर से सबकी मदद के लिए तैयार रहता था। दुनिया को सलाह देने के लिए उसके पास हज़ार नुस्खे थे चाहे कचहरी हो या बीमारी। ज़मीन जायदाद के मुकदमे लड़ लड़ कर बगैर डिग्री का वकील बन गया था वो, मन का मज़बूत था।

कभी-कभी ज्यादा पढ़ लिखकर भी आदमी दुनियादारी भूल जाता है, या यूं कहिए कि समय की कमी उसको दुनियादारी भुला देती है। कुछ ही होते है जो संपूर्ण हो पाते है।

नरेंद्र का सबसे ज्येष्ठ पुत्र महेश बहुत बीमार हो गया। पिता की कुछ बीमारियां उसके अंदर अनुवांशिक रुप से थी, वो शुगर पेशेंट था। वो लोगों के बीच काम करते हुए, इन बीमारियों के चलते कोरोना पॉजिटिव हो गया और मरणासन्न स्थिति में जा पहुंचा। एक मात्र पुत्र अमेरीका में उंची पढ़ाई करने गया हुआ था। पत्नी के तो वैसे ही हाथ पैर छूटे हुए थे। कई सौ लोगो का ऑफिस और दोस्ती में साथ होने के बाबजूद वक्त में एक आदमी साथ नहीं खड़ा था। बस खड़ा था तो कुपूत सुरेश। सुरेश ही डॉक्टर के सुझाए परामर्श पर दवा दारु मुहैया कराता, देखभाल करता। काढ़ा बनाता और भाई को पिलाता। वो स्वयं का भी ख्याल कर रहा था क्योंकि अब उसको अपने भाई की अच्छे से देखभाल जो करनी थी और कोई कहाँ है अपना। कुपूत पहले भी रिश्तेदारी में लोगों की तन-मन से मदद करता रहा है।

महेश की तबियत में अब सुधार हुआ और वो डॉक्टर्स के मुताबिक खतरे से बाहर था।

कविता

स्त्री : एक परिभाषा

सीमा
प्रबंधक
क्षे. का., नई दिल्ली

कोख में मरना,
ज़रूरी नहीं है पढ़ना,
तन पूरा ढ़कना,
नौकरी, कर धन कमाना
घर के सभी काम करना,
प्यार से घबराना,
हर कदम डरना,
इच्छा रखने का पाप ना करना
रोना, पर सिसकियां ना भरना।

दहेज की आग में जलायी जाओ,
सामूहिक बलात्कार में मारी जाओ,
एसिड से नहलाई जाओ,
हर यातना सहना,
आह! कभी ना भरना,
स्त्री तेरी एक परिभाषा
तिल-तिल कर मरना
और
एक पुरूष ही जनना।

आलेख

भारतीय अर्थव्यवस्था एवं चुनौतियाँ

हिमानी गोयल
लिपिक
क्षेत्रीय कार्यालय, गाज़ियाबाद

भारत 2019 में ब्रिटेन को पछाड़कर दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया था, लेकिन 2020 में छठे स्थान पर खिसक गया है।

महामारी के प्रभाव से भारत कुछ हद तक भटक गया है। भारत 2025 में फिर से ब्रिटेन को पछाड़कर पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा और 2030 तक तीसरे स्थान पर पहुंच जाएगा। परिणामस्वरूप, 2019 में यूके से आगे निकलने के बाद, यूके इस वर्ष के पूर्वानुमानों में फिर से भारत से आगे निकल गया है और 2024 तक भारत से आगे बना हुआ है, सेंटर फॉर इकोनॉमिक्स एंड बिजनेस रिसर्च (सीईबीआर) ने शनिवार को प्रकाशित एक वार्षिक रिपोर्ट में कहा।

जैसे-जैसे भारत आर्थिक रूप से अधिक विकसित होगा, विकास स्वाभाविक रूप से धीमा हो जाएगा, 2035 में वार्षिक सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर 5.8 प्रतिशत तक गिरने की उम्मीद है।

इस विकास पथ से भारत 2030 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा, जो 2025 में ब्रिटेन, 2027 में जर्मनी और 2030 में जापान को पीछे छोड़ देगा।

इसमें कहा गया है, धीमी वृद्धि बैंकिंग प्रणाली में कमजोरी, सुधारों के समायोजन और वैश्विक व्यापार में मंदी सहित कई कारकों के संगम का परिणाम है।

इसमें कहा गया है, **भारत में मौजूद बुनियादी ढांचे की बाधाओं का मतलब है कि इस क्षेत्र में निवेश से महत्वपूर्ण उत्पादकता लाभ हासिल करने की क्षमता है। इसलिए, आगे बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था का दृष्टिकोण बुनियादी ढांचे के खर्च के लिए सरकार के दृष्टिकोण से निकटता से संबंधित होगा।**

निम्नलिखित कारकों का भारत की अर्थव्यवस्था में योगदान

बैंकिंग प्रणाली

बैंकिंग प्रणाली किसी भी अर्थव्यवस्था का पावर हाउस है, और किसी भी अर्थव्यवस्था का उत्थान और पतन काफी हद तक उसके वित्तीय क्षेत्र के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। पहले बैंकों का राष्ट्रीयकरण और फिर बैंकों का विलय – यह दो बड़े कदम हैं बैंकिंग प्रणाली को मज़बूत बनाने के लिए।

बैंकों का राष्ट्रीयकरण

- लगभग 54 साल पहले, 19 जुलाई, 1969 को तत्कालीन सरकार ने बैंकिंग कंपनी (उपक्रमों का अधिग्रहण और अंतरण) अध्यादेश, 1969 के माध्यम से देश के 14 सबसे बड़े निजी वाणिज्यिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया और 50 प्रतिशत से अधिक हिस्सेदारी रखने का फैसला किया। बैंकों के राष्ट्रीयकरण ने ग्रामीण क्षेत्रों की किस्मत बदल दी। बैंक शहरों से निकलकर गाँवों और कस्बों में खुलने लगे।
- तीन दशकों के भीतर देश में बैंक शाखाओं की संख्या 8,000 से बढ़कर 60,000 हो गई। ग्रामीण जमा हिस्सेदारी मार्च 1991 में 15.5 प्रतिशत तक पहुंच गई, जो दिसंबर 1969 में 6.3 प्रतिशत थी, और ऋण हिस्सेदारी 3.3 प्रतिशत से बढ़कर 15 प्रतिशत हो गई। बैंकों से कहा गया कि वे उन क्षेत्रों में धन लगाएं जहां सरकार विकास करना चाहती है।

बैंकों का विलय

- 1997-2022 के दौरान, 40 बैंकों का समामेलन हुआ, जिनमें से 12 निजी क्षेत्र के बैंकों और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के बीच थे, 16 निजी क्षेत्र के बैंकों के बीच था शेष 12 निजी क्षेत्र के बैंकों और विदेशी बैंकों के बीच थे।
- आरबीआई के एक शोध पत्र में कहा गया है कि देश में बैंकों का विलय बैंकिंग क्षेत्र के लिए फायदेमंद रहा है क्योंकि इससे

अधिग्रहणकर्ता बैंकों के शेयरधारकों को वित्तीय लाभ हुआ है और अधिग्रहण करने वाले बैंक की दक्षता में भी सुधार हुआ है।

- पीएसबी के एकीकरण के परिणामस्वरूप बड़े बैंकों के पास बड़ी बैलेंस शीट हो गयी। जिससे उन्हें बढ़ती भारतीय अर्थव्यवस्था की ऋण आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद मिली।
- बड़े बैंकों के पास वित्तीय चुनौतियों से निपटने के लिए अधिक पूंजी, कार्मिक और विशेषज्ञता होती है।

स्टार्टअप

भारतीय स्टार्टअप परिदृश्य परिवर्तनकारी परिवर्तनों के एक नए युग का गवाह बन रहा है, जो सतत विकास और लाभप्रदता पर जोर दे रहा है। ये रणनीतिक बदलाव एक अधिक मज़बूत स्टार्टअप-टेक इनोवेशन अर्थव्यवस्था के निर्माण में योगदान देने के लिए तैयार हैं, जो खुद को वैश्विक प्रौद्योगिकी महाशक्ति के रूप में स्थापित करने की भारत की महत्वाकांक्षी दृष्टि के अनुरूप है।

भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में स्टार्टअप की भूमिका:

- रोजगार सृजन
- नए निवेश
- अनुसंधान और विकास
- बेहतर जीडीपी
- प्रौद्योगिकी लाभों का लोकतंत्रीकरण
- विदेशी धन का अधिक प्रवाह
- आयात कम कर सकते हैं
- निर्यात बढ़ा सकते हैं

भारत, आज, दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम बन गया है, जिसमें 98,000 से अधिक डीपीआईआईटी-पंजीकृत स्टार्टअप हैं जो भारत से, भारत और दुनिया के लिए निर्माण कर रहे हैं।

बढ़ती वार्षिक घरेलू आय ने इस वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अनुमान बताते हैं कि लगभग 50% परिवारों की वार्षिक आय 2030 तक रुपये 5 लाख से अधिक हो जाएगी, जो 2019 में 33% थी।

इसरो का चंद्रयान-3 मिशन -अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था

जहां तक चंद्रयान-3 मिशन की बात है तो सफल लैंडिंग भारत के लिए सफलता का क्षण रहा। यह न केवल देश को अंतरिक्ष अन्वेषण की दौड़ में बढ़त दिलाएगा बल्कि अर्थव्यवस्था में भी योगदान देगा।

रोजगार सृजन से लेकर निजी निवेश में वृद्धि और यहां तक कि तकनीकी प्रगति तक, ऐसे कई तरीके हैं जिनसे चंद्रयान-3 मिशन भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न पहलुओं को बढ़ावा दे सकता है।

चंद्रयान-3 के सफल प्रक्षेपण से निवेशकों का विश्वास बढ़ सकता है और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में अधिक निजी निवेश आकर्षित हो सकता है।

गूगल जैसी कंपनियां पहले से ही भारत के अंतरिक्ष-तकनीक स्टार्टअप में निवेश कर रही हैं, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी अगर चंद्रयान-3 मिशन की सफलता के बाद विदेशी कंपनियों द्वारा निवेश बढ़ जाए।

मेक इन इंडिया का महत्व

मेक इन इंडिया की अवधारणा एनडीए सरकार द्वारा की गई एक अच्छी पहल है और यह निश्चित रूप से हमारे देश के सामाजिक-आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाली है, खासकर रोजगार के अवसर और औद्योगिक विकास प्रदान करने में।

मेक इन इंडिया के तीन घोषित उद्देश्य थे:

- विनिर्माण क्षेत्र की विकास दर को 12-14% प्रति वर्ष तक बढ़ाना;
- अर्थव्यवस्था में लाखों अतिरिक्त विनिर्माण नौकरियाँ पैदा करना
- सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण क्षेत्र का योगदान 25% तक बढ़ाया जाना।

लॉन्च के बाद, मेक इन इंडिया सितंबर 2014 से फरवरी 2016 के बीच ₹16.40 लाख करोड़ की निवेश प्रतिबद्धताएं और ₹1.5 लाख करोड़ की निवेश पूछताछ की गई। परिणामस्वरूप, भारत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) के लिए 2015 में विश्व स्तर पर

शीर्ष स्थान के रूप में उभरा। 60.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर एफडीआई के साथ संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन को पीछे छोड़ दिया। वर्तमान नीति के अनुसार, अंतरिक्ष उद्योग (74%), रक्षा उद्योग (49%) और भारतीय मीडिया (26%) को छोड़कर सभी 100 क्षेत्रों में 100% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) की अनुमति है। जापान और भारत ने भी निवेश को बढ़ावा देने के लिए 12 बिलियन अमेरिकी डॉलर के 'जापान-इंडिया मेक-इन-इंडिया स्पेशल फाइनेंस फैसिलिटी' फंड की घोषणा की।

इस पहल से रोजगार कई गुना बढ़ जाएगा। इससे आम भारतीय की क्रय शक्ति बढ़ेगी, गरीबी कम होगी और कंपनियों के लिए उपभोक्ता आधार का विस्तार होगा। इसके अलावा, यह मस्तिष्क पलायन को कम करने में मदद करेगा।

विदेशी निवेश विदेशी पूंजी के साथ-साथ तकनीकी विशेषज्ञता और रचनात्मक कौशल भी लाएगा। सहवर्ती क्रेडिट रेटिंग अपग्रेड निवेशकों को और अधिक आकर्षित करेगा।

लोकप्रिय मोबाइल फोन ब्रांड शाओमी गर्व से कहता है कि देश में उसके द्वारा बेचे जाने वाले 99% फोन भारत में निर्मित होते हैं। यह रहस्योद्घाटन 'मेक इन इंडिया' पहल के प्रति कंपनी की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है और देश की विनिर्माण क्षमताओं में उनके विश्वास को दर्शाता है।

एप्पल ने 2017 में भारत में आई फ़ोन का निर्माण शुरू किया और शुरुआत में केवल पुराने या कम बजट वाले फोन बनाए। आई फ़ोन के निर्माता फॉक्सकॉन ने अब भारत में नए मॉडल का निर्माण शुरू किया जो वैश्विक स्तर पर लॉन्च किया गया था।

एप्पल के विनिर्माण परिचालन के साथ, देश में विदेशी मुद्रा आय में वृद्धि, आयात निर्भरता में कमी और विनिर्माण सकल घरेलू उत्पाद में समग्र वृद्धि देखी गई है।

वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी)

जीएसटी भारत की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण परिवर्तक रहा है। सभी राज्यों में जीएसटी पंजीकरण बढ़े हैं, जिससे भारत की अर्थव्यवस्था अधिक औपचारिक हो गई है और परिणामस्वरूप उच्च राजस्व प्राप्त हुआ है। लगभग 11% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर पर जीएसटी राजस्व 2018-19 में ₹8.76 ट्रिलियन से बढ़कर 2023-24 में ₹17.21 ट्रिलियन हो गया है।

- वर्तमान में, कुछ अधिसूचित जीएसटी पंजीकृत व्यवसायों को बिजनेस-टू-बिजनेस लेनदेन के लिए ई-चालान उत्पन्न करने की आवश्यकता होती है। ई-चालान धोखाधड़ी वाले जीएसटी चालान को कम करने में मदद करता है और यह सुनिश्चित करता है कि वास्तविक जीएसटी चालान पर इनपुट टैक्स क्रेडिट का दावा किया गया है।
- जीएसटी ने भारतीय अर्थव्यवस्था को कई लाभ पहुंचाए हैं, जिनमें राजस्व में वृद्धि, कराधान में एकरूपता, करों की व्यापकता को समाप्त करना, अनुपालन बोझ को कम करना, कराधान की ऑनलाइन प्रणाली, चेक पोस्ट को समाप्त करना और लॉजिस्टिक्स की बेहतर दक्षता शामिल है।

परिवहन-संबंधी योगदान

किसी देश की संपन्न अर्थव्यवस्था राजमार्गों पर निर्भर करती है जो अर्थव्यवस्था के एक प्रमुख खंड के रूप में उभरा है। सड़क नेटवर्क भारत की विकास गाथा में एक आवश्यक भूमिका निभाते हैं। यह सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 3.6 प्रतिशत से अधिक या भारत के सकल घरेलू उत्पाद में सभी परिवहन-संबंधी योगदान का लगभग दो-तिहाई योगदान देता है। भारत का 85 प्रतिशत से अधिक यात्री यातायात और लगभग 65 प्रतिशत माल ढुलाई सड़कों पर की जाती है।

अमेरिकी राष्ट्रपति जॉन एफ कैनेडी ने एक बार से कहा था,

अमेरिकी सड़कें इसलिए अच्छी नहीं हैं क्योंकि अमेरिका अमीर है, बल्कि अमेरिका इसलिए अमीर है क्योंकि अमेरिकी सड़कें अच्छी हैं।

- भारत ने वित्त वर्ष 2021 में महामारी व लॉकडाउन के बावजूद 13,298 किमी राजमार्ग बना, मार्च 2021 में हर दिन 37 किमी का रिकॉर्ड राजमार्ग बनाया गया।
- भारत सरकार वर्ष 2019-25 के लिए राष्ट्रीय आधारभूत संरचना पर भी ध्यान केंद्रित करती है। सुरंगों और अन्य भूमिगत संरचनाओं का निर्माण सड़कों और राजमार्गों की योजना का एक उप-समूह है।

प्राकृतिक संसाधनों की भूमिका

प्राकृतिक संसाधन किसी अर्थव्यवस्था के विकास को प्रभावित करने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं। प्राकृतिक संसाधनों में भूमि क्षेत्र और मिट्टी की गुणवत्ता, वन संपदा, एक अच्छी नदी प्रणाली, खनिज और तेल संसाधन, एक अनुकूल जलवायु इत्यादि शामिल हैं।

भारत के सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन:

- कोयला
- तेल

- प्राकृतिक गैस
- धात्विक खनिज
- परमाणु संसाधन

हाल ही में, भारत में एक प्राकृतिक संसाधन, लिथियम पाया गया है।

लिथियम एक अलौह धातु है और ईवी बैटरियों में प्रमुख घटकों में से एक है। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने पहली बार जम्मू और कश्मीर के रियासी जिले के सलाल-हैमाना क्षेत्र में 5.9 मिलियन टन के लिथियम अनुमानित संसाधन (जी 3) की स्थापना की।

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण के दौरान राजस्थान के नागौर जिले के डेगाना में रेवंत पहाड़ी पर भी लिथियम भंडार की खोज की गई थी। ऐसा माना जाता है कि ये भंडार देश की 80% मांग को पूरा कर सकते हैं।

वर्तमान में भारत में ईवी का प्रतिशत 1% से कम है। भारत 2030 तक इसे 30% बढ़ाना चाहता है, जिसके लिए लिथियम प्रमुख घटक है।

स्वास्थ्य सेवा उद्योग

राजस्व और रोजगार दोनों के मामले में हेल्थकेयर भारतीय अर्थव्यवस्था के सबसे बड़े घटकों में से एक बन गया है। यह 2016 से 22% की सीएजीआर से बढ़ रहा है, जिससे 4.7 मिलियन लोगों को सीधे रोजगार मिला है। इस क्षेत्र में भारत में लाखों अतिरिक्त नौकरियां पैदा करने की क्षमता है।

- 2023 तक डिजिटल हेल्थकेयर बाजार 20% से अधिक बढ़ने की उम्मीद है। 2022 के आर्थिक सर्वेक्षण में, स्वास्थ्य सेवा पर भारत का सार्वजनिक व्यय 2021-22 में सकल घरेलू उत्पाद का 2.1% था, जबकि 2020-21 में 1.8% और 2019-20 में 1.3% था। भारत में सरकार द्वारा समर्थित दुनिया की सबसे बड़ी स्वास्थ्य बीमा योजना (आयुष्मान भारत) है।
- 2025 तक सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में स्वास्थ्य व्यय को 1.15 से बढ़ाकर 2.5 करना।
- राज्य स्वास्थ्य व्यय को उनके बजट का कम से कम 8 प्रतिशत तक बढ़ाना।
- 2025 तक सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं का उपयोग 50 प्रतिशत तक बढ़ाना।
- सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज प्राप्त करना और गुणवत्तापूर्ण और किफायती सेवाएं प्रदान करना।
- सभी सार्वजनिक अस्पतालों में निःशुल्क दवाएं, निदान और आपातकालीन देखभाल सेवाएं प्रदान करें।
- नर्स चिकित्सकों और सार्वजनिक स्वास्थ्य कर्मियों जैसे मध्य-स्तरीय सेवा प्रदाताओं को विकसित करना।
- चिकित्सा शिक्षा में सुधार।
- दवाओं और मेडटेक के निर्माण को आसान बनाना।
- भारतीय मानकों और नियामक व्यवस्थाओं को कुंजी के मानदंडों के साथ संरेखित करना।
- व्यापारिक भागीदार, जिससे व्यापार और निवेश के अधिक अवसर प्राप्त होंगे।
- अधिक से अधिक निजी निवेश आकर्षित करना।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, पिछले 15 वर्षों की अवधि में भारत ने गरीबी उन्मूलन में एक उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है, जिसमें 415 मिलियन व्यक्ति गरीबी से बाहर आ गए हैं।

निष्कर्ष

- भारत को महत्वपूर्ण आंतरिक सुधार करने की आवश्यकता है जो इसे एक उत्पादक अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी बनने और नेतृत्व की भूमिका निभाने की अनुमति देगा जिसकी दुनिया भर में बहुत से लोग उम्मीद करते हैं।
- प्राथमिक चिकित्सा केंद्रों या पीएमसी पर अधिक जोर देने के साथ स्वास्थ्य प्रणाली का पुनर्गठन।
- बहुसंख्यक लोगों के जीवन में किसी भी सुधार के लिए विकास प्रक्रिया को फिर से व्यवस्थित करने की आवश्यकता होगी ताकि यह कम नुकसानदेह हो।
- इसके लिए संभवतः यह आवश्यक होगा कि हमारी वृद्धि धीमी हो, लेकिन इस प्रक्रिया को गरीब समूहों की ओर अधिक से अधिक प्रसारित करने की ओर उन्मुख किया सकता है।
- भारत दोहरे अंक की वृद्धि की आकांक्षा कर सकता है और होनी भी चाहिए।
- यूके स्थित प्रबुद्ध मण्डल का पूर्वानुमान है कि चीन 2028 में अमेरिका को पछाड़कर दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा, जो कि पहले के अनुमान से पांच साल पहले है, क्योंकि दोनों देशों में कोविड-19 महामारी से उबरने में विरोधाभास है।

माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कहा है कि 2027 तक भारतीय अर्थव्यवस्था को दुनिया में तीसरा स्थान पाने से कोई नहीं रोक सकता। 2025 तक भारत 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

कविता

इसरो: भारत की नई उम्मीद

रितेश कुमार
अधिकारी
अंचल कार्यालय, गुवाहाटी

उड़ता जा परिंदे
उड़ता जा परिंदे
तू तो उड़ने को ही आया!

कौन रोकेगा तुझे
ये पंख तूने पाया!
आसमाँ को चीर के तू,
आसमाँ को चीर के तू.....
औरों को भी ख्वाब दिखा दे !
और..... उड़ते जो जमीं पर....!!
उनको तू औकात दिखा दे ।

तू उड़ा था जमीं से,
अब चाँद पर है तेरे कदम !
जो देखूँ मैं आसमाँ में.....!!
मुझे प्यारा मुस्कुराता हिंदुस्तान दिखा दे।

हमने बचपन में.....
हमने बचपन में.....
चंदा मामा को देखा था!
किस्से – कहानियों की चाँद पर!
अब नये आसमाँ.....
अब भारत के नए बचपन को, तू .....!

अब चंद्रयान दिखा दे ।

चाँद पर तिरंगा लहरा कर,
तू चला अब सूरज की ओर!
चाँद पर तिरंगा लहरा कर.....,
तू चला अब सूरज की ओर!
नज़र न मिला पाते थे जिससे,
उस सूरज को, अब आंख दिखा दे।

उड़ता जा परिंदे,
तू तो उड़ने को ही आया,
कौन रोकेगा तुझे, ये पंख तूने पाया!
आसमान को चीर के तू.....
औरों को..... औरों को भी ख्वाब दिखा दे!
और उड़ते जो जमीं पर.....
उनको तू औकात दिखा दे।

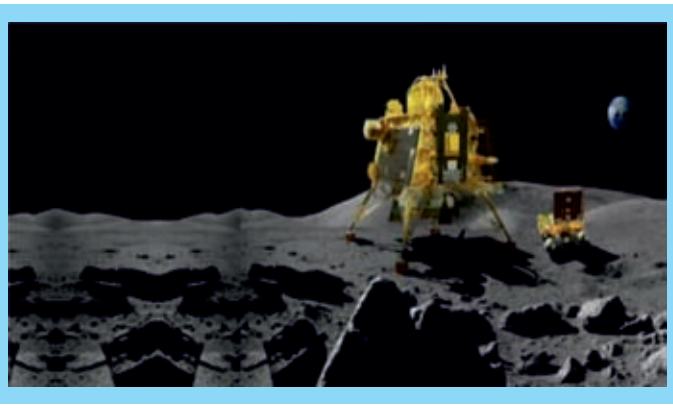

यात्रा–वृत्तांत

'महलों के शहर' की एक मनमोहक यात्रा

रोचक दीक्षित
प्रबंधक
प्र. का., बेंगलूरु

वह गुरुवार की दोपहर थी जब मेरी पत्नी ने फोन किया और मुझे कार्यालय से जल्दी घर आने के लिए कहा। उसने यह भी कहा कि उसने मेरा पसंदीदा खाना बनाया है । मुझे तुरंत पता चल गया कि कुछ गड़बड़ है और मैंने उससे पूछा कि वह बदले में क्या चाहती है। जैसा कि अपेक्षित था, वह अपने उत्तर के साथ तैयार थी। चलो, इस सप्ताह के अंत में मैसूरु चलते हैं उसने कहा। आम तौर पर मैं उसकी मांगों से इतनी आसानी से सहमत नहीं होता लेकिन खुद एक यात्रा प्रेमी होने के नाते मैंने विनम्रतापूर्वक 'हां' कह दिया। शुक्रवार को, हमने बैग पैक किया और मैसूरु की अपनी बहुप्रतीक्षित छुट्टी के लिए निकल पड़े। इस यात्रा वृतांत को लिखने के पीछे दो कारण हैं। सबसे पहले, मैं इस अद्भुत शहर की यात्रा के दौरान मंत्रमुग्ध कर देने वाले अनुभव को साझा करना चाहता हूं क्योंकि मैं मैसूरु के प्राकृतिक सौंदर्य और इतिहास के बारे में नहीं जानता था। दूसरा, यह यात्रा वृत्तांत उन पाठकों के लिए एक यात्रा मार्गदर्शिका के रूप में काम कर सकता है जो इस स्थान का आनंद लेना चाहते हैं।

मैसूरु कैसे पहुंचें: मैसूरु कर्नाटक राज्य के सबसे सुंदर शहरों में से एक है और सड़क, रेल और हवाई मार्ग से यहां पहुँचा जा सकता है।

हवाई मार्ग से: हालाँकि मैसूरु का अपना हवाई अड्डा है, लेकिन यह पूरी तरह कार्यात्मक नहीं है और सभी प्रमुख शहरों से नहीं जुड़ता है। निकटतम प्रमुख हवाई अड्डा केम्पेगौड़ा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा बेंगलूरु है, जो 140 किमी दूर पर स्थित है। बेंगलूरु हवाई अड्डे से मैसूरु के लिए नियमित टैक्सी व बस सेवाएं उपलब्ध हैं। इसके अलावा हवाई अड्डे से वोल्वो बसे भी मिल जाती हैं।

ट्रेन द्वारा: मैसूरु रेलवे स्टेशन न केवल बेंगलूरु से जुड़ा है बल्कि भारत के अन्य सभी प्रमुख शहरों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।

बस द्वारा: राज्य सड़क परिवहन निगम द्वारा बस सेवाएं उपलब्ध हैं। बेंगलूरु और अन्य दक्षिण भारतीय शहरों से मैसूरु के लिए नियमित एसी और नॉन एसी बसें उपलब्ध हैं। बेंगलूरु से मैसूरु शहर तक पहुंचने में लगभग 2½ घंटे लगते हैं।

किसी स्थान पर पहुंचना जितना महत्वपूर्ण है, शहर के भीतर यात्रा करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। मैसूरु के विभिन्न दर्शनीय स्थलों के बीच यात्रा करने का सबसे अच्छा और सबसे किफायती तरीका ऑटो रिक्शा किराए पर लेना है। मैसूरु रेलवे स्टेशन और पूरे शहर में विभिन्न टैक्सियाँ भी उपलब्ध हैं जो लगभग रुपये 2000 और कर वसूलती हैं। हमने अगले कुछ दिनों के लिए एक टैक्सी बुक की जिसने हमें खूबसूरत शहर दिखाया।

मैसूरु, आधिकारिक तौर पर मैसूरु, दक्षिणी भारतीय राज्य कर्नाटक का एक प्रमुख पर्यटलीय शहर है। यह राज्य का तीसरा सबसे अधिक आबादी वाला और दूसरा सबसे बड़ा शहर है और भारत के सबसे स्वच्छ शहरों में से एक है। यह वाडियार राजवंश की राजगद्दी है और 1399 से 1947 तक, लगभग छह शताब्दियों तक मैसूरु साम्राज्य की राजधानी थी। मैसूरु शहर अपने प्रसिद्ध मैसूरु पैलेस सहित अपनी विरासत संरचनाओं और महलों के लिए जाना जाता है और अपनी संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। मैसूरु को महलों का शहर, विरासत शहर और कर्नाटक की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में भी जाना जाता है। अपने प्राचीन और शांत वातावरण के लिए इसे पेंशनभोगियों का स्वर्ग भी कहा जाता है। लेकिन सबसे अच्छी बात यह थी कि स्थानीय लोग बहुत मिलनसार थे और जानते थे कि अपने पर्यटकों का स्वागत कैसे करना है। जैसे ही हम मैसूरु रेलवे स्टेशन पहुँचे, हमारे टैक्सी ड्राइवर ने मुस्कुराते हुए हमारा स्वागत किया, जिसे उस होटल ने भेजा था जहाँ हमने अपना आवास बुक किया था। यह दक्षिण भारतीय वास्तव में एक सज्जन व्यक्ति था और सिर्फ एक ड्राइवर से कहीं अधिक था। हमारे होटल के रास्ते में वह हमसे बात करने लगा कि हम कहाँ से हैं और उसके गृहनगर आने के पीछे हमारा उद्देश्य क्या है। उन्होंने हमें मैसूर के विभिन्न प्रतिष्ठित बिंदुओं और उनके पीछे के थोड़े से इतिहास के बारे में भी जानकारी दी। कुछ ही समय में हम अपने होटल पहुंच गए और सुचारू चेक–इन के बाद, हम अपनी खोज शुरू करने के लिए उत्साहित थे।

हमने अपने दिन की शुरुआत मैसूरु के सबसे प्रसिद्ध जगह यानी 'द मैसूर पैलेस' से की। यह महल अंबाविलास पैलेस के रूप में भी जाना जाता है, इस शाही निवास का दौरा मैसूरु घूमने आने वाले पर्यटकों की पहली पसंद होती है। इसकी इंडो-सारसेनिक वास्तुकला से लेकर इसके शाही अंदरूनी हिस्सों तक, यहां सब कुछ इस बात का ज्वलंत उदाहरण है कि मैसूरु महलों के शहर के रूप में क्यों लोकप्रिय है। यह मैसूरु में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है जो किसी को भी आश्चर्यचकित कर देती है। प्रवेश शुल्क नाममात्र है और इस स्थान पर आम तौर पर शाम के समय काफी भीड़ रहती है। हम विरासत से मंत्रमुग्ध थे लेकिन सर्वश्रेष्ठ दृश्य का आना अभी बाकी था। मैसूरु महल का दर्शन तब तक पूरा नहीं होता है जब तक आप शाम को प्रकाश और ध्वनि शो नहीं देखते, जिसकी पृष्ठभूमि में शहर और वाडियार राजवंश का इतिहास बज रहा हो और सामने अद्भुत प्रकाश प्रभाव हो। मुझे महल का प्रशासन भी पसंद आया। महल के सामने के बगीचे में उचित कुर्सियाँ रखी गईं और लोग ताकि आसानी से अपने परिवार के साथ प्रकाश और ध्वनि शो का आनंद ले सकें। ध्यान रखने वाली एक महत्वपूर्ण बात यह है कि टिकट काउंटर के बाहर भारी भीड़ जमा हो जाती है और वे केवल नकद स्वीकार करते हैं, इसलिए जब आपकी बारी आती है तो टिकट खिड़की पर किसी भी समस्या से बचने के लिए हाथ में खुली नकदी रखना महत्वपूर्ण है।

दिन यहीं समाप्त हो गया लेकिन मेरा मन उस बारे में सोचता रहा जो हमने अभी अनुभव किया था। भारत वास्तव में विविधताओं वाला देश है और हर कोने की अपनी पहचान है। मुझे कुछ देशों की यात्रा करने का सौभाग्य मिला है और उनमें भारत के संबंध में एक बात समान थी। उन सभी देशों में देखने के लिए अच्छे दर्शनीय स्थल थे, लेकिन भारत भी कम नहीं है और संभवतः यहां की विरासत में बहुत अधिक विविधता और इतिहास जुड़ा हुआ है। अंतर प्रस्तुति में है और जिस तरह से वे इसे संरक्षित करते हैं वह कुछ ऐसा है जिससे हम सीख सकते हैं और यदि प्रभावी ढंग से किया जाए तो भारत दुनिया की पर्यटक राजधानी बन सकता है। इससे एक साथ दो उद्देश्य पूरे होंगे। इससे न केवल विदेशी मुद्रा में इज़ाफा होगा बल्कि दुनिया को भारत की विविध विरासत और संस्कृति के बारे में भी पता चलेगा। मैसूरु यात्रा का पहला दिन मेरी उम्मीद से बेहतर रहा। भोजन, विरासत से लेकर शहर के स्थानीय माहौल तक, सब कुछ शानदार था। हम उस समय के बारे में कल्पना करना बंद नहीं कर सकते जब महल जीवित था और अपने राजा और कर्मचारियों से भरा हुआ था। वह कैसा अद्भुत दृश्य रहा होगा? इस विचार के साथ हम अगले रोमांच की प्रतीक्षा करते हुए, उत्साहित होकर सो गए।

अगली सुबह हम प्रतिष्ठित चामुंडी पहाड़ियों पर गए जो 'चामुंडी देवी' मंदिर का घर है। चामुंडी पहाड़ियों की चोटी पर स्थित, श्री चामुंडेश्वरी मंदिर मैसूरु के मुकुट में एक और रत्न है। यदि आप शहर में हैं, तो सुनिश्चित करें कि आप इस स्थान पर जाएं, भले ही आप दिल से इतने धार्मिक न हों। जिस तरह से मंदिर का निर्माण किया गया है और यह जिस तरह से देवी दुर्गा के उग्र रूप को दर्शाता है वह विस्मयकारी है। मंदिर में जाने के लिए कोई प्रवेश शुल्क नहीं है और इसका द्वार प्रतिदिन सुबह 7:30 बजे खुलता है। सप्ताहांत में इस स्थान पर थोड़ी भीड़ हो सकती है, इसलिए अपनी सुबह की नींद को छोड़कर जल्दी मंदिर जाने का प्रयास करें। यह न केवल आपको ट्रैफिक से बचाएगा बल्कि ऊपर से पहाड़ों का दृश्य देखकर मैसूरु शहर का दृश्य आपको जादुई रूप से प्रभावित कर देगा। मंदिर प्रशासन के बारे में एक बात मैंने देखी कि नियमित दर्शन कतार के अलावा राशि के अनुसार अलग कतार बनाई गई थी। एक धार्मिक स्थान पर इस तरह से पैसे की भागीदारी देखना थोड़ा निराशाजनक था। फिर भी उस जगह का करिश्मा हमारी याद्दाश्त में बसा हुआ है और हमने एक पेशेवर फोटोग्राफर द्वारा अपने लिए एक अच्छी पारिवारिक तस्वीर भी फ्रेम करवाई, जिसने 10 मिनट में यह काम पूरा कर दिया।

हमने एक स्थानीय दक्षिण भारतीय रेस्तरां में अच्छा भोजन किया और सबसे अद्भुत, इडली - दोसा खाई। शहर के बारे में एक और अच्छी बात है यहाँ का स्वादिष्ट भोजन और लोगों का इसे प्यार-से परोसना।

इसके बाद हम तुरंत चिड़ियाघर गए क्योंकि मैं और मेरी पत्नी दोनों प्रकृति के करीब हैं और जब भी हमें किसी भी शहर में चिड़ियाघर देखने का मौका मिलता तो हम कोशिश करते कि हम उस अनुभव को न छोड़ें। मैसूर चिड़ियाघर देश में अपनी तरह के सबसे बड़े चिड़ियाघरों में से एक है और यह स्थान मंगलवार को छोड़कर हर दिन खुला रहता है। भालू से लेकर जगुआर तक, हर जानवर हैं जिसे आप प्रसिद्ध मैसूरु चिड़ियाघर में देख सकते हैं। इस जगह का दौरा करना और अपने प्रियजनों के साथ इसका पूरा आनंद लेना निस्संदेह मैसूर में एक दिन में करने वाली शीर्ष चीजों में से एक है। इसके अलावा, यदि आपके साथ बुजुर्ग हैं तो उनके पास बैटरी चालित वाहनों की सुविधा है जो बिना ज्यादा मेहनत किए आपको उद्यान दिखा देंगे। आगे एक लंबा दिन देखकर हम वृन्दावन उद्यान की ओर चल दिए जो मैसूर शहर से लगभग 20 किलोमीटर दूर है। बृंदावन उद्यान कृष्ण राजा सागर बांध के ठीक एक स्तर नीचे स्थित हैं। यह सभी मैसूर और केआरएस बांध आगंतुकों के लिए एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण है। इसे कर्नाटक राज्य के सबसे खूबसूरत उद्यानों में से एक माना जाता है। इस उद्यान में सबसे लोकप्रिय और रोमांचक अनुभव संगीतमय फव्वारा है जो शाम के समय चलता है। अपनी तरह का अनूठा होने के कारण, बृंदावन गार्डन दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करता है और हम भी इसके अपवाद नहीं थे। एक रोमांचक दिन के बाद हम वापस अपने होटल पहुंचे और उत्साहित होकर सो गए क्योंकि अगले दिन कुछ अन्य आकर्षण हमारा इंतजार कर रहा था।

इससे पहले कि हम अंतिम दिन पर आएं, कुछ प्रासंगिक जानकारी जिसे मैं साझा करना चाहूंगा जो न केवल पाठकों के यात्रा अनुभव को बेहतर बनाएगी बल्कि उन्हें तदनुसार अपनी यात्रा की योजना बनाने में भी मदद करेगी।

- रेलवे स्टेशन के पास और शहर के आसपास ठहरने के कई बजट विकल्प उपलब्ध हैं। आप या तो उन्हें भौतिक रूप से देख सकते हैं या किसी यात्रा ऐप के माध्यम से इसे ऑनलाइन बुक कर सकते हैं।
- हालाँकि मैसूर के सुहावने मौसम और दर्शनीय स्थलों का आनंद लेने के लिए कितने दिनों की आवश्यकता है, इसकी कोई सीमा नहीं है। लेकिन प्रमुख आकर्षणों को कवर करने के लिए हमें कम से कम 2-3 दिन चाहिए।
- यदि आपके पास अतिरिक्त दिन हैं तो आप कुछ और स्थानों की यात्रा कर सकते हैं जैसे रेत संग्रहालय, मोम संग्रहालय, जगन मोहन महल, जीआरएस फैंटेसी पार्क और बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान जो शहर से लगभग 90 मिनट की सड़क यात्रा पर है।
- दशहरा मैसूरु शहर का प्रमुख त्यौहार है और त्यौहार के आसपास 10 दिनों तक पूरा शहर जगमगाता रहता है। भव्य रूप से जगमगाता मैसूरु पैलेस और शहर में होने वाले असंख्य मेले और परेड यह साबित करता है कि यहां दशहरा उत्सव में भाग लेना मैसूरु की सबसे अच्छी चीजों में से एक है। यह सबसे असाधारण समारोह है जो शहर को जीवंत बनाता है और पूरे भारत में होने वाले सबसे अच्छे उत्सवों में से एक है।

अपनी यात्रा के अंतिम दिन पर वापस आते हैं जब शाम को हमारी वापसी की रेलगाड़ी थी। हमारा ड्राइवर इतना दयालु था कि उसने हमें ललिता महल, रेशम कारखाने और स्थानीय बाजार से लेकर कुछ अन्य खूबसूरत जगहें दिखाई। लेकिन जैसा कि कहा जाता है कि, सर्वश्रेष्ठ को आखिरी के लिए बचाकर रखना चाहिए। मैं सेंट फिलोमेना चर्च के बारे में बात कर रहा हूँ। यह सुंदर वास्तुकला वाला एक राजसी गिरजाघर है जो शहर के मध्य में स्थित है। परिसर का अच्छे से रखरखाव किया गया है और वातावरण शांत है। प्रवेश करने से पहले आपको अपने जूते उतारने होंगे। मैं सेंट फिलोमेना कैथेड्रल की वास्तुकला से आश्चर्यचकित था। 1956 में निर्मित, यह देश के सबसे बड़े चर्चों में से एक है। गॉथिक वास्तुकला शाम के समय और भी अधिक सुंदर दिखती है, जिससे यह उन पर्यटकों के लिए सर्वोत्तम आश्रय स्थल बन जाता है जो थोड़ी देर के लिए भीड़-भाड़ से बचना चाहते हैं। चर्च में जाने के लिए कोई प्रवेश शुल्क नहीं है।

हमारे ड्राइवर ने हमें रेलवे संग्रहालय छोड़ा जो रेलवे स्टेशन से पैदल दूरी पर है। संग्रहालय में टॉय ट्रेन की सवारी का आनंद लेने के बाद हम वास्तविक ट्रेन में चढ़ गए। इस प्रकार के अनुभव से वापस आना कभी आसान नहीं होता क्योंकि इस प्रकार के अनुभव हमारी आत्मा को छू जाते हैं और हम इससे जुड़ाव महसूस करते हैं और हमेशा और अधिक जानना चाहते हैं। हम कुछ और दिन रुकना चाहते थे लेकिन जैसा कहते हैं, अच्छा समय हमेशा जल्दी बीत जाता है। सौभाग्य से मेरी पत्नी ने अच्छी-खासी तस्वीरें खींचीं थी, जिन्हें हम नरम और स्वादिष्ट 'मैसूर पाक' का आनंद लेते हुए देख सकते थे, जो हमने घर

पर अपने और अपने प्रियजनों के लिए खरीदा था। किसी भी शहर में जाने से पहले उस जगह के बारे में पढ़ना मेरी आदत है। मैंने कहीं पढ़ा था कि जब 2016 में स्वच्छ सर्वेक्षण शुरू किया गया था तब मैसूर सबसे स्वच्छ शहर का पुरस्कार पाने वाला पहला शहर था। डेटा सही साबित होता है क्योंकि शहर के लोग अपने शहर को साफ रखने में गर्व महसूस करते हैं। एक पर्यटक के रूप में यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम किसी स्थान के स्थानीय पर्यावरण का सम्मान करें और उसे साफ रखें ताकि शहर हमें उतना ही याद रखे जितना हम रखते हैं। मैसूर की यात्रा के लिए अक्टूबर से मार्च का समय आदर्श है। इस समय मौसम सुखद रूप से ठंडा रहता है और औसत तापमान 15-27 डिग्री सेल्सियस के बीच रहता है। यह दर्शनीय स्थलों की यात्रा के लिए एकदम सही मौसम है, चाहे आप महलों की भव्यता की प्रशंसा कर रहे हों या हरे-भरे बगीचों में इत्मीनान से टहल रहे हों। मुझे मैसूर की यह शानदार यात्रा याद रहेगी और मैं इस अनुभव को पूरे दिल से संजोकर रखूंगा और मुझे उम्मीद है कि भविष्य में मुझे इस तरह की रोमांचक जगहों पर जाने का मौका मिलेगा। अंत में, मैं यह कहकर अपनी बात समाप्त करना चाहूंगा कि हम सभी को दैनिक, नीरस दिनचर्या से ब्रेक लेना पसंद है, है न? मैं भी चाहता हूं, लेकिन पारिवारिक छुट्टियों की योजना बनाना आमतौर पर कठिन होता है क्योंकि हर कोई एक अलग अनुभव चाहता है। उदाहरण के लिए, मेरी माँ को ऐसी जगह पसंद है जहाँ कुछ इतिहास और सुंदर मंदिर हों। मेरी पत्नी को खूबसूरत परिदृश्य और खरीदारी का शौक है, खासकर कला के संदर्भ में। मैं बस अपनी जेब में छेद नहीं करना चाहता, बाकी सब सही है। और हाँ, हम सभी खाने के शौकीन हैं। लेकिन क्या ऐसी कोई जगह है जो सुंदर, ऐतिहासिक, धार्मिक, कलात्मक, भोजन-स्वर्ग है और फिर भी किफायती हो? मुझे एक जगह मिली, महलों का शहर - मैसूर।

कविता

बैंकिंग का सफर: नए इनोवेशन की ओर

संतोष कुमार
अधिकारी
प्र.का., बेंगलूरु

बैंकिंग की राहों में नई रोशनी है,
नए इनोवेशन की कहानी है।

सुनिए इस कहानी को, नए जज़्बे के साथ,
डिजिटल दुनिया में, है एक नया पथ।

मोबाइल की मिठास और इंटरनेट की बातें,
खाता खोलना हुआ है अब और भी आसान।

पेपरों की चिंगारी से मुक्ति की ओर,
डिजिटल विश्व में है एक नया सफर।

सरलता के संग चल रहा है यह सफर,
आम आदमी के संग चल रही बैंकिंग।

राजभाषा की भव्यता में, है नयी ऊँचाई,
हिंदी में है एक नया विकास का राज।

सरलता के साथ है खाता खुलता,
बैंकिंग की भावना में, है अब एक नया जीवन।

इनोवेटेड भाषा की कहानी बनती जा रही है,
बैंकिंग में एक नया युग आ रहा है।

कविता

गुस्सा और मुस्कान

भानु मदान
अधिकारी
अंचल कार्यालय, चंडीगढ़

गुस्सा करना है आसान,
गुस्सा करना है आसान,
मुश्किल है दूसरों के चेहरों पर, लाना मुस्कान।

रिश्ते बिगाड़ने में लगते हैं चंद क्षण,
रिश्ते बिगाड़ने में लगते हैं चंद क्षण,
रिश्ते बनाने में फेल हो जाते हैं, कई फकीरचंद।

प्यार करने में तो हैं सब माहिर,
प्यार करने में तो हैं सब माहिर,
प्यार निभाने में फेल हो जाते हैं, कई राहगीर ।

डांटने में पड़ता है ना कोई ज़ोर,
डांटने में पड़ता है ना कोई ज़ोर,
मनाने में लग जाता है, लाखों टन का 'फोर्स'।

गुस्सा करने में लगता है ना कोई ज़ोर,
गुस्सा करने में लगता है ना कोई ज़ोर,
मनाने में गुज़र जाते हैं, कई दौर ।

गुस्सा करना है आसान,
गुस्सा करना है आसान,
मुश्किल है दूसरों के चेहरों पर, लाना मुस्कान ।
माफ़ करने में लगती है इच्छा शक्ति,
माफ़ करने में लगती है इच्छा शक्ति,
माफ़ी माँगने में चाहिए, पचासों वर्ष की भक्ति।

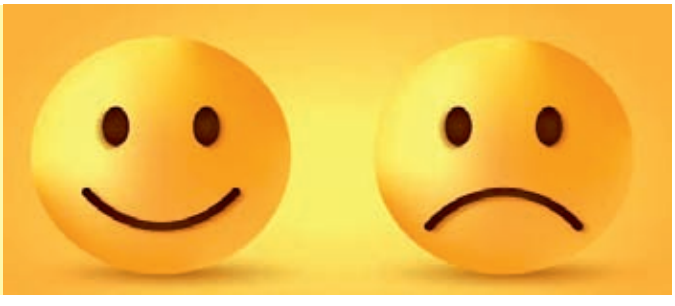

लगता है गलती निकालने पर, बढ़ जाती है शान,
लगता है गलती निकालने पर, बढ़ जाती है शान,
असल में गलती मानने वाला है, सबसे महान।
चैट पर तो करते हैं वादे हज़ार,
चैट पर तो करते हैं वादे हज़ार,
वास्तव में निभा नहीं पाते, दो चार।

नकारात्मकता से बह जाओगे सागर की लहरों में,
नकारात्मकता से बह जाओगे सागर की लहरों में,
सकारात्मकता अपनाओ, सागर भी ले जाएगा तुम्हें सोने के महलों में।

जब आए किसी को गुस्सा इतना,
जब आए किसी को गुस्सा इतना,
तो बता दें उसे मदान का ये नुस्खा।

गुस्सा करना है आसान,
गुस्सा करना है आसान,
मुश्किल है दूसरों के चेहरों पर, लाना मुस्कान।

आलेख

हास्य लेख : मानव जीवन में ईर्ष्या और जलन

मीता भाटिया
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत

आमतौर पर बड़ी सहजता से हर कोई यह कह देता है कि मुझे किसी से जलन नहीं होती या मैं नहीं जलता किसी से, सच में।

अब इस बात पर गौर कीजिए – आप बेरोजगार हैं और किसी दोस्त से मिलने गए, सबसे पहले उसके घरवालों की शक्ल गौर से देखिए और सोचिए इस वक्त वो आपके बारे में क्या सोच रहे हैं, लो आ गया कामचोर। मेरे बेटे को बिगाड़ना बंद कर नासपीटे! कब सुधरेगा तू! फिर भी आप उन्हें अपने दांत जरूर दिखाएँगे, वे भी मज़बूरी में आपको अपने दांत दिखाकर अन्दर आने को कहेंगे, हालांकि उनका मन तो कर रहा है कि आपको भगा दें लेकिन क्या करें उनकी भी मज़बूरी है।

अब अपने दोस्त से मिलिए, आजकल वो कितना व्यस्त है उसका काम और उसके ऑफिस की उपलब्धियां सुनिए, फिर वो आपको मिठाई ज़रूर खिलायेगा क्योंकि उसका अभी–अभी प्रमोशन हुआ है, आप फिर मुस्कुराइए, मुस्कुराते रहिये और ये मुस्कान वास्तविक लगनी चाहिए, आपको तो बिलकुल भी जलन नहीं हो रही है, वाह क्या बात है आप तो सिद्ध पुरुष हैं। फिर उसकी सुन्दर, सुशील बीवी आपके लिए दुःखी मन से चाय बनाकर लाएगी, क्या करें मजबूरी है। पतिदेव के निकम्मे दोस्त को कुछ तो खिलाना पिलाना होगा ना? और चाय सबसे सस्ती पड़ती है। फिर अचानक कहीं से उसका गन्दा सा बच्चा आपकी गोदी में धड़ाम से आ बैठेगा, चॉकलेट से सने अपने हाथ आपकी शर्ट में पोंछकर आपसे मोबाईल जरूर मांगेगा, अंकल – अंकल! मोबाईल दो न, गेम खेलूंगा, आपका मन तो करेगा की इस गधे के बच्चे को उठा के पटक दूँ या खिड़की से बाहर फेंक दूं।

मगर आप ऐसा नहीं कर सकते मजबूरन आप कहेंगे – वाह कितना मासूम बच्चा है बिलकुल अपने बाप पर गया है, (हरकतें भी बंदरों वाली है) तभी उसकी बीवी अपने बच्चे और अपने सुखी गृहस्थ जीवन की कहानियां सुनाना शुरू कर देगी। आप चाहे या ना चाहें, आपको पूरे ध्यान से उसे सुनना ही होगा साथ ही ओह वॉव, सच में, इस तरह के आश्चर्य मिश्रित शब्दों के साथ प्रतिक्रिया भी देनी होगी, फिर वो आपको पिछले महीने की खंडाला ट्रिप वाली सड़ी हुई फोटो अल्बम ज़रूर दिखाएगी, यहां भी आप भरपूर तारीफ़ करेंगे और आपके चेहरे पर मुस्कान और अलग–अलग भाव के साथ आपको हर तस्वीर में अलग–अलग टिप्पणी करनी है। इसके बाद आपके दोस्त का पूरा परिवार अपने खानदान की कहानी बताएँगे कि इनके यहाँ दूर – दूर तक कोई भी बेरोजगार नहीं है, सब पैदा होते ही नौकरी में लग जाते हैं, मानो इनके खानदान की परम्परा यही हो और एक मैं हूँ निकम्मा, कामचोर! इस अपराधबोध को महसूस करिए, फिर भी आपको जलन नहीं होगी, क्योंकि आप एलियन हैं, इस गृह के थोड़ी न हैं। ये सब झेलकर घर पहुँचने पर ये सारी बातें अपने घरवालों को बताइये फिर उनकी प्रतिक्रिया देखें – तू कब उसके जैसे कमायेगा? नालायक! तेरी शादी हो गई होती तो आज तू भी दो तीन बच्चों का बाप होता, जाके कुछ काम धाम क्यों नहीं करता? और आप कहते हैं आपको जलन नहीं होती। असल में मानव नामक जीव दूसरे को दुःख और तकलीफ में फंसा देखकर महासन्तोष का अनुभव करता है, किसी बेरोज़गार और निकम्मे इंसान को देखकर अपनापन महसूस होता है।

कविता

बचपन की मित्रता

अभिषेक गर्ग
प्रबंधक
प्र.का., बेंगलूरु

जीवन के इस अनमोल सफ़र में,
साथ जिनका हरदम है मिलता।
मित्र होते सुख-दुःख के साथी,
अनोखी होती है मित्रों की मित्रता।।

अपना पराया वो न जाने,
मित्र को सगा संबंधी माने।
दुःख जो आये मित्र पर अपने,
आंसू उसकी आँखो में भी आने।।

बचपन के वो मित्र याद हैं आते,
जब साथ थे खेलते और साथ थे खाते।
छोड़कर सब चिंता दुनियादारी की,
एक दूजे के साथ थे समय बिताते।।

स्कूल के दिनों का वो याराना,
घर से साथ थे जाते और साथ था आना।
डाँट जो पड़े शिक्षक की उसको,
खुद का भी साथ खड़े हो जाना।।

वक़्त का पहिया आगे बढ़ता चला गया,
ज़िम्मेदारी का दायरा बढ़ता चला गया।
निकल पड़े अपने-अपने सपनों की राह पर,
लेकिन मित्रता का भाव गहराता चला गया।।

धन दौलत का कोई पैमाना नहीं,
साथ किसी को कुछ लेके जाना नहीं।
जीवन में चार मित्र हो हृदय के प्रिय,
इस से बढ़कर जीवन में कोई खजाना नहीं।।

हों आज हम सफलता के किसी भी पायदान पर,
चाहे जीवन में खुशी हो या हो कठिन सफ़र।
हर पल मुझको संभाला है मित्रों की हिम्मत ने,
मुझे गर्व था, है, और रहेगा अपनी मित्रता पर।।

धीरेन्द्र सिंह
लिपिक
रोहता शाखा, मेरठ

कविता

हँसी और तनाव : एक प्रणय

तनाव की छाँव में, हँसी की कहानी है,
मुश्किल भरी दुनिया में, खुशी की ही जुबानी है।
सबके दिलो में हँसी की आवाज़ है,
जैसे फूलों की महक से बाग हुए गुलज़ार हैं।
शब्दों का संगम, यहाँ की मुस्कान में,
सब कुछ है यहाँ हँसी की जुबान में।
रिश्तों का है जहां, और है खुशी का मेला,
चिंता ने बदली है, हँसी का हर खेला।
रूप बदलती है हँसी, जहां भी होती है,
तोड़ती है जंजीरों को, मुश्किलें आसान होती है।
हँसी की भाषा में है, हर समस्या छोटी,
तनाव की रातों में सिर्फ हँसी से ही रोशनी होती।
सब कुछ है यहाँ हँसी के संग,
दुनिया के रंग दिखते है हँसी के संग।

राजभाषा अधिकारियों का 41वां अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट का राजभाषाई निरीक्षण

दिनांक 08.01.2024 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप–समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। निरीक्षण कार्यक्रम के दौरान उप–समिति के माननीय सांसद डॉ. अमी याज्ञिक, श्रीमती कांता कर्दम, सुश्री सरोज पाण्डेय, समिति सचिव श्री प्रेम नारायण, अवर सचिव श्री विक्रम सिंह उपस्थित रहे। निरीक्षण कार्यक्रम में केनरा बैंक का प्रतिनिधित्व करने हेतु प्रधान कार्यालय की ओर से श्री टी. के. वेणुगोपाल, महाप्रबंधक, श्री ई रमेश, सहा. महाप्रबंधक एवं श्री राघवेंद्र तिवारी, वरि. प्रबंधक तथा अंचल कार्यालय, अहमदाबाद से श्री अमित मित्तल, उप महाप्रबंधक एवं श्री भोम सिंह भाटी, प्रबंधक तथा क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट से श्री कपिल पवन पंत, सहा. महाप्रबंधक एवं श्री संदीप कुमार, प्रबंधक उपस्थित रहे।

प्रधान कार्यालय में हिंदी परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन

दिसंबर, 2023 तिमाही के लिए दिनांक 21.12.2023 को प्रधान कार्यालय के मुख्य सम्मेलन कक्ष में श्री टी के वेणुगोपाल, महाप्रबंधक, मानव संसाधन विभाग की अध्यक्षता में एवं विशेष अतिथि के रूप में सुप्रसिद्ध क्रिकेटर श्री बी के वेंकटेश प्रसाद तथा श्री ई रमेश, सहायक महाप्रबंधक की उपस्थिति में ''ग्राहक आवश्यकता आधारित विपणन रणनीतियों का पुनर्निर्धारण'' विषय पर हिंदी में परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।

आलेख

हिंदी का मानक रूपः प्रयोग की व्यावहारिक समस्याएं

निशा शर्मा
प्रबंधक
उत्कृष्टता केंद्र, गुरुग्राम

मानक हिन्दी, हिन्दी भाषा का एक ऐसा मानक स्वरूप है जिसका शिक्षा, कार्यालयीन कार्यों आदि में प्रयोग किया जाता है। भाषा का क्षेत्र देश, काल और पात्र की दृष्टि से व्यापक है। इसलिए सभी भाषाओं में विविध रूप मिलते हैं। इन विविध रूपों में एकरूपता लाने का प्रयत्न किया जाता है और उसी स्वरूप को मानक भाषा कहा जाता है।

हालांकि यह सत्य है कि विश्व की कोई भी भाषा ऐसी नहीं है जिसका प्रयोग प्रत्येक क्षेत्र में, प्रत्येक स्तर पर, प्रत्येक काल में एक ही प्रकार का हो। भाषा के मानक रूप का प्रयोग यूँ देखा जाए तो सैद्धांतिक ही है, व्यावहारिक नहीं। प्रयोग के आधार पर कार्यालयीन हिंदी और सामान्य बोलचाल की हिंदी में अंतर होना तो सामान्य बात है ही, इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय आधार पर भी हिंदी के स्वरूपों में पर्याप्त अंतर देखने को मिलता है। भाषा का प्रयोग स्थान विशेष या समाज विशेष में होता है जो कि परिवर्तनशील होते हैं। बैंक का अपना समाज है, किसी अन्य प्रशासनिक कार्यालय का अलग समाज है, विद्यालयों का अलग समाज है, चिकित्सकों या वैज्ञानिकों का अलग समाज है। चूँकि इनके विषय अलग-अलग हैं अतः, अभिव्यक्ति संबंधी आवश्यकताएं भी अलग हैं।

हरियाणवी, पहाड़ी, गढ़वाली, कुँमाउनी, मारवाड़ी, मेवाती, अहीरवाटी, मालवी, बुंदेली, अवधी, ब्रज, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी ये सब हिंदी की ही बोलियाँ हैं। इस प्रकार वस्तुतः इन बोलियों का प्रयोग करने वाले वास्तविक रूप में विशुद्ध मानक रूप वाली खड़ी बोली का प्रयोग नहीं करते अपितु उनकी हिंदी कहीं न कहीं उनकी मातृभाषा अर्थात् उपर्युक्त बोलियों से प्रभावित होती है। भारत के विभाजन के बाद बड़ी संख्या में पंजाबी और सिंधी लोगों के आकर बसने के कारण दिल्ली की हिंदी बहुत सीमा तक पंजाबी से प्रभावित है। परिणामतः दिल्ली के ठेठ हिंदी भाषी को भी वही पंजाबी मिश्रित अथवा प्रभावित हिंदी ही मानक रूप लगती है। इसी में अगर थोड़ा और आगे बढ़ा जाए तो ठेठ हिंदी क्षेत्र के लोगों में भी कभी-कभी उर्दू या फ़ारसी के प्रति अनुराग होने के कारण और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में इन भाषाओं का अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव (सरकारी भाषा में भी) होने के कारण क़,ख़,ग़,ज़,फ़ के स्थान पर क, ख, ग, ज, फ का उच्चारण होता है। यही स्थिति अंग्रेजी के डॉक्टर, कॉलेज आदि शब्दों के साथ है।

इसके अलावा पूर्व की ओर 'व' का 'ब', 'ड़' का 'र' और 'श' का 'स' हो जाता है। भोजपुरी, मैथिली और मगही में यह व्यापक रूप से देखने को मिलता है। जैसे विद्या-बिद्या, व्यापार-ब्यापार, शहर-सहर, शादी-सादी, साड़ी-सारी, लड़का-लरका, घोड़ा-घोरा। पूर्व की ओर 'स' से आरंभ होने वाले संयुक्त व्यंजन में यदि दूसरा व्यंजन स्पर्श हो तो यह कुछ इस प्रकार उच्चारित किया जाता है जैसे स्पष्ट-अस्पष्ट, स्टूल-अस्टूल, स्थान-अस्थान जबकि राजस्थानी, पंजाबी और हरियाणवी व्यक्ति के साथ इस मामले में स्थिति दूसरी हो जाती है जहाँ स्टेशन-टेशन या सटेशन, स्पष्ट-सपष्ट, स्कूल-सकूल आदि। भोजपुरी, अवधी, राजस्थानी, हरियाणवी, छत्तीसगढ़ी आदि अनेक क्षेत्रों के लोग शब्द के आरंभ में 'क्ष' के स्थान पर छ उच्चारित करते हैं जैसे क्षमा-छमा, क्षेत्र-छेत्र और यदि 'क्ष' मध्य में कहीं आ रहा है तो वह 'च्छ' हो जाता है जैसे शिक्षक-शिच्छक, कक्षा-कच्छा आदि।

'ऋ' के उच्चारण के साथ भी व्यापक भिन्नता है। पश्चिमी हिंदी में हरियाणा, राजस्थान व दिल्ली जैसे क्षेत्रों में 'ऋ' को 'र' की भाँति उच्चारित किया जाता है जैसे 'गृह' को भी 'ग्रह' उच्चारित करते हैं, वहीं मराठी और दक्षिण भारत में 'ऋ' का उच्चारण 'रु' की तरह किया जाता है जैसे 'कृपा' को 'क्रुपा' और 'अमृत' को 'अम्रुत' के रूप में उच्चारित किया जाता है जबकि वास्तविक उच्चारण 'रि' है।

'ज्ञ' के उच्चारण में भी पर्याप्त भिन्नता देखने को मिलती है। पश्चिमी हिंदी भाषी क्षेत्र के लोग इसे 'ग्य' के रूप में उच्चारित करते हैं तो पूर्वी हिंदी भाषी क्षेत्र के लोग इसे 'ग्यँ' के रूप में उच्चारित करते हैं। वहीं संस्कृत बहुलता वाले क्षेत्र (मुख्यतः दक्षिण भारतीय लोग (ज+ञ) को दृष्टिगत कर इसे ज्यँ के रूप में उच्चारित करते हैं। हरियाणा में 'ल' के स्थान पर 'ळ' का प्रयोग किया जाता है, जैसे काला- काळा, केला-केळा आदि।

संख्यावाचक शब्दों के साथ भी अनेक परिवर्त (variant) प्रचलित हैं जैसे छियासी, हरियाणा और राजस्थान में छ्यासी है, ग्यारह – ग्यारा, बारह–बारा, तेरह–तेरा है तो पचानवे–पिचाणमे है। पूर्व में संख्यावाचक शब्दों के साथ दूसरे प्रकार के परिवर्त मिलते हैं। भोजपुरी में छियासठ –छाछट या छाछठ हो जाता है। उन्नीस, इक्कीस, बाईस, छब्बीस, तेईस आदि में 'ई' के स्थान पर 'इ' उच्चारित की जाती है जैसे उन्नीस की जगह उन्निस, इक्कीस की जगह इकिस। वहीं ग्यारह को पूर्व में इगारह उच्चारित किया जाता है।

ध्वन्यात्मक स्तर पर देखें तो सामान्य तौर पर 'ख' के स्थान पर 'क', 'क' के स्थान पर 'ग', 'ठ' के स्थान पर 'ट', 'ज' के स्थान पर 'झ' आदि का उच्चारण किया जाता है। अतः जूठा–झूटा, धोखा–धोका, नकद–नगद हो जाता है। वहीं उत्तर प्रदेश में लखनऊ स्वयं राजधानी होकर भी नखलऊ हो जाता है।

सिर्फ स्वर या व्यंजनों के स्तर पर ही विभिन्नताएं नहीं हैं। शब्दों और वाक्यों के स्तर पर भी पर्याप्त विविधता है जहाँ अर्थ भी अलग हो जाता है। जैसे मेरठ, बागपत, गाज़ियाबाद आदि जिलों को छोड़ दें तो समस्त उत्तर प्रदेश और बिहार में 'मैंने यह किया है' को 'हम ये किए हैं' कहा जाता है। 'मैंने यह किया है' को दिल्ली में कहा जाता है 'मैंने ये करा है।' शब्दों का प्रयोग समान रहने पर भी कई बार अर्थ में भिन्नता मिलती है जैसे भोजपुरी में 'नाती' का अर्थ 'बेटी का बेटा' तथा 'पोता' अर्थात 'बेटे का बेटा' होता है। ब्रज क्षेत्र में नाती तथा पोता दोनों का अर्थ 'बेटे का बेटा' होता है। ब्रज में खींचना को 'ऐंचना' कहते हैं वहीं यह 'खींचना' हरियाणा, दिल्ली जैसे क्षेत्रों में 'खेंचना' हो जाता है। जहाँ छोरा–छोरी शब्द हरियाणा में लड़का–लड़की के लिए सामान्य रूप में प्रयोग वाक्य रचना के स्तर पर तो और भी वैविध्य है जैसे हरियाणा वाले पूरा पदक्रम बदल देते हैं। 'आउँगी, पर इनके साथ नहीं' को हरियाणा में कहा जाएगा 'आउँ तो गी पर इनके साथ नहीं'। 'कानपुर में ही रहते हैं' को उत्तर प्रदेश में 'कानेपुर में रहते हैं' कहा जाएगा। अगर कहना हो कि 'अर्जुन के दो बेटे हैं' को पूर्वी हिंदी में कहते हैं 'अर्जुन को दो बेटा है।' इस तरह के उदाहरण मुहावरे और लोकोक्ति के स्तर पर भी मिलते हैं जैसे पश्चिम में मुहावरा है 'कहने से कुम्हार गधे पर नहीं चढ़ता' इसी को पूर्वी हिंदी का प्रयोग करने वाले लोग कहते हैं कि 'कहने से धोबी गधे पर नहीं चढ़ता'।

व्याकरणिक स्तर पर देखें तो उत्तर प्रदेश में 'गुस्सा आई' या 'गुस्सा आती है' बोला जाता है, वहीं मध्य प्रदेश की ओर 'गुस्सा लगती है' और बाकी भारत में 'गुस्सा आता है'। यह स्त्रीलिंग–पुल्लिंग का परिवर्त जीवों और वस्तुओं के साथ भी है जैसे कुछ स्थानों पर 'दही खाया' तो वहीं कुछ स्थानों पर 'दही खाई' है। भोजपुरी में हाथी स्त्रीलिंग है और 'हत्था' पुल्लिंग जबकि बाकी भारत में 'हाथी' पुल्लिंग और 'हथिनी' स्त्रीलिंग है।

कई बार अनुतान (स्वर में उतार–चढ़ाव को अनुतान कहते हैं) और बलाघात का प्रयोग भी शुद्धता व अशुद्धता का कारक बनता है। यह मौखिक के साथ–साथ लिखित भाषा का भी स्वरूप बिगाड़ने की क्षमता रखते हैं जिसमें कई बार अर्थ भी पलट जाता है।

जैसे 'रमा आ गई?' (प्रश्नवाचक)

'रमा आ गई।' (साधारण)

'रमा आ गई!' (विस्मयसूचक)

इस प्रकार उचित शब्द, पदबंध, उपवाक्यों और उचित विरामों का प्रयोग भाषा की शुद्धता निश्चित करते हैं। अक्सर देखा गया है सौंदर्य से सौंदर्यता जैसे शब्दों का निर्माण कर लिया जाता है। जबकि सही शब्द 'सुंदरता' है। ऐसे ही बहुत बार 'मुझे' का स्थान आम बोलचाल में 'मुझको' या 'मेरेको' ले लेता है।

व्याकरण के संबंध में निम्नलिखित उदाहरण भी दृष्टव्य है–

लिंग– यह सौभाग्य आपकी ही देन थी। (अशुद्ध)
यह सौभाग्य आपकी ही देन था। (शुद्ध)

वचन– उसका प्राण निकल गया। (अशुद्ध)
उसके प्राण निकल गए। (शुद्ध)

क्रम– एक फूलों की टोकरी रखी है। (अशुद्ध)
फूलों की एक टोकरी रखी है। (शुद्ध)

पुनरावृत्ति– वे हमेशा ही ऐसा करती हैं। (अशुद्ध)
वे हमेशा ऐसा करती हैं। (शुद्ध)

मानक हिंदी के लिए केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा दिए गए निर्देश इस प्रकार हैं

संयुक्त वर्ण

खड़ी पाई वाले व्यंजन

खड़ी पाई वाले व्यंजनों के संयुक्त रूप परंपरागत तरीके से खड़ी पाई को हटाकर ही बनाए जाएं। यथा:-

- ख्याति, लग्न, विघ्न
- कच्चा, छज्जा
- नगण्य
- कुत्ता, पथ्य, ध्वनि, न्यास
- प्यास, डिब्बा, सभ्य, रम्य
- शय्या
- उल्लेख
- व्यास
- श्लोक
- राष्ट्रीय
- स्वीकृति
- यक्ष्मा
- त्र्यंबक

अन्य व्यंजन

क और फ/फ़ के संयुक्ताक्षर

संयुक्त, पक्का, दफ़्तर आदि की तरह बनाए जाएं, न कि संयुक्त (पक्का लिखने में क के नीचे क नहीं) की तरह।

ङ, छ, ट, ड़, ढ, द और ह के संयुक्ताक्षर हल् चिन्ह लगाकर ही बनाए जाएं। यथा:-

- वाङ्मय, लट्टू, बुड्ढा, विद्या, चि, ब्रह्मा आदि।

संयुक्त 'र' के प्रचलित तीनों रूप यथावत् रहेंगे। यथा:- प्रकार, धर्म, राष्ट्र।

श्र का प्रचलित रूप ही मान्य होगा। इसे (क्र में क के बदले श लिखा मान लें) के रूप में नहीं लिखा जाएगा। त+र के संयुक्त रूप के लिए पहले त्र और (क्र में क के बदले त लिखा मान लें) दोनों रूपों में से किसी एक के प्रयोग की छूट दी गई थी। परंतु अब इसका परंपरागत रूप त्र ही मानक माना जाए। श्र और त्र के अतिरिक्त अन्य व्यंजन+र के संयुक्ताक्षर उक्त नियमानुसार बनेंगे। जैसे:- क्र, प्र, ब्र, स्र, ह्र आदि।

हल् चिन्ह युक्त वर्ण से बनने वाले संयुक्ताक्षर के द्वितीय व्यंजन के साथ इ की मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यंजन के तत्काल पूर्व ही किया जाएगा, न कि पूरे युग्म से पूर्व। यथा:- चिट्ठियाँ, द्वितीय, बुद्धिमान, चिति आदि

टिप्पणी: संस्कृत भाषा के मूल श्लोकों को उद्धृत करते समय संयुक्ताक्षर पुरानी शैली से भी लिखे जा सकेंगे। जैसे:- संयुक्त, चिह्न, विद्या, विद्वान, वृद्ध, द्वितीय, बुद्धि आदि। किंतु यदि इन्हें भी उपर्युक्त नियमों के अनुसार ही लिखा जाए तो कोई आपत्ति नहीं होगी।

कारक चिन्ह

हिंदी के कारक चिन्ह सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों में प्रातिपदिक से पृथक लिखे जाएं। जैसे:- राम ने, राम को, राम से, स्त्री का, स्त्री से, सेवा में आदि। सर्वनाम शब्दों में ये चि प्रातिपादिक के साथ मिलाकर लिखे जाएं। जैसे:- तूने, आपने, तुमसे, उसने, उसको, उससे, उसपर आदि (मेरेको, मेरेसे आदि रूप व्याकरण सम्मत नहीं हैं)।

सर्वनाम के साथ यदि दो कारक चिन्ह हों तो उनमें से पहला मिलाकर और दूसरा पृथक् लिखा जाए। जैसे:- उसके लिए, इसमें से।

सर्वनाम और कारक चिन्ह के बीच 'ही', 'तक' आदि का निपात हो तो कारक चिन्ह को पृथक् लिखा जाए। जैसे:- आप ही के लिए, मुझ तक को।

क्रिया पद

संयुक्त क्रिया पदों में सभी अंगीभूत क्रियाएं पृथक्-पृथक् लिखी जाएं। जैसे:- पढ़ा करता है, खाया करता है, कर सकता है, पढ़ा करता था, खेला करेगा, बढ़ते चले जा रहे हैं आदि।

हाइफ़न (योजक चिन्ह)

हाइफ़न का विधान स्पष्टता के लिए किया गया है।

द्वंद्व समास में पदों के बीच हाइफ़न रखा जाए। जैसे:- राम-लक्ष्मण, देख-रेख, चाल-चलन, हँसी-मज़ाक, लेन-देन, पढ़ना-लिखना, आदि।

सा, जैसा आदि से पूर्व हाइफ़न रखा जाए। जैसे:- तुम-सा, राम-जैसा, चाकू-सा तेज़।

तत्पुरुष समास में हाइफ़न का प्रयोग केवल वहीं किया जाए जहाँ उसके बिना भ्रम होने की संभावना हो, अन्यथा नहीं। जैसे:- भू-तत्व सामान्यत: तत्पुरुष समास में हाइफ़न लगाने की नहीं आवश्यकता नहीं है। जैसे:- रामराज्य, राजकुमार, गंगाजल, ग्रामवासी, आत्महत्या आदि।

इसी तरह यदि 'अ–निख' (बिना नख का) समस्त पद में हाइफ़न न लगाया जाए तो उसे 'अनख' पढ़े जाने से 'क्रोध' का अर्थ भी निकल सकता है। अ–नति (नम्रता का अभाव): अनति (थोड़ा), अ–परस (जिसे किसी ने न छुआ हो): अपरस (एक चर्म रोग), भू–तत्व (पृथ्वी–तत्व): भूतत्व (भूत होने का भाव) आदि समस्त पदों की भी यही स्थिति है। ये सभी युग्म वर्तनी और अर्थ दोनों दृष्टियों से भिन्न–भिन्न शब्द हैं।

कठिन संधियों से बचने के लिए भी हाइफ़न का प्रयोग किया जा सकता है। जैसे:– द्वि–अक्षर (द्व्यक्षर), द्वि–अर्थक (द्व्यर्थक) आदि।

अव्यय

'तक', 'साथ' आदि अव्यय सदा पृथक् लिखे जाएं। जैसे :– यहाँ तक, आपके साथ।

आह, ओह, अहा, ऐ, ही, तो, सो, भी, न, जब, तब, कब, यहाँ, वहाँ, कहाँ, सदा, क्या, श्री, जी, तक, भर, मात्र, साथ, कि, किंतु, मगर, लेकिन, चाहे, या, अथवा, तथा, यथा और आदि अनेक प्रकार के भावों का बोध कराने वाले अव्यय हैं। कुछ अव्ययों के आगे कारक चिह्न भी आते हैं। जैसे:– अब से, तब से, यहाँ से, वहाँ से, सदा से आदि। नियम के अनुसार अव्यय सदा पृथक् लिखे जाने चाहिए। जैसे:– आप ही के लिए, मुझ तक को, आपके साथ, गज़ भर कपड़ा, देश भर, रात भर, दिन भर, वह इतना भर कर दे, मुझे जाने तो दो, काम भी नहीं बना, पचास रुपए मात्र आदि।

सम्मानार्थक 'श्री' और 'जी' अव्यय भी पृथक् लिखे जाएं। जैसे श्री श्रीराम, कन्हैयालाल जी, महात्मा जी आदि (यदि श्री, जी आदि व्यक्तिवाची संज्ञा के ही भाग हों तो मिलाकर लिखे जाएं। जैसे:– श्रीराम, रामजी लाल आदि)।

समस्त पदों में प्रति, मात्र, यथा आदि अव्यय जोड़कर लिखे जाएं (यानी पृथक् नहीं लिखे जाएं)। जैसे – प्रतिदिन, प्रतिशत, मानवमात्र, निमित्तमात्र, यथासमय, यथोचित आदि। यह सर्वविदित नियम है कि समास न होने पर समस्त पद एक माना जाता है। अत: उसे व्यस्त रूप में न लिखकर एक साथ लिखना ही संगत है। 'दस रुपए मात्र', 'मात्र दो व्यक्ति' में पदबंध की रचना है। यहाँ मात्र अलग से लिखा जाए।

अनुस्वार (शिरोबिंदु/बिंदी) तथा अनुनासिकता चिन्ह (चंद्रबिंदु)

अनुस्वार व्यंजन है और अनुनासिकता स्वर का नासिक्य विकार। हिंदी में ये दोनों अर्थभेदक भी हैं। अतः हिंदी में अनुस्वार (ं) और अनुनासिकता चिन्ह (ँ) दोनों ही प्रचलित रहेंगे।

अनुस्वार

संस्कृत शब्दों का अनुस्वार अन्यवर्गीय वर्णों से पहले यथावत रहेगा। जैसे – संयोग, संरक्षण, संलग्न, संवाद, कंस, हिंस्र आदि।

संयुक्त व्यंजन के रूप में जहाँ पंचम वर्ण (पंचमाक्षर) के बाद सवर्गीय शेष चार वर्णों में से कोई वर्ण हो तो एकरूपता और मुद्रण/लेखन की सुविधा के लिए अनुस्वार का ही प्रयोग करना चाहिए। जैसे – पंकज, गंगा, चंचल, कंजूस, कंठ, ठंडा, संत, संध्या, मंदिर, संपादक, संबंध आदि (पंकज, गंगा, चंचल, कंजूस, कण्ठ, ठण्डा, सन्त, मन्दिर, सन्ध्या, सम्पादक, सम्बन्ध वाले रूप नहीं)। बंधनी में रखे हुए रूप संस्कृत के उद्धरणों में ही मान्य होंगे। हिंदी में बिंदी (अनुस्वार) का प्रयोग करना ही उचित होगा।

यदि पंचमाक्षर के बाद किसी अन्य वर्ग का कोई वर्ण आए तो पंचमाक्षर अनुस्वार के रूप में परिवर्तित नहीं होगा। जैसे:– वाङ्मय, अन्य, चिन्मय, उन्मुख आदि (वांमय, अंय, चिंमय, उंमुख आदि रूप ग्राह्य नहीं होंगे)।

पंचम वर्ण यदि द्वित्व रूप में (दुबारा) आए तो पंचम वर्ण अनुस्वार में परिवर्तित नहीं होगा। जैसे – अन्न, सम्मेलन, सम्मति आदि (अंन, संमेलन, संमति रूप ग्राह्य नहीं होंगे)।

अंग्रेज़ी, उर्दू से गृहीत शब्दों में आधे वर्ण या अनुस्वार के भ्रम को दूर करने के लिए नासिक्य व्यंजन को पूरा लिखना अच्छा रहेगा। जैसे:– लिमका, तनखाह, तिनका, तमगा, कमसिन आदि।

संस्कृत के कुछ तत्सम शब्दों के अंत में अनुस्वार का प्रयोग म् का सूचक है। जैसे – अहं (अहम्), एवं (एवम्), परं (परम्), शिवं (शिवम्)।

अनुनासिकता (चंद्रबिंदु)

हिंदी के शब्दों में उचित ढंग से चंद्रबिंदु का प्रयोग अनिवार्य होगा।

अनुनासिकता व्यंजन नहीं है, स्वरों का ध्वनिगुण है। अनुनासिक स्वरों के उच्चारण में नाक से भी हवा निकलती है। जैसे:– आँ, ऊँ, एं, माँ, हूँ, आएं।

चंद्रबिंदु के बिना प्राय: अर्थ में भ्रम की गुंजाइश रहती है। जैसे:– हंस: हँस, अंगना: अँगना, स्वांग (स्व+अंग): स्वाँग आदि में। अतएव ऐसे भ्रम को दूर करने के लिए चंद्रबिंदु का प्रयोग अवश्य किया जाना चाहिए। किंतु जहाँ (विशेषकर शिरोरेखा के ऊपर जुड़ने वाली मात्रा के साथ) चंद्रबिंदु के प्रयोग से छपाई आदि में बहुत कठिनाई हो और चंद्रबिंदु के स्थान पर बिंदु का (अनुस्वार चिन्ह का) प्रयोग किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न न करे, वहाँ चंद्रबिंदु के स्थान पर बिंदु के प्रयोग

की छूट रहेगी। जैसे:- नहीं, में, मैं आदि। कविता आदि के प्रसंग में छंद की दृष्टि से चंद्रबिंदु का यथास्थान अवश्य प्रयोग किया जाए। इसी प्रकार छोटे बच्चों की प्रवेशिकाओं में जहाँ चंद्रबिंदु का उच्चारण अभीष्ट हो, वहाँ मोटे अक्षरों में उसका यथास्थान सर्वत्र प्रयोग किया जाए। जैसे:- कहाँ, हँसना, आँगन, सँवारना, में, मैं, नहीं आदि।

विसर्ग (:)

संस्कृत के जिन शब्दों में विसर्ग का प्रयोग होता है, वे यदि तत्सम रूप में प्रयुक्त हों तो विसर्ग का प्रयोग अवश्य किया जाए। जैसे:- 'दुःखानुभूति' में। यदि उस शब्द के तद्भव रूप में विसर्ग का लोप हो चुका हो तो उस रूप में विसर्ग के बिना भी काम चल जाएगा। जैसे:- 'दुःख-सुख के साथी'।

तत्सम शब्दों के अंत में प्रयुक्त विसर्ग का प्रयोग अनिवार्य है। यथा:- अतः, पुनः, स्वतः, प्रायः, पूर्णतः, मूलतः, अंततः, वस्तुतः, क्रमशः आदि।

'ह' का अघोष उच्चरित रूप विसर्ग है, अतः उसके स्थान पर (स) घोष 'ह' का लेखन किसी हालत में न किया जाए (अतः, पुनः आदि के स्थान पर अतह, पुनह आदि लिखना अशुद्ध वर्तनी का उदाहरण माना जाएगा)।

दुःसाहस/दुस्साहस, निःशब्द/निशब्द के उभय रूप मान्य होंगे। इनमें द्वित्व वाले रूप को प्राथमिकता दी जाए।

निस्तेज, निर्वचन, निश्चल आदि शब्दों में विसर्ग वाला रूप (निःतेज, निःवचन, निःचल) न लिखा जाए।

अंतःकरण, अंतःपुर, प्रातःकाल आदि शब्द विसर्ग के साथ ही लिखे जाएं।

तद्भव/देशी शब्दों में विसर्ग का प्रयोग न किया जाए। इस आधार पर छः लिखना गलत होगा। छह लिखना ही ठीक होगा।

प्रायद्वीप, समासप्राय आदि शब्दों में तत्सम रूप में भी विसर्ग नहीं है।

विसर्ग को वर्ण के साथ मिलाकर लिखा जाए, जबकि कोलन चिन्ह (उपविराम:) शब्द से कुछ दूरी पर हो। जैसे:- अतः, यों है।

हल् चिन्ह (्)

(्) को हल् चिन्ह कहा जाए न कि हलंत। व्यंजन के नीचे लगा हल् चिन्ह उस व्यंजन के स्वर रहित होने की सूचना देता है, यानी वह व्यंजन विशुद्ध रूप से व्यंजन है। इस तरह से 'जगत' हलंत शब्द कहा जाएगा क्योंकि यह शब्द व्यंजनांत है, स्वरांत नहीं।

संयुक्ताक्षर बनाने के नियम के अनुसार ङ् छ् ट् ठ् ड् ढ् द् ह् में हल् चिन्ह का ही प्रयोग होगा। जैसे: चि, बुड्ढा, विद्वान आदि में।

तत्सम शब्दों का प्रयोग वांछनीय हो तब हलंत रूपों का ही प्रयोग किया जाए; विशेष रूप से तब जब उनसे समस्त पद या व्युत्पन्न शब्द बनते हों। यथा प्राक्:- (प्रागैतिहासिक), वाक्-(वाग्देवी), सत्-(सत्साहित्य), भगवन्-(भगवद्भक्ति), साक्षात्-(साक्षात्कार), जगत्-(जगन्नाथ), तेजस्-(तेजस्वी), विद्युत्-(विद्युल्लता) आदि। तत्सम संबोधन में हे राजन्, हे भगवन् रूप ही स्वीकृत होंगे। हिंदी शैली में हे राजा, हे भगवान लिखे जाएं। जिन शब्दों में हल् चिन्ह लुप्त हो चुका हो, उनमें उसे फिर से लगाने का प्रयत्न न किया जाए। जैसे - महान, विद्वान आदि; क्योंकि हिंदी में अब 'महान' से 'महानता' और 'विद्वानों' जैसे रूप प्रचलित हो चुके हैं।

व्याकरण ग्रंथों में व्यंजन संधि समझाते हुए केवल उतने ही शब्द दिए जाएं, जो शब्द रचना को समझने के लिए आवश्यक हों (उत् + नयन = उन्नयन, उत् + लास = उल्लास) या अर्थ की दृष्टि से उपयोगी हों (जगदीश, जगन्माता, जगजननी)।

हिंदी में हृदयंगम (हृदयम् + गम), उद्धरण (उत्/उद् + हरण), संचित (सम् + चित्) आदि शब्दों का संधि-विच्छेद समझाने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। इसी तरह 'साक्षात्कार', 'जगदीश', 'षट्कोश' जैसे शब्दों के अर्थ को समझाने की आवश्यकता हो तभी उनकी संधि का हवाला दिया जाए। हिंदी में इन्हें स्वतंत्र शब्दों के रूप में ग्रहण करना ही अच्छा होगा।

स्वन परिवर्तन

संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी को ज्यों-का-त्यों ग्रहण किया जाए। अत: 'ब्रह्मा' को 'ब्रम्हा', 'चि' को 'चिन्ह', 'उऋण' को 'उरिण' में बदलना उचित नहीं होगा। इसी प्रकार ग्रहीत, दृष्टव्य, प्रदर्शिनी, अत्याधिक, अनधिकार आदि अशुद्ध प्रयोग ग्राह्य नहीं हैं। इनके स्थान पर क्रमश: गृहीत, द्रष्टव्य, प्रदर्शनी, अत्यधिक, अनधिकार ही लिखना चाहिए।

जिन तत्सम शब्दों में तीन व्यंजनों के संयोग की स्थिति में एक द्वित्वमूलक व्यंजन लुप्त हो गया है उसे न लिखने की छूट है। जैसे:- अर्द्ध-अर्ध, तत्त्व-तत्त्व आदि।

'ऐ', 'औ' का प्रयोग

हिंदी में ऐ (ै), औ (ौ) का प्रयोग दो प्रकार के उच्चारण को व्यक्त करने के लिए होता है। पहले प्रकार का उच्चारण 'है', 'और' आदि में मूल स्वरों की तरह होने लगा है; जबकि दूसरे प्रकार का उच्चारण

'गवैया', 'कौवा' आदि शब्दों में संयुक्ताक्षरों के रूप में आज भी सुरक्षित है। दोनों ही प्रकार के उच्चारणों को व्यक्त करने के लिए इन्हीं चिन्हों (ऐ, ै, औ, ौ) का प्रयोग किया जाए। 'गवय्या', 'कव्वा' आदि संशोधनों की आवश्यकता नहीं है। अन्य उदाहरण हैं:- भैया, सैयद, तैयार, हौवा आदि।

दक्षिण के अय्यर, नय्यर, रामय्या आदि व्यक्तिनामों को हिंदी उच्चारण के अनुसार ऐयर, नैयर, रामैया आदि न लिखा जाए, क्योंकि मूलभाषा में इसका उच्चारण भिन्न है।

अव्वल, कव्वाल, कव्वाली जैसे शब्द प्रचलित हैं। इन्हें लेखन में यथावत रखा जाए।

संस्कृत के तत्सम शब्द 'शय्या' को 'शैया' न लिखा जाए।

पूर्वकालिक कृदंत प्रत्यय 'कर'

पूर्वकालिक कृदंत प्रत्यय 'कर' क्रिया से मिलाकर लिखा जाए। जैसे:- मिलाकर, खा-पीकर, रो-रोकर आदि।

कर + कर से 'करके' और करा + कर से 'कराके' बनेगा।

वाला

क्रिया रूपों में 'करने वाला', 'आने वाला', 'बोलने वाला' आदि को अलग लिखा जाए। जैसे:- मैं घर जाने वाला हूँ, जाने वाले लोग।

योजक प्रत्यय के रूप में 'घरवाला', 'टोपीवाला' (टोपी बेचने वाला), दिलवाला, दूधवाला आदि एक शब्द के समान ही लिखे जाएंगे।

'वाला' जब प्रत्यय के रूप में आएगा तब तो मिलाकर लिखा जाएगा; अन्यथा अलग से। यह वाला, यह वाली, पहले वाला, अच्छा वाला, लाल वाला, कल वाली बात आदि में वाला निर्देशक शब्द है। अतः इसे अलग ही लिखा जाए। इसी तरह लंबे बालों वाली लड़की, दाढ़ी वाला आदमी आदि शब्दों में भी वाला अलग लिखा जाएगा। इससे हम रचना के स्तर पर अंतर कर सकते हैं। जैसे:- गाँववाला - villager गाँव वाला मकान - village house

श्रुतिमूलक 'य', 'व'

जहाँ श्रुतिमूलक य, व का प्रयोग विकल्प से होता है वहाँ न किया जाए, अर्थात् किए: किये, नई: नयी, हुआ: हुवा आदि में से पहले (स्वरात्मक) रूपों का प्रयोग किया जाए। यह नियम क्रिया, विशेषण, अव्यय आदि सभी रूपों और स्थितियों में लागू माना जाए। जैसे:- दिखाए गए, राम के लिए, पुस्तक लिए हुए, नई दिल्ली आदि।

जहाँ 'य' श्रुतिमूलक व्याकरणिक परिवर्तन न होकर शब्द का ही मूल तत्त्व हो वहाँ वैकल्पिक श्रुतिमूलक स्वरात्मक परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं है। जैसे:- स्थायी, अव्ययीभाव, दायित्व आदि (अर्थात् यहाँ स्थाई, अव्यईभाव, दाइत्व नहीं लिखा जाएगा)।

विदेशी ध्वनियाँ

उर्दू शब्द

उर्दू से आए अरबी-फ़ारसी मूलक वे शब्द जो हिंदी के अंग बन चुके हैं और जिनकी विदेशी ध्वनियों का हिंदी ध्वनियों में रूपांतर हो चुका है, हिंदी रूप में ही स्वीकार किए जा सकते हैं। जैसे:- कलम, किला, दाग आदि (क़लम, क़िला, दाग़ नहीं)। पर जहाँ उनका शुद्ध विदेशी रूप में प्रयोग अभीष्ट हो अथवा उच्चारणगत भेद बताना आवश्यक हो, वहाँ उनके हिंदी में प्रचलित रूपों में यथास्थान नुक्ते लगाए जाएं। जैसे:- खाना: ख़ाना, राज: राज़, फन: फ़न आदि।

अंग्रेज़ी शब्द

अंग्रेज़ी के जिन शब्दों में अर्धविवृत 'ओ' ध्वनि का प्रयोग होता है, उनके शुद्ध रूप का हिंदी में प्रयोग अभीष्ट होने पर 'आ' की मात्रा के ऊपर अर्धचंद्र का प्रयोग किया जाए (ऑ, ॅ)। जहाँ तक अंग्रेज़ी और अन्य विदेशी भाषाओं से नए शब्द ग्रहण करने और उनके देवनागरी लिप्यंतरण का संबंध है, अगस्त-सितंबर, 1962 में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा वैज्ञानिक शब्दावली पर आयोजित भाषाविदों की संगोष्ठी में अंतरराष्ट्रीय शब्दावली के देवनागरी लिप्यंतरण के संबंध में की गई सिफ़ारिश उल्लेखनीय है। उसमें यह कहा गया है कि अंग्रेज़ी शब्दों का देवनागरी लिप्यंतरण इतना क्लिष्ट नहीं होना चाहिए कि उसके वर्तमान देवनागरी वर्णों में अनेक नए संकेत-चिन्ह लगाने पड़ें। अंग्रेज़ी शब्दों का देवनागरी लिप्यंतरण मानक अंग्रेज़ी उच्चारण के अधिक-से-अधिक निकट होना चाहिए।

द्विधा रूप वर्तनी

हिंदी में कुछ प्रचलित शब्द ऐसे हैं जिनकी वर्तनी के दो-दो रूप बराबर चल रहे हैं। कुछ उदाहरण हैं:- गरदन/गर्दन, गरमी/गर्मी, बरफ़/बर्फ़, बिलकुल/बिल्कुल, सरदी/सर्दी, कुरसी/कुर्सी, भरती/भर्ती, फ़ुरसत/फ़ुर्सत, बरदाश्त/बर्दाश्त, वापस/वापिस, आखिरकार/आखीरकार, बरतन/बर्तन, दुबारा/दोबारा, दुकान/दूकान, बीमारी/बिमारी आदि। इन वैकल्पिक रूपों में से पहले वाले रूप को प्राथमिकता दी जाए।

अन्य नियम

शिरोरेखा का प्रयोग प्रचलित रहेगा।

फुलस्टॉप (पूर्ण विराम) को छोड़कर शेष विरामादि चिन्ह वही ग्रहण कर लिए गए हैं जो अंग्रेज़ी में प्रचलित हैं। यथा:- (हाइफ़न/ योजक चि), - (डैश/निर्देशक चि),:- (कोलन एंड डेश/विवरण चि), (कोमा/अल्पविराम),; (सेमीकोलन/अर्धविराम),: (कोलन/उपविराम),? (क्वश्चनमार्क/प्रश्न चि),! (साइन ऑफ़ इंटेरोगेशन/विस्मयसूचक चि),' (अपोस्ट्राफ़ी/ऊर्ध्व अल्प विराम), " " (ड़बल इन्वर्टेड़ कोमाज़/उद्धरण चिन्ह), '' (सिंगल इन्वर्टेड़ कोमा/शब्द चिन्ह). ( ), { }, [ ], (तीनों कोष्ठक), ... (लोप चिन्ह), (संक्षेपसूचक चिन्ह)//(हंसपद)।

विसर्ग के चिन्ह को ही कोलन का चिन्ह मान लिया गया है। पर दोनों में यह अंतर रखा गया है कि विसर्ग वर्ण से सटाकर और कोलन शब्द से कुछ दूरी पर रहे।

पूर्ण विराम के लिए खड़ी पाई (।) का ही प्रयोग किया जाए। वाक्य के अंत में बिंदु (अंग्रेज़ी फुलस्टॉप .) का नहीं।

भाषा का मानक होना या शुद्ध होना क्यों आवश्यक है : –

इसमें कोई संशय नहीं है कि न केवल हिंदी अपितु सभी भाषाओं में भिन्न-भिन्न स्तरों पर पर्याप्त विविधताएं मिलती हैं जैसे अंग्रेजी में भी ब्रिटिश, अमेरिकन, ऑस्ट्रेलियाई आदि तमाम रूप में मिलते हैं जहाँ उच्चारण के स्तर पर तो काफी भिन्नता है, अन्य भिन्नताएं भी पाई जाती हैं। अतः यह अवश्यंभावी है कि सर्वत्र मानक रूप का प्रयोग नहीं होगा।

भाषा का सर्वाधिक प्रयोग मौखिक रूप में किया जाता है, इसलिए शुद्ध उच्चारण नितांत आवश्यक है। यदि किसी वक्ता की भाषा व्याकरणिक रूप से सही हो, शब्दों का प्रयोग भी चुन-चुनकर किया हो परंतु उच्चारण भ्रष्ट हो तो भी वह श्रोता पर अच्छा प्रभाव डालने में असफल रहता है। श्रोता पूरी बात सुनेगा तभी उसे पता चलेगा कि आपके वक्तव्य में कितनी तार्किकता है परंतु इतना तो तय है कि आपका उच्चारण प्रथमतया श्रोता के मन में एक धारणा बना देता है और यदि उच्चारण अशुद्ध है तो वह धारणा बेहतर तो नहीं बनेगी।

सही उच्चारण का अभाव न केवल मौखिक बल्कि लिखित भाषा को भ्रष्ट करता है क्योंकि वर्तनी संबंधी त्रुटियों की भी पूरी गुंजाइश होती है। कुछ उदाहरणों में ऊपर हमने देखा कि न केवल एक ही शब्द के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग अर्थ हैं वहीं गलत विराम चिन्हों का प्रयोग लिखित भाषा में अर्थ का अनर्थ कर देता है। भाषा और उसका प्रभाव अच्छा रहे, इसके लिए सटीक शब्दों का चुनाव भी आवश्यक है। कई बार मुहावरों और लोकोक्तियों का अनावश्यक व गलत जगह प्रयोग आपकी छवि को बेहतर करने की बजाय खराब कर सकता है। कई बार निरर्थक शब्दों का प्रयोग करना हमारी आदत में आ चुका होता है जो अशुद्ध होते हैं जैसे बेफ़िजूल, गुप्त रहस्य, कानों में सुनाई दी, अपने मन में सोचो आदि।

भाषा की शुद्धता और अशुद्धता का विषय अत्यंत विस्तृत है। इसे कुछ पन्नों में समेटा जाना संभव नहीं है परंतु किसी भी भाषा का प्रयोग करने वालों के लिए यह तो आवश्यक है कि वे भाषा की शुद्धता का पूरा ध्यान रखें। यूँ भी कार्यालय में कार्य करते समय हम केवल अपनी छवि के लिए ही नहीं अपितु अपने कार्यालय एवं अपनी संस्था दोनों की छवि के लिए उत्तरदायी हैं अतः भाषा को क्लिष्ट करने और भारी-भरकम तथा जटिल शब्दों के प्रयोग की अपेक्षा सरल, सुग्राह्य मगर शुद्ध भाषा के लिए प्रयास करना चाहिए।

जीना अपने ही में एक महान कर्म है!
जीने का हो सदुपयोग यह मनुज धर्म है!
अपने ही में रहना एक प्रबुद्ध कला है!
जग के हित रहने में सबका सहज भला है!
जग का प्यार मिले जन्मों के पुण्य चाहिए!
जग जीवन को प्रेम सिन्धु में डूब चाहिए!
ज्ञानी बनकर मत नीरस उपदेश दीजिए!
लोक कर्म भव सत्य प्रथम सत्कर्म कीजिए!

– सुमित्रा नंदन पंत

आलेख

एनपीए समाधान : भारत में बैंकिंग क्षेत्र की वसूली के लिए प्रमुख घटक

निशीथ श्रीवास्तव
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में एनपीए का परिचय:

अनर्जक आस्तियां भारतीय बैंकिंग क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती रही हैं, जिससे बैंकों की स्थिरता और लाभप्रदता प्रभावित होती है। एनपीए उन ऋणों और अग्रिमों को संदर्भित करता है जो बैंक के लिए ब्याज आय या मूल धन पुनर्भुगतान उत्पन्न करना बंद कर चुके हैं। भारत में एनपीए का उच्च स्तर आर्थिक मंदी, नीतिगत बाधाओं, कॉर्पोरेट प्रशासन के मुद्दों और अपर्याप्त जोखिम मूल्यांकन जैसे कारकों के परिणामस्वरूप हुआ है। एनपीए के संचय से न केवल बैंकों की लाभप्रदता कम होती है, बल्कि ऋण का विस्तार करने और आर्थिक विकास का समर्थन करने में बैंक की क्षमता भी बाधित होती है। स्थिति की गंभीरता को पहचानते हुए, भारत सरकार और नियामक निकायों ने इस मुद्दे को हल करने और एनपीए समाधान के लिए एक मजबूत ढांचा स्थापित करने के लिए सक्रिय उपाय किए हैं। एनपीए का सफल समाधान बैंकिंग क्षेत्र की रिकवरी और भारत में समग्र वित्तीय स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है। एनपीए ने बैंकों की वित्तीय स्थिति को तनावपूर्ण बनाया है, उनकी उधार देने की क्षमता में बाधा उत्पन्न की है और पूरी बैंकिंग प्रणाली के लिए जोखिम पैदा किया है। आस्ति गुणवत्ता समीक्षा की शुरुआत ने एनपीए की वास्तविक सीमा का आकलन करने और रिपोर्टिंग में पारदर्शिता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एक्यूआर के माध्यम से, बैंक तनावग्रस्त आस्तियों की सटीक पहचान करने और समाधान करने के लिए सक्रिय उपाय करने में सक्षम रहे हैं। एनपीए चुनौती को स्वीकार करने और संबोधित करने से, बैंक प्रभावी रणनीतियों को तैयार करने, वसूली तंत्र का लाभ उठाने और अपने वित्तीय स्वास्थ्य को बहाल करने के लिए बेहतर तरीके से सुसज्जित हैं, अंततः भारत में बैंकिंग क्षेत्र की समग्र वसूली में योगदान देते हैं।

सरकार की पहल और नियामक ढांचा:

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में एनपीए की समस्या से निपटने के लिए, सरकार और नियामक निकायों ने विभिन्न पहलों की शुरुआत की है और एक व्यापक नियामक ढांचा पेश किया है। भारतीय रिज़र्व बैंक ने एनपीए समाधान के लिए नीतियां और दिशानिर्देश तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 2016 में दिवाला और दिवालियापन संहिता की शुरुआत एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था, जो तनावग्रस्त आस्तियों के समाधान के लिए एक समयबद्ध और लेनदेन अनुकूल तंत्र प्रदान करता था। इसके अतिरिक्त, आरबीआई ने एनपीए की रिपोर्टिंग में पारदर्शिता और एकरूपता बढ़ाने के लिए ऋण वर्गीकरण, प्रावधान मानदंडों और तनावग्रस्त आस्ति की पहचान करने पर दिशानिर्देश जारी किए हैं। सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के पूंजी आधार को मजबूत करने के लिए पुनर्पूंजीकरण कार्यक्रम भी शुरू किए हैं, जिससे वे नुकसान की भरपाई कर सकें और एनपीए समाधान प्रक्रिया का समर्थन कर सकें। इन पहलों और नियामक उपायों ने एनपीए समाधान के लिए एक अनुकूल वातावरण बनाया है और भारत में बैंकिंग क्षेत्र की वसूली को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दिवाला और दिवालियापन संहिता ने तनावग्रस्त आस्तियों के समयबद्ध समाधान के लिए एक मज़बूत कानूनी ढांचा प्रदान किया है, जिससे समाधान प्रक्रिया की दक्षता और प्रभावशीलता बढ़ गई है। इसके अतिरिक्त, ऋण वर्गीकरण, प्रावधान मानदंडों और तनावग्रस्त आस्ति की पहचान पर आरबीआई के दिशानिर्देशों ने पारदर्शिता और बैंकों में मानकीकृत रिपोर्टिंग प्रथाओं में सुधार किया है। सरकार ने राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण और भारतीय दिवाला एवं ऋणशोधन अक्षमता बोर्ड जैसे संस्थानों की स्थापना कर नियामकीय ढांचे को मजबूत करने के लिए भी कदम उठाए हैं। ये संस्थान दिवालिया समाधान प्रक्रिया की देखरेख और विनियमन करते हुए इसके सुचारू कार्यान्वयन को सुनिश्चित करते हैं।

आस्ति गुणवत्ता की समीक्षा और एनपीए की मान्यता:

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में एनपीए मुद्दे को संबोधित करने में एक महत्वपूर्ण कदम आस्ति गुणवत्ता समीक्षाओं का कार्यान्वयन और एनपीए की पहचान है। एक्यूआर प्रक्रिया में संभावित तनावग्रस्त आस्तियों की पहचान करने और एनपीए की सीमा का सटीक आकलन करने के लिए बैंकों के ऋण पोर्टफोलियो की गहन जांच शामिल है। भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा आयोजित एक्यूआर अभ्यास ने पारदर्शिता में सुधार करने और छिपे हुए एनपीए की पहचान करने में मदद की है जो पहले अज्ञात थे। एनपीए की सही स्थिति को पहचानने और स्वीकार करने से, बैंक उन्हें प्रभावी ढंग से हल करने के लिए उचित उपाय कर सकते हैं। एक्यूआर प्रक्रिया ने जोखिम प्रबंधन प्रथाओं को बढ़ाने, परिसंपत्ति वर्गीकरण मानदंडों में सुधार करने और बैंकिंग क्षेत्र के भीतर अधिक जवाबदेही सुनिश्चित करने में भी योगदान दिया है। एनपीए की पहचान करने और पहचानने के लिए यह सक्रिय दृष्टिकोण सफल समाधान तंत्र की नींव रखने और भारत में बैंकिंग क्षेत्र की वसूली का मार्ग प्रशस्त करने में महत्वपूर्ण रहा है। एक्यूआर प्रक्रिया ने न केवल बैंकों की परिसंपत्ति गुणवत्ता में सुधार किया है, बल्कि जोखिम प्रबंधन प्रथाओं और अभिशासन मानकों को भी बढ़ाया है।

एनपीए के लिए समाधान तंत्र:

भारत में, एनपीए के मुद्दे को हल करने और उनकी वसूली को सुविधाजनक बनाने के लिए विभिन्न समाधान तंत्र स्थापित किए गए हैं। ऋण पुनर्रचना एक ऐसा तंत्र है जहां बैंक उधारकर्ताओं के साथ काम करते हैं ताकि ऋण की शर्तों को संशोधित कर पुनर्भुगतान के लिए इसे अधिक व्यवहार्य बनाया जा सके। रणनीतिक ऋण पुनर्रचना बैंकों को अपने ऋण के एक हिस्से को इक्विटी में बदलने की अनुमति देता है। इन समाधान तंत्रों का उद्देश्य तनावग्रस्त आस्तियों को पुनर्जीवित करना, बकाया राशि वसूलना तथा बैंकों की वित्तीय स्थिति में सुधार करना है। बैंकों के लिए यह आवश्यक है कि वे एनपीए की वसूली में तेजी लाने और भारत में बैंकिंग क्षेत्र की लाभप्रदता और स्थिरता को बहाल करने के लिए उचित समाधान तंत्र को नियोजित करें। ऋण पुनर्रचना का उद्देश्य अस्थायी वित्तीय संकट का सामना कर रहे उधारकर्ताओं को राहत प्रदान करना और ऋण को अनर्जक आस्ति में बदलने से रोकना है। एक अन्य प्रभावी तंत्र परिसंपत्ति पुनर्निर्माण है, जिसमें तनावग्रस्त आस्तियों को विशेष संस्थाओं में स्थानांतरित किया जाता है जिन्हें परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनियों के रूप में जाना जाता है। एआरसी रियायती मूल्य पर बैंकों से संकटग्रस्त परिसंपत्तियों का अधिग्रहण करते हैं और बकाया राशि की वसूली के लिए विभिन्न रणनीतियों को नियोजित करते हैं, जैसे पुनर्रचना, पुनर्विक्रय या कानूनी कार्रवाई करना। ये समाधान तंत्र तनावग्रस्त आस्तियों को पुनर्प्राप्त करने, नुकसान को कम करने और बैंकों और उधारकर्ताओं दोनों की वित्तीय स्थिति में सुधार करने के लिए व्यवहार्य मार्ग प्रदान करते हैं।

वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम:

वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में खराब ऋणों की वसूली के लिए एक महत्वपूर्ण साधन रहा है। वर्ष 2002 में पेश सरफेसी अधिनियम बैंकों और वित्तीय संस्थानों को अपने प्रतिभूति हितों को लागू करने और अदालत के हस्तक्षेप के बिना चूककर्ता कर्जदारों से बकाये की वसूली करने का अधिकार देता है। इस अधिनियम ने बैंकों को अनर्जक आस्तियों की वसूली के लिए अधिक सुव्यवस्थित और कुशल तंत्र प्रदान किया है। सरफेसी अधिनियम के तहत, बैंक एक निश्चित अवधि के भीतर बकाया राशि के भुगतान की मांग करते हुए चूककर्ता उधारकर्ताओं को नोटिस जारी कर सकते हैं। यदि उधारकर्ता नोटिस का पालन करने में विफल रहता है, तो बैंक के पास आस्तियों को कब्जे में लेने और बकाया राशि की वसूली के लिए सार्वजनिक नीलामी करने का अधिकार सुरक्षित है। सरफेसी अधिनियम में संपत्ति पुनर्गठन कंपनियों की स्थापना के प्रावधान भी शामिल हैं। ये विशेष संस्थाएं बैंकों से संकटग्रस्त आस्तियों का अधिग्रहण करती हैं और उनके समाधान और वसूली का कार्य करती हैं। एआरसी रियायती कीमतों पर एनपीए का अधिग्रहण करके और बकाया राशि की वसूली के लिए विभिन्न रणनीतियों को नियोजित करके वसूली प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जैसे कि ऋण पुनर्गठन, संपत्ति की बिक्री, या कानूनी कार्रवाई। सरफेसी अधिनियम बैंकों की वसूली दरों में सुधार लाने और एनपीए का प्रभावी ढंग से समाधान करने की उनकी क्षमता को बढ़ाने में सहायक रहा है। इसने बैंकों को खराब ऋणों के बढ़ते बोझ से निपटने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण प्रदान किया है और भारत में बैंकिंग क्षेत्र की वसूली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

वसूली और दिवालिया प्रक्रियाओं को मजबूत करना:

हाल ही के वर्षों में, भारत में वसूली और दिवाला प्रक्रियाओं को मजबूत करने के लिए कई महत्वपूर्ण प्रयास किए गए हैं, जिसका उद्देश्य एनपीए समाधान में तेजी लाना है। दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता की शुरुआत इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम रहा है। आईबीसी दिवालिया समाधान के लिए एक समयबद्ध और संरचित ढांचा प्रदान करता है, लेनदार-संचालित दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है और तनावग्रस्त आस्तियों के पुनरुद्धार या परिसमापन

की सुविधा प्रदान करता है। यह वित्तीय लेनदारों को चूककर्ता उधारकर्ताओं के खिलाफ दिवाला कार्यवाही शुरू करने का अधिकार प्रदान करता है, जिससे अधिक कुशल और पारदर्शी समाधान प्रक्रिया सुनिश्चित होती है। इसके अलावा, आईबीसी के कार्यान्वयन को राष्ट्रीय कंपनी कानून न्यायाधिकरण और भारतीय दिवाला और दिवालियापन बोर्ड की स्थापना द्वारा समर्थित किया गया है, जो दिवाला समाधान प्रक्रिया को और सुव्यवस्थित करता है। बैड बैंकों और परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनियों की स्थापना ने भी भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में एनपीए के समाधान में तेजी लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एआरसी रियायती मूल्य पर बैंकों से तनावग्रस्त आस्तियों का अधिग्रहण करने और बकाया राशि की वसूली के लिए विभिन्न रणनीतियों को नियोजित करने में विशेषज्ञ हैं।

पुनर्पूंजीकरण और पूंजी निवेश उपाय:

बैंकिंग क्षेत्र को मजबूत करने और एनपीए के समाधान का समर्थन करने के लिए, भारत में पुनर्पूंजीकरण और पूंजी निवेश उपायों को लागू किया गया है। सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में पूंजी डालने के लिए विभिन्न कार्यक्रम शुरू किए हैं ताकि उनकी वित्तीय स्थिति को सुधारा जा सके और उन्हें एनपीए से होने वाले नुकसान को सहन करने में सक्षम बनाया जा सके। इन पूंजी निवेश उपायों का उद्देश्य बैंकों के पूंजी पर्याप्तता अनुपात को बढ़ाना, उनकी उधार देने की क्षमता में सुधार करना और बाजार में विश्वास को बहाल करना है। इसके अतिरिक्त, पुनर्पूंजीकरण के प्रयास आस्ति गुणवत्ता समीक्षा प्रक्रिया के दौरान पहचाने गए पूंजी की कमी को दूर करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि बैंकों के पास एनपीए को बट्टे खाते में डालने या प्रावधान करने के लिए पर्याप्त संसाधन हैं। पूंजी निवेश कार्यक्रम बेसल–III मानदंडों को पूरा करने में भी योगदान देते हैं, जो बैंकों के लचीलेपन को मजबूती प्रदान करते हैं और वित्तीय हानि को अवशोषित करने की उनकी क्षमता को बढ़ाते हैं। बैंकों में नई पूंजी डालकर, ये उपाय उनकी वित्तीय स्थिति को मज़बूत करते हैं और उनकी पूंजी पर्याप्तता अनुपात में सुधार करते हैं। पुनर्पूंजीकरण कार्यक्रम न केवल बैंकों को तत्काल सहायता प्रदान करते हैं, बल्कि उनकी स्थिरता और शोधन क्षमता में विश्वास पैदा करते हैं, जो निवेश को आकर्षित करने और वित्तीय लचीलापन सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, ये उपाय बैंकों की ऋण देने की क्षमता को बढ़ाते हैं, जिससे वे उत्पादक क्षेत्रों को ऋण प्रदान करने और आर्थिक विकास को चलाने में सक्षम होते हैं।

चुनौतियां और भविष्य की संभावनाएं:

हालांकि एनपीए समाधान में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, लेकिन भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में निरंतर सुधार के लिए कई चुनौतियों का समाधान करने की आवश्यकता है। प्रमुख चुनौतियों में से एक कानूनी और न्यायिक ढांचा है, जिसके परिणामस्वरूप अक्सर समाधान प्रक्रिया में देरी होती है। एनपीए से संबंधित कानूनी कार्यवाही को सुव्यवस्थित और तेज करना समय पर समाधान सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण होगा। भविष्य में एनपीए के संचय को रोकने के लिए सतर्कता और सक्रिय उपाय आवश्यक हैं। दिवालिया ढांचे को परिष्कृत करने, आस्ति गुणवत्ता समीक्षा तंत्र में सुधार और एनपीए की रिपोर्टिंग में पारदर्शिता बढ़ाने जैसे निरंतर नियामक सुधार, एनपीए को प्रभावी ढंग से संबोधित करने की बैंकिंग क्षेत्र की क्षमता को और मजबूत करेंगे। इन चुनौतियों का समाधान करके और एक दूरदर्शी दृष्टिकोण अपनाकर, भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में एनपीए समाधान के लिए भविष्य की संभावनाएं आशाजनक हैं। एक अन्य प्रमुख चुनौती बड़े एनपीए की पहचान और समाधान है, जिसके लिए जटिल पुनर्गठन या वसूली तंत्र की आवश्यकता होती है। इन मामलों में अक्सर कानूनी जटिलताएं और लंबी प्रक्रियाएं शामिल होती हैं, जिसके परिणामस्वरूप समाधान में देरी होती है। तेजी से वसूली सुनिश्चित करने और बैंकों की बैलेंस शीट पर प्रभाव को कम करने के लिए ऐसे मामलों के समाधान को सुव्यवस्थित और तेज करना महत्वपूर्ण होगा। इसके अतिरिक्त, भविष्य के एनपीए की रोकथाम महत्वपूर्ण है। इसके लिए मज़बूत जोखिम प्रबंधन प्रथाओं, बेहतर अंडरराइटिंग मानकों और प्रारंभिक चेतावनी संकेतों की पहचान करने के लिए प्रभावी निगरानी तंत्र की आवश्यकता होती है।

उपसंहार:

बैंकिंग प्रौद्योगिकी नवाचार भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में सुधार के लिए उत्प्रेरक के रूप में उभरे हैं। ब्लॉकचेन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा एनालिटिक्स जैसी उन्नत तकनीकों को अपनाने से बैंकिंग परिचालन में बदलाव आया है, जिससे दक्षता, जोखिम शमन और ग्राहक अनुभव में सुधार हुआ है। अनर्जक आस्तियों का समाधान भारत में बैंकिंग क्षेत्र की वसूली के लिए एक प्रमुख चालक के रूप में उभरा है। आस्ति गुणवत्ता समीक्षाओं के कार्यान्वयन और एनपीए प्रबंधन ने बैंकों के ऋण पोर्टफोलियो में पारदर्शिता और सटीक मूल्यांकन लाया है। दिवाला एवं ऋणशोधन अक्षमता संहिता (आईबीसी) की शुरुआत तथा सरकार की पहल और नियामकीय ढांचे ने एनपीए समाधान के लिए एक संरचित दृष्टिकोण प्रदान किया है। परिसंपत्ति पुनर्गठन कंपनियों की भूमिका संकटग्रस्त आस्तियों के प्रबंधन और उनकी वसूली को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण रही है। चुनौतियों के बावजूद, इन उपायों के माध्यम से एनपीए का प्रभावी समाधान बैंकों की स्थिरता, लाभप्रदता और उधार देने की क्षमता को बढ़ावा देता है और भारत में समग्र आर्थिक सुधार में योगदान देता है।

कविता

एक किसान

गौरव जोशी
वरिष्ठ प्रबंधक
अध्ययन व विकास केंद्र, नागपुर

साँच में तपकर जो है ढ़ला, माटी में पलकर जो है बढ़ा
जो है उठाता हर मुसीबत, उपजाने बाली-बाली को
फिर भी संभाले अन्न को वह, इस जमीं पे वो कुर्बान है
न्याय और अन्याय में पिसता, हाँ वही किसान है।

देखकर धरती का रंग, धड़कन जिसकी संभलती है
हवाओं में बदरी की दस्तक, जिसको दौलत सी लगती है
फिर भी खड़ा वो धूप में दृढ़, दिन और रात समान है
न्याय और अन्याय में पिसता, हाँ वही किसान है।

जीवन के हर रूप में, उसके है हर दम सादगी
पग-पग में हैं कठिनाइयाँ, चाहे है भली ज़िंदगी
अतुल्य उसकी मेहनत के आगे, नतमस्तक ये जहां है
न्याय और अन्याय में पिसता, हाँ वही किसान है।

गाये हैं सुरमय गीत प्रति पल, मन के हर मोहक ख्वाब के
हर ख्वाब में माटी रही, माटी से उपजे ख्वाब के
भक्त धरती माता का वो, अन्नदाता भगवान है
न्याय और अन्याय में पिसता, हाँ वही किसान है।

कविता

प्रकृति अजेय है

मंजीत कौर
लिपिक
सेक्टर 32 डी चंड़ीगढ़ शाखा

प्रकृति अजेय है चिरकाल से चिरकाल तक,
सुर्योदय से स्वर्णिम, उज्जवल कोई लाईट नहीं,
चांद से सुंदर कोई लैम्प नहीं।
पुरवा से शीतल कोई ए.सी. की हवा नहीं,
पक्षियों के कलरव, मंदिर की घंटियों से
मधुर कोई संगीत नहीं।

बहता झरना, लहराती नदी सुबह फूलों पर
जमी ओस, जलती हुई ज्योत,
क्या है कोई, जो इनके सौंदर्य को परास्त कर पाए,
कितना भी विज्ञान आधुनिक हो, प्रकृति के सामने बौना है।

रातरानी की खुश्बू, बारिश कि बूंदो से महकती माटी,
सर्दियों की धूप, शीतल चांदनी, सब प्रकृति के ही उपहार हैं।
सभी बदलती ऋतुएं, औषधि देते पेड़ बहुमूल्य देन हैं।

मनुष्यों को इन देनों को सहेजना होगा, धन्यवादी होना होगा।
क्योंकि विज्ञान के लिए ये देना आज भी असम्भव है और होगा।
इसलिए प्रकृति अजेय है चिरकाल से चिरकाल तक ।

आलेख

भारतीय सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासत का वैज्ञानिकता से संबंध

शिवानी कुमारी
अधिकारी
अंचल कार्यालय, पटना

भारत केवल एक देश नहीं बल्कि विभिन्न संस्कृतियों का मनोरम समावेशन स्थल है। एक ऐसा देश जहां सिर्फ अलग-अलग संस्कृतियों का ही नहीं अपितु सर्व धर्मसमभाव का विलक्षण गुण मिलता है। वह देश जहां प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठान के पीछे वास्तविक वैज्ञानिक तथ्य छुपे होते हैं। जो हमारे देश के प्रत्येक नागरिकों के दैनिक क्रियाकलाप के साथ-साथ दैनिक जीवनचर्या एवं व्यवहार को भी प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

संस्कृति एवं धर्म मानव चिंतन का महत्वपूर्ण स्रोत होता है। इस प्रकार हमारे लिए यह गौरव की बात है जहां हमें वैश्विक पटल पर एक विलक्षण संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने का बेहतरीन अवसर प्राप्त होता है। हमारे देश ने विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों को अपने में समाहित कर एक प्रकार से साझी संस्कृति का प्रादुर्भाव किया है। भारतीय धर्म और दर्शन में जहां एक ओर सात्विक्ता का भाव है तो वहीं दूसरी ओर मानवीय मूल्यों में प्रेम एवं करुणा का भाव है।

हमारे यहाँ सबकी पूजा की जाती है चाहे वो तुलसी की पूजा हो, या गाय की पूजा हो, या सूरज की पूजा हो या, चाँद की पूजा हो, या नाग की पूजा हो सबके पीछे वैज्ञानिक दर्शन एवं चिंतन कार्य करती है। हमारी संस्कृति न केवल विविधताओं से भरी है बल्कि विभिन्न कला संस्कृतियों का समावेश है। ये देश ऐसा देश है जहाँ हर एक व्यक्ति विशेष को अपनी पहचान के साथ जीने की पूरी स्वतन्त्रता है चाहे वो किसी भी धर्म का हो। इसके अलावा वनस्पति जैसे तुलसी, नीम, पीपल आदि की पूजा में एक बेहतरीन वैज्ञानिकता का आधार है।

भारत के घरों में तुलसी का पेड़ लगाया जाना चिकित्सीय रूप से महत्वपूर्ण है जो कि सर्दी-जुकाम, पाचन तंत्र के लिए भी सर्वथा उपयुक्त है। कहने का अभिप्राय है कि हमारी संस्कृति में हर एक चीज के पीछे एक तथ्य है उसके फायदे हैं। दूसरा उदाहरण मैं गौ पूजा का देना चाहूंगी। हमारी संस्कृति में गाय को माता कहा गया है और उसके कई कारण है जैसे गाय का दूध पी कर बच्चे बड़े होते हैं, गाय का घी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है, गाय के गोबर से खाद बनती है, गोमूत्र किडनी के रोगी के लिए उपयुक्त औषधि मानी गयी है। यदि आप उस संदर्भ में आत्मचिंतन एवं आत्मविश्लेषण करते हैं तो आप पाएंगे कि वातावरण और प्रकृति में इस प्रकार के कई उदाहरण मौजूद हैं।

धन्य है ये भारत की संस्कृति जिसने विज्ञान एवं धर्म को एक साथ जोड़कर नई सभ्यता को जन्म दिया। यदि भारत को विश्व गुरु कहा जाए तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

खान-पान रहन-सहन विज्ञान भी नत-मस्तक है इस संस्कृति के रहस्य में। सावन में नाग पंचमी मनाने का क्या महत्व है? इस पर चर्चा करना चाहूंगी। सावन के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को नाग पंचमी

मनायी जाती है। कुछ राज्यों में यह पर्व कृष्ण पक्ष में मनाया जाता है। यह पर्व चतुर मास में मनाया जाता है, जिसके दौरान नकारात्मक ऊर्जा को नियंत्रित करने के लिए संयम, व्रत-उपवास और दान-पुण्य जैसे सकारात्मक साधनों को अपनाया जाता है।

भगवत पुराण के अनुसार नाग के 12 रूप हैं जो सूर्य के रथ को खींचते हैं। इन 12 नागों के नाम हैं - अनंत, वासुकी, शेष, पद्मा, कंबल, कार्कोटेक, अश्वतर, धृतराष्ट्र, संखपाल, कालिया, तक्षक और पिंगल नाग। इनकी पूजा का रिवाज़ है। अग्नि पुराण में 80 प्रकार के नाग कुलों के बारे मे बताया गया है। भगवान शिव के साथ वासुकी जुड़ा है तो भगवान विष्णु के साथ शेष नाग।

ऋग्वेद में पृथ्वी को सर्प रजनी माना गया है। सर्प मानसिक और आध्यात्मिक पटल पर कुंडलिनी शक्ति का प्रतीक है। आध्यात्मिक स्तर पर नाग हमारे अहंकार या इगो का प्रतिबिंब भी है। नाग पंचमी का पर्व दरअसल अहंकार का त्याग करना और ताउम्र विनम्र बनना सिखाता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह हमारे भीतर कुंडली के रूप में बैठी अव्यक्त ऊर्जा का भी प्रतीक है जिसे जाग्रत कर कायनेटिक एनर्जी में भी परिवर्तित किया जा सकता है। स्थिर ऊर्जा से पूर्ण ऊर्जा तक पहुँचने का यह रास्ता सर्पीलाकर है। इस प्रक्रिया को कुंडलिनी जागरण कहते हैं। इसका जिक्र स्वामी विवेकानंद ने राज योग और जान वुड़रफ ने 'द सेरपेंट पावर' किताब में किया है।

शेष नाग पर योग निद्रा में लीन भगवान विष्णु स्थिर ऊर्जा के प्रतीक हैं तो योगी स्वरूप शिव पूर्ण ऊर्जा (कायनेटिक ऊर्जा) के प्रतीक हैं। नाग लोक सृष्टि व चेतना के निम्नतम स्तर या नादिर (समकर्षण) है वहीं सूर्य मण्डल की आभा से पूर्ण आदित्य उच्चतम लोक (वासुदेवम) हैं। इन दोनों लोकों की श्याम और स्वेत ऊर्जा के बीच संतुलन बैठाने की एक प्रक्रिया है नाग देव की पूजा। धर्म का विज्ञान यह है कि हमारे भीतर स्थिर ऊर्जा ठीक वैसी है जैसे कुंडली मार कर बैठा नाग। कुंडलिनी जागरण प्रक्रिया सर्पिलाकर होती है, जिससे पूर्ण ऊर्जा तक पहुँच सकते हैं। इसी का प्रतीक है नाग पंचमी।

पर आज के समय में ये बहुत दुर्भाग्य पूर्ण है कि जिस देश की संस्कृति और धरोहर इतनी मजबूत है, वहाँ के युवा पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित हो रहे हैं उन्हें फुर्सत नहीं कि वो अपनी सभ्यता संस्कृति को जानें या उसका प्रचार-प्रसार करें। जहाँ पहले हर घर में गाय को पाला जाता था वहाँ गाय की जगह आज कुत्ते ने ले ली है।

गाय पालने को गंवार और कुत्ता पालना उच्च वर्ग की पहचान मानने लगे हैं पर ये सब एक दिन या एक वर्ष मे नहीं बदला है इसे बदलने में काफी वक़्त लगा।

पहले लोग तांबे के बरतन में पानी पीते थे और आज इन बर्तनों की जगह प्लास्टिक और थर्मोकोल ने ले ली है ये चीजें प्रयोग करने में भले ही सुविधाजनक हों पर स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक हैं। खान पान में भी आज कल के बच्चे दही, घी, छाछ, लस्सी पीना पसंद नहीं करते पर कोल्ड ड्रिंक पीने को बहुत अच्छा मानते हैं, हमें जरूरत हैं इन सब चीजों पर एक बार गौर करने की जिससे हम इन चीजों के दुष्प्रभाव से बचे साथ ही साथ हमारे बच्चों को भी इन दिग्भ्रमित करने वाले विज्ञापनों से बचाएं।

स्कूल को भी ज़रुरत है बुनियादी शिक्षा में बदलाव लाते हुए बच्चों को स्वस्थ काया बनाने का पाठ पढ़ाएं। अगर ऐसा सभी स्कूल करेंगे तो निश्चय ही हम एक पीढ़ी को जागृत कर सकेंगे और पूरा समाज इससे लाभान्वित होगा। हम सब एकजुट होकर अच्छी आदतों के प्रभाव की चर्चा कर सकते हैं ।

हम और आप अपने छोटे से प्रयास से इन चीजों को सुधार सकते हैं आइए हम सब एक प्रण लें की हम अपनी सभ्यता और संस्कृति को ज्यादा से ज्यादा जानें और इसका प्रचार-प्रसार करें क्योंकि जब तक आप अपनी चीजों को अच्छा नहीं कहेंगे तब तक कुछ नहीं बदलेगा।

आज से, अब से अपनी संस्कृति और सभ्यता की ओर एक कदम बढ़ाएं और पुरानी जीवन शैली को अपनाएं। संस्कृति और सभ्यता ही है हमारी पहचान, जितनी बढ़ेगी ये संस्कृति उतना ही बढ़ेगा हम सभी का मान।

कविता

वक्त की जद्दोजहद

राखी प्रवीण
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षे.का., कोलकाता–III

अपने लिए वक्त निकालना कितना,
मुश्किल हो जाता है न ।

ज़िम्मेदारियों को निभाते–निभाते,
उनमें खुद को ढूँढ पाना मुश्किल हो जाता है न।

कब सुबह से शाम हो गई गोधूलि और रात हो गई,
उनमें फुर्सत के पल ढूँढना मुश्किल हो जाता है न।

जब टूटे हो हम कितने ही क्यों न,
फिर भी मुस्कुराकर जीना कितना मुश्किल हो जाता है न।
ख्वाब कितने ही संजोए हो इन आँखों में,
मगर हक़ीकत में जीते–जीते ख्वाब ढूँढना मुश्किल हो जाता है न।

और जब परेशानियाँ आंसू बनकर बाहर आती हैं,
उन्हें छिपाना कितना मुश्किल हो जाता है न।

और जब हार न मानने की ज़िद हो तो,
जीत का कदम बढ़ाते हुए भी मुश्किल हो जाता है न।।

कविता

पिताजी

प्रतीक सैनी
लिपिक
गोगुंदा शाखा

तज़ुर्बे के गुच्छों से लिपटे पेड़ जैसे अटल खड़े हैं
ज़िंदगी की भाग दौड़ में अब तक उलझे पड़े हैं
किरदारों की तरह बदलती किस्मत के आदी हो गए
पापा देखते–देखते ही जाने कब पिताजी हो गए।

किस्सों के शब्दों से सजी किताब हो गए
हर जज़्बात की खुली आवाज़ हो गए
घर की मज़बूत दीवारों में दबे अल्फ़ाज़ हो गए
पापा देखते–देखते ही जाने कब पिताजी हो गए।

कुछ चाहने से पहले घर का हिसाब जोड़ लेते हैं
चोट कितनी भी गहरी हो मन मरोड़ लेते हैं
हर बीमारी मौसम से जोड़ने के माहीर हो गए
पापा देखते–देखते ही जाने कब पिताजी हो गए।

बचत की कहानी के मुख्य किरदार हो गए
सिक्के जोड़ते–जोड़ते खुद बेहिसाब हो गए
हर खेल की एक हारी हुई बाज़ी हो गए
पापा देखते–देखते ही जाने कब पिताजी हो गए।

कुछ नया अपनाने में आनाकानी करते हैं
जवाब में उम्र का बहाना हर बार रखते हैं
दफ़्तर ना जाकर भी घर के कामकाजी हो गए
पापा देखते–देखते ही जाने कब पिताजी हो गए।

भूले नहीं वो दौर आज भी कई दफा दोहराते हैं
यादों में अक्सर काफी दूर निकल जाते हैं
किसी सरकारी दफ्तर जैसे कागज़ी हो गए
पापा देखते–देखते ही जाने कब पिताजी हो गए।

हर पल हिम्मत की मिसाल देते जाते हैं
खुद की बातों से आज भी सबको हंसाते हैं
मेरी जिंदगी की पतवार के माजी हो गए
पापा देखते–देखते ही जाने कब पिताजी हो गए।

यात्रा–वृत्तांत

हमारी आध्यात्मिक यात्रा....

शुभम दुबे
अधिकारी
अं. का., मुंबई

मन को विश्राम कहीं भी मिल सकता है परंतु आत्मा को विश्राम ईश्वर से जुड़ने से ही प्राप्त होता है। अपनी आत्मा के विश्राम के लिए आध्यात्मिक यात्रा करना सबसे अच्छा विकल्प है। आध्यात्मिक यात्रा से हमारे मन की नकारात्मक शक्तियां खत्म होती है, मन और आत्मा में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और सबसे महत्वपूर्ण हमारी रोज़मर्रा की भाग दौड़ वाली जिंदगी में एक ठहराव आता है इसलिए हमने इस बार आध्यात्मिक स्थल की यात्रा करने का निर्णय लिया और इसके लिए हमने गुजरात राज्य में स्थित श्रीनीलकंठ धाम और श्री सोमनाथ ज्योतिर्लिंग मंदिर जाने का निश्चय किया। सपरिवार हमारी यात्रा हमने नवंबर महीने में की ।

ऐसे देखा जाए तो गुजरात में बहुत से आध्यात्मिक स्थल हैं जिनका खास महत्व है और इन्हीं आध्यात्मिक स्थलों में से एक है गुजरात के वड़ोदरा शहर से करीब 65 किलोमीटर पर स्थित श्रीनीलकंठ धाम जो पोईचा नाम के गांव में स्थित है। यह मंदिर माँ नर्मदा के तट पर है। श्री नीलकंठधाम मंदिर साल 2013 में श्रद्धालुओं के लिए खोला गया था पर हाल ही में लोकप्रियता और भव्यता के लिए यह प्रसिद्ध हुआ है। सच कहे तो इस मंदिर के बारे में हमें भी हाल ही में एक वीडियो के माध्यम से पता लगा था और मंदिर की भव्यता और परिसर को देखते ही वहाँ जाने का मन बन गया था। आधुनिक सुविधाओं से युक्त बड़े पैमाने में श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है श्रीनीलकंठ धाम जो नर्मदा नदी की गोद में बसा हुआ है।

पोईचा गांव में कई एकड़ में फैला नीलकंठ मंदिर जो कि स्वामीनारायण गुरुकुल राजकोट द्वारा बनवाया गया है। नर्मदा नदी के किनारे बना यह मंदिर अपनी विशालता के लिए प्रसिद्ध है। यह मंदिर भगवान स्वामीनारायण को समर्पित है। मंदिर की वास्तुकला देखने लायक है। यहां मूर्तियां बलुआ पत्थर से बनाई गई हैं। मुख्य मंदिर में एक शिवलिंग है जो पानी के बीच में बना हुआ है, यहां मोर के आकार की नाव के द्वारा पहुंचा जा सकता है। मंदिर की दीवारें पौराणिक धर्म ग्रंथों के प्रसंग से चित्रित की गई हैं। मंदिर पोइचा के नाम से भी जाना जाता है। इस मंदिर में साफ सफाई का विशेष ध्यान रखा जाता है। भगवान गणेश, स्वामीनारायण, भगवान विष्णु, भगवान हनुमान, शेषनाग, 108 गोमुख, श्री हरिविष्णु के 12 अवतार ऐसी अनेक प्रतिमाएं यहां देखने को मिलती हैं। यहां बड़े ही खूबसूरत उद्यान बने हुए हैं, जिनमें विशाल मूर्तियों के माध्यम से पौराणिक कथाओं को दर्शाया गया है।

इस मंदिर परिसर में ठहरने की भी उत्तम व्यवस्था है। तीर्थालयम नाम से यहां का यात्री निवास जाना जाता है। यहां तीर्थालयम में हम दो दिन के लिए रुके थे। यात्री निवास की बुकिंग हमने पहले से ही कर रखी थी। तीर्थालयम मंदिर के बिलकुल पास ही बना है जो की मात्र तीन से चार मिनट की दूरी पर है।

अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस यह श्री नीलकंठधाम मंदिर हजारों श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करता है। देश–दुनिया से लोग इस मंदिर को देखने आते हैं।

मंदिर का परिसर किसी राज महल जैसा ही लगता है। मंदिर में बगल से बहती नर्मदा नदी में डुबकी लगाने के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ सुबह से ही इकट्ठा हो जाती है। शाम होने पर मंदिर अलग–अलग तरह की लगी लाइट्स की रोशनी में नहा जाता है। जो इस मंदिर परिसर की खूबसूरती को और बढ़ा देती है।

नीलकंठ धाम मंदिर का मुख्य आकर्षण केन्द्र :

नीलकंठधाम, स्वामीनारायण मंदिर और सहजानंद यूनिवर्स दो हिस्सों में बंटा हुआ है।

प्रमुख स्वामीनारायण मंदिर

मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार पर भगवान सूर्य कमल पर विराजमान है जो आत्मा को आध्यात्मिक प्रकाश से ऊर्जावान करते हैं।

मंदिर परिसर भव्य राज महल जैसा प्रतीत होता है। परिसर में भगवान श्री कृष्ण की विविध लीला जैसे मटकी फोड़ना, कालिया नाग वध, रास लीला के दर्शन होते हैं। श्री राम की भव्य प्रतिमा स्थापित की गई है।

निधिवन जैसी श्री कृष्ण का गोपियों संग रास लीला करते हुए प्रतिमा बनाई गई है। रासलीला की प्रतिमाओं को देखते हुए ऐसा लगता है कि स्वयं श्री कृष्ण और गोपीकाएं धरती पर आकर नीलकंठ धाम के परिसर में रास कर रहे हैं।

शिव जी की योग मुद्रा की प्रतिमा आत्मा को अपार आनंद देती है। नटराज की प्रतिमा मंदिर की शोभा बढ़ाती है।

यह मंदिर नर्मदा नदी के किनारे बसा हुआ है मंदिर में प्रवेश करते ही मां नर्मदा के दर्शन होते हैं। माँ नर्मदा की मूर्ती के सामने उनके पदचिन्ह की पूजा करते हुए देवताओं की प्रतिमाएं बनी हुई हैं। इन प्रतिमाओं को देखकर हम कह सकते हैं कि स्थानीय लोगों के जीवन में माँ नर्मदा का आध्यात्मिक व दैनिक जीवन में कितना महत्व है।

नीलकंठ मंदिर छोटे-छोटे अनेक मंदिरों के समूह से बना हुआ है। नीलकंठ मंदिर नीलकंठ कृत्रिम सरोवर के बीच में बसा हुआ ऐसा प्रतीत होता है जैसे ये छोटे-छोटे मंदिर इस सरोवर में तैर रहे हों। रात के समय लाइटिंग से मंदिर को सजाया जाता है यह दृश्य अपने आप में ही अद्भुत व सुंदर लगता है।

यहां भगवान का अभिषेक दूध और जल के साथ किया जाता है। और इसी दूध से छाछ बनाकर उसे प्रसाद के रूप में बांटा जाता है। जहां आमतौर पर मंदिरों में प्रसाद के रूप में मिठाईयां देखने को मिलती हैं वहीं यहां अभिषेक में इस्तेमाल दूध का ही प्रसाद बनता है।

संध्या वंदन के बाद भगवान नीलकंठ की भव्य रथ यात्रा निकाली जाती है यह रथ यात्रा मंदिर परिसर में ही निकाली जाती है। रथ यात्रा आरती भजन और ढोल मंजीरों के साथ निकाली जाती है। यह रथ यात्रा देखकर ऐसा लगता है कि मानो नीलकंठ भगवान स्वयं अपनी प्रजा का हाल-चाल लेने रथ यात्रा करते हैं। यह दृश्य मन में अपार शांति और आत्मा को तृप्त करने वाला होता है।

मंदिर परिसर में भ्रमण करके यदि आप थक गए हैं तो भोजन की व्यवस्था मंदिर परिसर के अंतर्गत ही की गई है। यहां हर तरह के शुद्ध शाकाहारी स्वादिष्ट भोजन एकदम किफायती दाम में उपलब्ध हैं।

सहजानंद यूनिवर्स

यह नीलकंठ धाम का ही एक हिस्सा है।

यहां भगवान विष्णु की 151 ऊंची-ऊंची विशाल प्रतिमाएं हैं। यहां 1100 से अधिक मूर्तियां देखने को मिलती हैं। यह भाग मनोरंजन हेतु

बनाया गया है। इसमें प्रवेश हेतु आपको अलग से टिकट खरीदने की आवश्यकता होती है। सहजानंद यूनिवर्स में भगवान विष्णु के श्री राम अवतार और श्री कृष्ण अवतार की विविध लीलाओं को प्रतिमाओं के द्वारा प्रदर्शित किया गया है। मार्ग के दोनों तरफ भगवान की लीलाओं की प्रतिमाएं हैं जो मार्ग में आगे बढ़ने के लिए उत्साह बढ़ाती हैं। यहां हमने नौका विहार जाकर नाव की सवारी भी की। यहीं पर मिरर हाउस और हॉरर हाउस भी है जो कि बहुत सारे बच्चों को आकर्षित करता है। रंग बिरंगे पक्षी भी यहाँ देखने को मिलेंगे।

'कुबेर मंदिर'

कुबेर मंदिर की बात करें तो यह नीलकंठ धाम के पास नदी के किनारे प्रसिद्ध तीर्थ स्थान में से यह एक मंदिर है। यहां जाने के लिए भक्तगण नर्मदा नदी में स्नान करते हैं। यहां मुख्यतः भक्तगण अमावस्या और पूर्णिमा में आते हैं। भक्तगण मंदिर परिसर में पूजा पाठकर विशेष अनुष्ठान करने का लाभ ले सकते हैं।

दो दिन श्रीनीलकंठधाम में दर्शन कर अब हम अपनी यात्रा के दूसरे चरण में श्री सोमनाथ मंदिर की ओर चल पड़े जो की वेरावल नाम के शहर के पास है।

'सोमनाथ मंदिर'

सोमनाथ मंदिर अति प्राचीन और पौराणिक मंदिरों में से एक है। सोमनाथ मंदिर को भारत में स्थित भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से सबसे प्रथम ज्योतिर्लिंग माना जाता है। इस मंदिर का उल्लेख ऋग्वेद भागवत समेत अन्य प्राचीन धर्म ग्रंथों में भी मिलता है। ऐसा

माना जाता है कि सर्वप्रथम इस मंदिर की नींव चंद्रदेव ने रखी थी। चंद्र देव को सोम भी कहा जाता है इसलिए उनके द्वारा स्थापित किए गए इस मंदिर का नाम सोमनाथ मंदिर पड़ा।

इतिहास के पन्नों को पढ़े तो पता लगता है कि यह मंदिर अनेक आक्रमणकारियों के निशाने पर हमेशा रहा है। महमूद गजनी ने इस मंदिर पर 17 बार आक्रमण किया और अनेक मूल्यवान आभूषणों की चोरी की।

स्वतंत्रता मिलने के बाद इस मंदिर का पूरा निर्माण श्री वल्लभभाई पटेल द्वारा कराया गया।

सोमनाथ में हम रात को लगभग आठ बजे पहुंचे थे। रुकने के लिए हमने मंदिर ट्रस्ट के श्री माहेश्वरी अतिथिगृह में बुकिंग कर रखी थी।

रात्रि में आराम कर दूसरी सुबह प्रातः काल हम मंदिर पैदल ही चल पड़े।

यह मंदिर गर्भागृह, सभा मंडल, नृत्य मंडल ऐसे तीन भागों में बांटा गया है। इस मंदिर का 150 फुट ऊंचा शिखर है। इस पर स्थित कलश का भार 10 टन है और इसकी ध्वजा 27 फीट ऊंची है। इसके अबाधित समुद्री मार्ग – त्रिष्टांभ के विषय में ऐसा माना जाता है कि यह समुद्री मार्ग परोक्ष रूप से दक्षिणी ध्रुव में समाप्त होता है। यह हमारे प्राचीन ज्ञान व सूझबूझ का अद्भुत साक्ष्य माना जाता है।

प्रातः सोमनाथ मंदिर के दर्शन के पश्चात हमने समुद्र लहरों के किनारे ध्यान मग्न होकर ईश्वर का चिंतन किया। ऐसा लगा कि मानो हमारी ओर आई हुई लहरें हमारे मन तक आकर हमें शीतलता प्रदान कर रही हैं। हमारे मन को अपार सुख की अनुभूति हुई। इस मंदिर में आकर हम भक्ति से ओत-प्रोत हो गए। माना जाता है यहां मानी हुई हर मन्नतें पूरी होती हैं। यदि आप मंदिर में पूजा पाठ रुद्राभिषेक करना चाहते हैं तो उसकी अलग व्यवस्था की गई है। मंदिर में फोटो खींचने पर सख्त मनाही है, यहां कड़ाई से नियमों का पालन किया जाता है। मंदिर परिसर स्वच्छ सुंदर और शांतिपूर्ण है। ऐसा प्रतीत होता है समुद्र देव स्वयं भगवान शिव का अभिषेक अपनी लहरों से करते हैं। संध्या के समय यहां सोमनाथ मंदिर के इतिहास को लाइट शो के द्वारा दिखाया जाता है। ये लाइट शो देखकर हमारा रोम-रोम भक्ति में खो गया। यहां आकर आप अपने आप को भगवान शिव की भक्ति में खोने से नहीं रोक सकते।

यहां रोम-रोम में शिव का वास है प्रत्येक श्वास शिव के ही नाम का जाप करती है। शिव का जलाभिषेक करके यूं लगता है जैसे जल से मैं अपनी आत्मा को सींच रहा हूँ।

किसी की कही हुई यह पंक्तियां याद आती हैं :

'मस्तक सोहे चंद्रमा
गंगा जटा के बीच
श्रद्धा से शिवलिंग को
निर्मल मन से सींच।'

सोमनाथ मंदिर के आसपास कई छोटे बड़े मंदिर हैं जैसे गीता मंदिर, सूरज मंदिर, पांडव गुफा, त्रिवेणी संगम। यहीं पर भालका तीर्थ भी स्थित है जहां पौराणिक मान्यताओं के अनुसार श्रीकृष्ण को जरा नाम के शिकारी ने बाण मारा था। सोमनाथ मंदिर के पास श्री कृष्ण के पद चिन्ह आज भी हैं। यह शहर अनेक प्राचीन मंदिरों से घिरा हुआ है। यहां समुद्र में अनेक छोटे-बड़े शिवलिंग हैं जो लहरों के साथ प्रकट और अदृश्य होते हैं। यह पूरा परिसर प्रकृति की गोद में बसा हुआ है। वातावरण पूरा शून्य और आध्यात्मिक है।

सोमनाथ में दो दिन बिताने के बाद अब हमारी यात्रा अपनी पूर्णता की ओर है। वेरावल से ट्रेन पकड़कर अंततः हम अपने शहर मुंबई की दौड़ भाग वाली जिंदगी में वापस लौट आए।

कविता

मेरा केनरा बैंक

राजेश कुमार दास
मंडल प्रबंधक
प्र.का., बेंगलूरु

सुना था बैंकिंग बैंकिंग
तो चला आया बैंकिंग करने
तो बन गया बैंकर
केनरा बैंक में बैंकर

क्या कहूँ...
मिला पैसा, गाड़ी, घर और ऊपर से पी.एल.आई
जैसे केनरा किसान ओ.डी. लेके करता किसान कपड़े पे कड़ाई
कभी-कभी सोचता हूँ थक के
की करनी चाहिए क्या नौकरी

मोबाइल में खेलते-खेलते खोल लेता हूँ केनरा ail की पोटरी
सर्फिंग करते करते बढ़ा देता हूँ केनरा क्रेडिट कार्ड का बिल

फिर सोचता हूँ...
चलो सुबह उठके घूम आता हूँ केनरा टेक्सटाइल ट्रेडर का मिल
करता है मेरा बैंक रक्षा जवान, बूढ़े, महिला का स्वाभिमान
रहता है सीना तान के... रखता है भारत के हर जनता का मान
देखना है... परखना है... तो आइए
हमारे केनरा बैंक में आइए... खाता खोल हमारे साथ जुड़ जाइए

कविता

दोराहा

कमल दीप कौर
लिपिक
कॉलेज रोड कठुआ शाखा

क्यूं ये खामोशियों के बादल
अचानक यूं छा जाते हैं मन पर
कि अच्छी भली चहकती हुई जिंदगी
नीरस लगने लगती है।

वही रोज मर्रा वाली चीजें
दिल पर घर करने लगती हैं
सोच आ जाती है इक ऐसी की
जो है मेरे पास क्या वो बहुत है।

या बहुत कुछ और पाने की लालसा है
कहीं यही लालसा ही तो नहीं
इस खामोशी का कारण
अगर है तो इसका हल क्या है?

क्योंकि इक ख्वाहिश पूरी होते ही
दूसरी मन में जग जानी है
फिर उस ख्वाहिश को पूरा करने में
मेरी ये बुद्धि लग जानी है।

क्या अच्छा यही है कि मैं उसमें खुश रहूं
जो भगवान ने मुझे अब तक दिया है
या उन सब की ख्वाहिश करूं
जो अभी मेरी बस कल्पना है।

अच्छा होगा की क्या करना है कोई आकर बता दे मुझे
और इस दोराहे में से कोई इक राह दिखा दे मुझे।

आलेख

हमारी अपनी राजभाषा हिंदी

विधि जटणीया
अधिकारी
मुद्रा तिजोरी, राजकोट

श्री महादेवी वर्मा ने कहा है

वह देश गूंगा है जिसकी अपनी कोई भाषा नहीं होती।

भाषा केवल व्यक्ति की ही नहीं, पूरे राष्ट्र की सबसे बड़ी पहचान है। जिन मूलभूत तत्वों के कारण कोई देश राष्ट्र कहलाता है उनमें राष्ट्रीय संविधान, राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रगीत के साथ राजभाषा एवं क्षेत्रीय भाषा का भी अपना महत्व है।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय की पत्रिका के एक अंक में डॉ. हरीश कुमार सेठी ने लिखा था

देश के सबसे बड़े भूभाग में बोली, समझी और लिखी जाने वाली हिंदी की व्यापकता ने उसे देश की संपर्क भाषा के रूप में स्थापित किया है। अपनी व्यापक प्रसार क्षमता के कारण भारत में बहुभाषी समाज के लोगों के बीच हिंदी शताब्दियों से संपर्क भाषा के रूप में प्रचलित रही है।

यह कहते हुए आज हम गर्व अनुभव करते हैं कि हिंदी भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के विराट पटल पर अपने अस्तित्व को आकार दे रही है। आज हिंदी विश्व भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त करने की ओर अग्रसर है बल्कि यह कहना भी अतिशयोक्ति न होगी कि हिंदी विश्व भाषा के रूप में भी मान्यता प्राप्त करेगी। आज हिंदी संपर्क भाषा से कार्यालयीन भाषा तक पहुंची है। आज हिंदी हर जगह अपने कदम बढ़ा रही है।

है भव्य भारत हमारी मातृभूमि हरी-भरी,
हिंदी है राजभाषा और लिपि है देवनागरी हमारी।

किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी भाषा और उसकी संस्कृति से होती है। भाषा के द्वारा मनुष्य अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है, अपनी बात कहने के लिए और दूसरे की बात समझने के लिए भाषा एक सशक्त माध्यम है। भाषा के द्वारा मनुष्य आसानी से अपने विचारों का आदान-प्रदान कर सकता है। प्रत्येक राष्ट्र की अपनी एक अलग भाषा होती है लेकिन उनका कार्यालयीन कार्य जिस भाषा में होता है और जो जनसंपर्क की भाषा होती है उसे ही राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त होता है। एक भाषा के रूप में हिंदी भाषा सिर्फ भारत की ही पहचान नहीं है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्य, संस्कृति एवं संस्कारों की संवाहक भी है। बहुत सरल, सहज और स्वाभाविक भाषा होने के साथ-साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है, जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद है। संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल अन्य 21 भाषाओं के साथ हिंदी का भी एक विशेष स्थान है।

14 सितंबर 1949 का दिन स्वतंत्र भारत के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण है, इसी दिन संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इस निर्णय को महत्व देने के लिए और हिंदी के उपयोग को प्रचलित करने के लिए साल 1953 के उपरांत हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है।

विश्व की सबसे उन्नत भाषाओं में हिंदी एक मात्र ऐसी भाषा है जो सबसे अधिक और तेजी से प्रचारित हुई है जिसकी 94% के दर से वृद्धि हो रही है। बढ़ती मांग की वजह से गूगल जो एक बहुराष्ट्रीय प्रौद्योगिकी कंपनी है उसने भी हिंदी भाषा का स्वागत किया है। तब से इंटरनेट नेटवर्क के जरिए हिंदी भाषा का मेलिंग, सेटिंग, मोबाइल संदेश इत्यादि में ना केवल प्रयोग बढ़ा है बल्कि हिन्दी में फेस्टिवल विज्ञापन आदि शुरू हुआ है। हर कोई इंटरनेट पर हिंदी भाषा में हर प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकता है।

हिंदी के महत्व को गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर ने बड़े सुंदर रूप में प्रस्तुत किया था। रविंद्रनाथ टैगोर जी लिखते हैं,

भारतीय भाषाएं नदियां है और हिंदी महानदी।

कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने भी लिखा है

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।

इसका अर्थ है कि निज अर्थात अपने मूल से ही उन्नति संभव है क्योंकि हमारी मूल भाषा ही सभी उन्नतियों का मूलाधार है और मातृभाषा के बिना हृदय की पीड़ा का निवारण संभव नहीं है। हमें विभिन्न प्रकार की कला और शिक्षा तथा अनेक प्रकार का ज्ञान सभी देशों से जरूर लेना चाहिए परंतु उनका प्रचार मातृभाषा में ही करना चाहिए।

राजभाषा हिंदी को समझना और सीखना आसान है। अन्य भाषाओं के शब्द हिंदी भाषा में भी समाहित हैं। हिंदी को जैसा लिखा जाता है वैसा ही पढ़ा जाता है यही राजभाषा हिंदी की मुख्य विशेषता है। आसानी से बोली जाने वाली हिंदी भाषा को सभी आसानी से बोल सकते हैं। हिंदी भाषा बहुत सरल है इसीलिए तो कहा गया है,

हम हिंदी में काम करें,
हिंदी पर अभिमान करें,
भिन्न भिन्न बोली वाले हम
नित हिंदी का मान करें।

हिंदी बोलने वालों की संख्या बहुत अधिक है जिससे ज्यादा तर लोग हिन्दी समझ सकते हैं - इन्हीं लक्षणों के कारण ही हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया गया है।

सबको आ गई,
सबको भा गई,
जनमानस पर छा गई हिंदी।

राजभाषा हिंदी आज सब जगह फैल कर अपने कदम मज़बूत कर रही है। संपूर्ण भारत में कश्मीर से कन्याकुमारी और कामाख्या से कच्छ तक समझी जानेवाली संपर्क भाषा के रूप में आज हिंदी का नाम है। अब हिंदी किसी राजकीय दिवस, पखवाड़े या महीने से अपनी पहचान बनाने वाली भाषा नहीं रही बल्कि हिंदी भाषा का जादू आज देश विदेश के लोगों पर भी चला है। अब हिंदी भाषा ने राजभाषा के साथ-साथ आम बोलचाल की भाषा में भी अपना एक नया ही स्वरूप हासिल किया है। आज हिंदी के लिए नए अवसरों के सोपान खुल रहे हैं, वह राजभाषा से व्यापार और कार्यालयीन भाषा की ओर गतिमान है। हिंदी एक सरल, सहज और उपयोगी भाषा है। बहुत सारे आम लोगों की भाषा होने की वजह से हिंदी आज व्यवसाय को बढ़ाने में भी उपयोगी है। हिंदी आज इतनी फैली हुई है कि हिंदी के सहारे विशाल ग्राहक वर्ग से आत्मीय संबंध स्थापित हो सकते हैं। आइए हिंदी भाषा को एक महत्वपूर्ण सेतु की तरह प्रयोग में लाएं और हमारे ग्राहकों से सरलता से जुड़े।

सच में,

अंधकार है वहां, जहां आदित्य नहीं है,
मुर्दा है वह देश, जहां साहित्य नहीं है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने हिंदी भाषा की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा था,

लाखों लोगों को अंग्रेजी का ज्ञान कराना उन्हें गुलाम बनाना है।

आज सही मायनों में देखें तो हिंदी प्रगति के पथ पर है। आज सरकारी दफ्तरों, गृह मंत्रालय सभी जगह हिंदी फॉर्म्स, मैन्युअल सहित आदि लेखन सामग्री अनेक रूपों में पहुंच गई है। जहां तक राष्ट्रीयकृत बैंकों की बात है वहां भी हिंदी ने राजभाषा के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। आज प्राइवेट सेक्टर में भी हिंदी का प्रयोग शुरू हो रहा है, जो स्पष्ट करता है कि राजभाषा हिंदी का प्रयोग संपर्क भाषा से कार्यालयीन भाषा की ओर व्यापक रूप से बढ़ रहा है।

भाषा के बिना कोई भी काम अधूरा है। भाषा एक संपर्क का, आदान प्रदान का महत्वपूर्ण पहलू है। हम लिखने बोलने या फिर आदि इत्यादि किसी भी कार्य के लिए भाषा का इस्तेमाल करते हैं। कोई भी दूसरी भाषा का प्रयोग करने से पहले हमें उस भाषा की आवश्यकता के बारे में सोचना चाहिए।

उदाहरणार्थ किसी भी नए टूथपेस्ट के लॉन्च होने पर उसके विज्ञापन में कहते हैं कि यह मसूड़ों को मजबूत करती है, दूसरे में कहेंगे यह दातों को चमकाती है तो कोई और कहेगा कि यह पेस्ट औषधि युक्त है। अब वाकई में देखें तो कोई भी व्यक्ति तीन अलग-अलग पेस्ट नहीं खरीदेगा। इसलिए पुराना ही सोना मानकर हमें अपनी राजभाषा हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं का ही व्यापक प्रयोग कार्यालयीन भाषा के तौर पर करना चाहिए ताकि हमारा बैंकिंग व्यवसाय अपना सशक्त संचालन सुचारू रूप से करें। यदि हम सदा अपने समाज, रीति रिवाज़, भाषा से जुड़े रहें तो यकीन मानिए हम मुनाफे में ही रहेंगे। आज हर ग्राहक बैंकिंग व्यवसाय से अपनी सुविधा तथा सरलता के लिए जुड़ने के लिए तैयार है, केवल आवश्यकता है ग्राहकों का विश्वास प्रतिपादित करने की और वह केवल ग्राहक की संपर्क भाषा से ही संभव है।

ग्राहकों को संतुष्टि भरी व अच्छी सेवाएं देना आज के प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में बहुत ज़रूरी है। आज के ग्राहक अधिक जागरूक हैं

इसलिए बैंकों को भी ग्राहकों की अपेक्षाओं को पूर्ण करने के लिए अपनी परंपरागत कार्य शैली में परिवर्तन लाने की ज़रूरत है क्योंकि 'योग्यतम की उत्तरजीविता' का सिद्धांत यहां भी लागू होता है जैसे भोजन में खट्टे, मीठे, तीखे भिन्न-भिन्न स्वाद के व्यंजन होते हैं वैसे ही विभिन्न स्वभाव के लोगों के लिए भिन्न-भिन्न तरीके से ग्राहक सेवा प्रदान करने की ज़रूरत है। बैंकिंग की हर सेवाओं को ग्राहकों तक पहुंचाने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग करना अति आवश्यक है।

हिंदी हमारा अभिमान है, हिंदी हमारा स्वाभिमान है,
विश्व पटल पर इसे उच्च स्थान दिलाना है।

इसका गौरव और मान बढ़ाना है, भारत मां के माथे की बिंदी है हिंदी
भाग्य पर सजा कर इसे संपूर्ण विश्व को दिखाना है।

सच में भाषा ही एक ऐसी कड़ी है जो हमें ग्राहकों से जोड़ती है। प्रौद्योगिकी और मल्टीमीडिया के इस युग में भारतीय बैंक अपनी शाखाओं में हिंदी भाषा के प्रयोग से बाजार में अपना अस्तित्व सुनिश्चित रख कर सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आज इंटरनेट के बढ़ते प्रयोग के फलस्वरुप हिंदी के प्रति लोगों की जानकारी काफी हद तक बढ़ी है। भारतीय समाज में एक विशाल उपभोक्ता वर्ग अपनी आवश्यकताओं को परिपूर्ण सिर्फ अपनी भाषाओं के माध्यम से करना चाहता है तब हिंदी में विज्ञापन करने की मांग चरम सीमा पर पहुंची नजर आ रही है। अब ग्राहक हिंदी व क्षेत्रीय भाषा में सेवा चाहते हैं। आज बाजार की आवश्यकता और मांग देखकर बैंकों ने सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की वैकल्पिक डिलीवरी चैनल सेवा में भी हिंदी भाषा का विकास किया है। अतः राजभाषा हिंदी का सफर संपर्क भाषा से कार्यालयीन भाषा की तरफ तेजी से बढ़ रहा है और हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग से बैंकिंग कारोबार में वृद्धि की अपार संभावनाएं एक सच हुए स्वप्न की तरह सामने खड़ी नजर आ रही हैं।

टू द टॉप नॉनस्टॉप
बिना रुके निर्बाध रूप से शिखर तक।

आइए हम भी राजभाषा हिंदी का प्रयोग संपर्क भाषा और कार्यालयीन भाषा के रूप में शत प्रतिशत करें,

ताकि कवि इकबाल जी की तरह हम भी गर्व से कह सकें,

हिंदी है हम,
वतन है हिंदुस्तान हमारा।

जय हिंद, जय हिंदी, जय भारत!!

कविता

मैं मशाल लेकर दौड़ूंगा !

कुणाल रवींद्र वानखेड़े
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, औरंगाबाद

हर एक अंधकारित पथको निर्भयता से प्रज्वलित करूँगा।
सूर्य से सत्य का बोध ले कर स्वयं सिद्ध निःसंदेह हो जाऊँगा।
मैं मशाल लेकर दौड़ूंगा!

सम्पूर्ण शक्ति से अद्वितीय ध्रुव तारे समान त्रिकाल
स्थानबद्ध हो जाऊंगा ।
मैं मशाल लेकर दौड़ूंगा!

सप्त सागरों की ज्ञान रूपी गहराई से होकर मैं फिर तट पर आऊंगा ।
मैं मशाल लेकर दौड़ूंगा!

कर्तव्य शपथ पूर्ति से सर्वोच्च शिखर पर विजय ध्वज
निश्चित लहराऊंगा ।
मैं मशाल लेकर दौड़ूंगा!

स्वयं के या किसी के आत्मसम्मान एवं गरिमा पे
कभी कोई आंच नहीं आने दूंगा ।
मैं मशाल लेकर दौड़ूंगा !

मैं मानवता धर्म का अखंड यज्ञ प्रारम्भ करूँगा ।
मैं स्वार्थ, अधर्म, असत्य, क्रूरता, निष्ठुरता की आहुति दूंगा ।
मैं मशाल लेकर दौड़ूंगा !

चलो उठो तुम स्वयं पर न करो संदेह,
मेरी मशाल से एक और मशाल प्रज्वलित करो तुम,
आओ, मेरी इस दौड़ का भागीदार बनो तुम ....!

चलो तुम भी दौड़ो, मैं भी मशाल लेकर साथ दौड़ूंगा !

कविता

जीवन तुम क्या हो

सुबर्णा देबनाथ
लिपिक
एलसीबी, कोलकाता

दिन के उजाले में तुम हो,
धरती के हर कण-कण में तुम हो,
हर एक बच्चे की होठों की मुस्कराहट हो तुम।

हर एक बूढ़े की आखरी आस हो तुम,
हर जवान दिल की रंगीन शाम हो तुम,
हर बिखरे हुए दिल का ताजा गम हो तुम।

हर एक कोयल का सुरीला सुर हो तुम,
अपने जनों से कभी पास कभी दूर हो तुम,
बीते हुए पलों की सुनहरी याद हो तुम।

आने वाले कल का भरोसा हो तुम,
हर बचपन की उमंग हो तुम,
हर एक सहारे की उम्मीद हो तुम।

रेगिस्तान में पानी की बूंद हो तुम,
तड़पते हुए दिल का अरमान हो तुम,
तपती गर्मियों में बारिश का झोंका हो तुम।

भरी सर्दियों में सूर्य की किरण हो तुम,
हर निराशा में आशा का भंडार हो तुम,
हर एक संसार का सार हो तुम।

ईंट पत्थर के शहर में मिट्टी की खुशबू हो तुम,
व्यस्त जीवन में एक पल का विराम हो तुम,
नींद भरी आँखों का ख्वाब हो तुम।

हर मुश्किल सवाल का जवाब हो तुम,
तुम्हीं पर सब ख़त्म और शुरूआत भी तुम हो,
मौत तो आती रहेगी लेकिन ज़िन्दगी का एहसास हो तुम।

कविता

मैं भारत हूँ

रंजीत
अधिकारी
क्षे.का., मंगलूरु

हाँ मैं भारत हूँ
हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक फैला हूँ,
बंगाल से लेकर अरब समुद्र तक हूँ,
हाँ मैं भारत हूँ।

गंगा जमुना सरस्वती नदियाँ मेरी जान हैं,
कृष्णा गोदावरी कावेरी मेरी शान,
हाँ मैं भारत हूँ।

मेरे पास है दुनिया का चौथा बड़ा सैन्य बल,
मानव संपन्नमूल्य में हूँ अव्वल,
हाँ मैं भारत हूँ।

दुश्मनों को चकनाचूर कर सकता हूँ,
मानो या ना मानो मैं विश्व गुरु हूँ।
हाँ मैं भारत हूँ।

चांद में भी अपना झंडा गाड़ दिया,
सूरज के अंदर भी जाकर देख चुका हूँ,
हाँ मैं भारत हूँ।

अरे चीन पाकिस्तान मेरे सामने कुछ भी नहीं,
अमेरिका रूस ब्रिटेन भी अपना सामना करता नहीं,
हाँ मैं भारत हूँ।

मैं सिर्फ धरती का टुकड़ा नहीं,
मैं जीता जागता राष्ट्र पुरुष हूँ,
मैं भारत हूँ।

साहित्य अकादमी पुरस्कार 2023 विजेता

भाषा	पुस्तक एवं विधा	लेखक
असमिया	डॉ. प्रणवज्योति डेकर श्रेष्ठ गल्प (कहानी – संग्रह)	प्रणवज्योति डेका
बंगाली	जलेर ऊपर पानी (उपन्यास)	स्वपनमय चक्रवर्ती
बोडो	जिउ–सफरनि दाखवन (कहानी – संग्रह)	नंदेश्वर दैमारि
डोगरी	दऊं सदियां इक सीर (कविता–गज़ल)	विजय वर्मा
अंग्रेज़ी	रेक्युम इन रागा जानकी (उपन्यास)	नीलम शरण गौर
गुजराती	सैरंध्री (प्रबंध काव्य)	विनोद जोशी
हिंदी	मुझे पहचानो (उपन्यास)	संजीव
कन्नड	महाभारत अनुसंधानदा भारतयात्रे (निबंध)	लक्ष्मीशा तोल्पडि
कश्मीरी	येथ वावेह हेले सोंग कौस जेले (कविता)	मंशूर बनिहाली
कोंकणी	वर्सल (कहानी – संग्रह)	प्रकाश एस पर्येकार
मैथिली	बोध संकेतन (निबंध)	बासुकीनाथ झा
मलयालम	मलयाला नोवेलिंटे देशकालंगल (आलोचना)	ई. वी. रामकृष्णन
मणिपुरी	याचंगबा नांग हालो (कविता)	सोरोख्खैबम गंभिनी
मराठी	रिंगाण (उपन्यास)	कृष्णात खोत
नेपाली	नेपाली लोकसाहित्य र लोकसंस्कृतिको परिचय (निबंध)	युद्धवीर राणा
उड़िया	अप्रस्तुत मृत्यु (कविता)	आशुतोष परिडा
पंजाबी	मन दी चिप (कविता)	स्वर्णजीत सवी
राजस्थानी	पळकती प्रीत (कविता)	गजेसिंह राजपुरोहित
संस्कृत	शुन्ये मेघगानम् (कविता)	अरुण रंजन मिश्र
संथाली	जाबा बाहा (कहानी – संग्रह)	तारासीन बासकी (तुरिया चंद बासकी)
सिंधी	हाथु पाकिदिजैन (कविता – गज़ल)	विनोद आसुदानी
तमिल	नीरवाजी पडुवुम (उपन्यास)	राजशेखरन (देवीभारती)
तेलुगु	रामेश्वरम काकुलु मारिकोन्नि कथलु (कहानी – संग्रह)	टी पतंजलि शास्त्री
उर्दू	राजदेव की अमराई (उपन्यास)	सादिका नवाब सहर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक व बीमा), बेंगलूरु की 76वीं अर्ध वार्षिक बैठक एवं संयुक्त हिंदी दिवस समारोह का आयोजन दिनांक 15.12.2023 को श्री के सत्यनारायण राजु, प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं अध्यक्ष, नराकास (बैंक व बीमा), बेंगलूरु की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में श्री अशोक चंद्र, कार्यपालक निदेशक, केनरा बैंक, श्रीमती सोनाली सेन गुप्ता, क्षेत्रीय निदेशक, भारतीय रिज़र्व बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलूरु, श्री महेश कुमार मल्ल, प्रबंध निदेशक, भारतीय रिज़र्व बैंक नोट मुद्रण (प्रा.) लिमिटेड एवं श्री अनिर्बान कुमार बिस्वास, उप निदेशक (का.), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दक्षिण) तथा विभिन्न बैंकों व बीमा कंपनियों से प्रतिनिधिगण उपस्थित रहे। इस दौरान नराकास (बैंक व वीमा), बेंगलूरु की पत्रिका 'प्रयास' के 48वें अंक का विमोचन भी किया गया।

केनरा बैंक की हिंदी गृह पत्रिका 'केनरा ज्योति' को दिनांक 14.02.2024 को ताज लैंड्स एंड, मुंबई में आयोजित पुरस्कार सम्मान समारोह में वर्ल्ड ब्रांड कांग्रेस द्वारा आयोजित ग्लोबल ब्रांड उत्कृष्टता पुरस्कारों में सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका श्रेणी के तहत सम्मानित किया गया। श्री एस अनिल कुमार नायर, उप महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय, मुंबई ने बैंक की ओर से पुरस्कार ग्रहण किया।

केनरा बैंक
Canara Bank
A Government of India Undertaking
सिंडिकेट Syndicate
Together We Can

डिजिटल भारत के बढ़ते कदम

आपकी सुविधा हमारी प्राथमिकता

- 360° डैशबोर्ड
- फॉरेक्स लेनदेन
- ट्रेड फाइनेंस – एलसी, बीजी, आदि.,
- बल्क भुगतान का विकल्प

Canara ai1 CORPORATE
द बिजनेस बैंकिंग सुपर एप

- यूपीआई रजिस्ट्रेशन
- पी2पी भुगतान
- बैलेंस इन्क्वायरी
- यूपीआई पिन रीसेट
- आईवीआर नंबर:9558123123

UPI UNIFIED PAYMENTS INTERFACE 123PAY
केनरा यूपीआई123पे

केनरा व्हाट्सएप बैंकिंग

- अपने व्हाट्सएप पर बैंकिंग कीजिए 9076030001 पर 'Hi' भेजिए।
- बैलेंस इन्क्वायरी, सावधि जमा मिनी – स्टेटमेंट, खाता खोलना आदि.

डिजिटलीकरण के माध्यम से प्रत्येक ग्राहक के जीवन में बड़े बदलाव

* शर्तें लागू

www.canarabank.com | 1 Bank Number 1800 1030 | 24/7 365 Days IN 15 LANGUAGES